

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

सम्पादन डॉ० हरि महर्षि



प्रकाशक	साहित्यागार एस एम एस हाईवे, जयपुर-302003
सस्करण	**1991**
मूल्य	साठ रुपये मात्र
सवाधिकार	कृतिकार के अधीन
मुद्रक	अजमेरा प्रिंटिंग वर्क्स, जयपुर ।



समर्पण

ममतामयी माँ
स्वर्गीया
रेवती जी
को
सादर
समर्पित

—विपुल



—विपुल ज्वाला प्रसाद

प्रस्तावना

कहानी कहने की कला अपने आपमे सचमुच अनूठी-कला है—यो तो घटनाए रोज ही हमारे जीवन मे आस पास घटित होती ही रहती ह पर उन्हे 'कहने लायक' और दूसरो के 'सुनने लायक' बनाना हर एक की वशवर्तिनी वस्तु नही है ।

कथाकार प्रेमचन्द भले ही 'उपन्यास सम्राट' कहे गये हो किन्तु उनकी चुभती हुई कहानियो की बराबरी उनके उपन्यास कभी नही कर सके । प्रेमचन्द की कहानिया मे जीवन के आरोह-अवरोह, निजत्व-परत्व, परिजन-पुरजन, गाव और शहर, सरलता-कुटिलता, दश और पुरस्कार अभिशाप और वरदान एक साथ तदाकार हो गये है ।

कथाकार विपुल ज्वाला प्रसाद ने भी अपनी कहानियो मे जीवन के वैविध्य को मूर्तित करने की चेष्टा की है । सातवे दशक से लेखन मे रत श्री विपुल ने निबन्ध, रिपोर्ताज, लेखन गीत और कहानिया विशेषरूप से लिखी—लेकिन इन सब मे उनका 'कथाकार' ही हॉवी रहा है ।

इस कथा सकलन मे उनकी कुल 11 कहानियाँ प्रकाशित हुई है जिनमे गावो की सौंधी महक, अचल की विकृति, पद प्रतिष्ठित पुत्रो की अपने अभिभावको के प्रति वत्ति, नारी की खरीद फरोख्त, 'नथ उतराई' और 'खिलावडी' की घिनौनी मा यताएँ, पति की अतिव्यस्तता और परस्त्रीगमन का देश भोगती पत्नियो का पथ विचलन इसमे समाहित है ।

श्री विपुल जी से मेरा परिचय तो कभी नही हुआ—किन्तु रचनाओ से जीवन तक पहुँचने का जो समीक्षा माग रहा है वही मुझे उनका आत्मीय बना गया है । जहाँ श्री विपुल का जन्म हुआ 'धोलपुर' मे उसके

कतिपय ग्रामीण इलाका मे नारी की खरीद-फरोख्त आज भी जारी है और इसी को विषय वस्तु बनाकर 'कमला' जैसा नाटक लिखा गया जो रोंगटे खडे कर देता है। 'निहग अंधेरं' इसी विषय के नग्न यथार्थ की अभिव्यक्ति है।

उनके परिचय की चन्द पक्तियो मे पढने को मिला कि वे सम्प्रति पश्चिमी रेल्वे के मुलाजिम हैं अत उस जीवन मे रची बसी और तकनीक की व्याख्या करती कहानी ' टीले" वस्तुत उस जीवन की हताशा निराशा और कुण्ठा की तीव्र अभिव्यक्ति है।

रामगज मडी मे कोटा स्टोन की बहुत सी खदाने हैं जहाँ से पत्थर हिन्दुस्तान के कोने-कोने मे ही नही विदेशो तक म जा रहा है। 'सूली टंगे सुख' पति की उपेक्षिता नारी के विचलन की कहानी है। खदानों के मालिक किस तरह खान मजदूरिनो के साथ मौज मस्ती करते रहते है और उनका पारिवारिक जीवन किस तरह विकृत हो जाता है—यह देश परिवेश के परिचय और श्रवित सत्यो की अनुभूति लगता है।

जहा लेखक अपनी नौकरी कर रहे है उसके निकटवर्ती मध्यप्रदेश और उसके 'वाछडाओ' की अजीबो गरीब प्रथाएँ—लेखक के ध्यान म अवश्य आती रही होगी और उसे झकझोरती रही होगी। 'रोशनी के शहतीर" नटो और वाछडाओ की देह व्यापार मे लगी कुप्रथाओ का पर्दाफाश करने वाली कहानी है। 'नथ उतराई' और 'खिलावडी' बनने की कुप्रथाएँ एक नग्न यथार्थ की तीव्र और प्रभावी अभिव्यक्ति है।

कथा सकलन मे जिन 11 कहानियो का चयन है—ये राज्य के विभिन्न पत्र-पत्रिकाओ मे तथा राष्ट्रीय स्तर की कथा पत्रिकाओ मे प्रकाशित हो चुकी है। इनमे से कतिपय का 'आकाशवाणी' से प्रसारण भी हुआ है। यही कारण है कि इन चर्चित, ख्यात और बहुपठित कथाओ के सकलन को "राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर" ने पाडुलिपि प्रकाशन सहायता देकर अनुग्रहित किया है।

हिन्दी साहित्य के वैशिष्ट्यपूर्ण प्रकाशन मे लगे 'साहित्यागार' के नियामक श्री रमेश जी वर्मा ने इस सकलन को अपने प्रकाशनो म स्थान

देकर अपने प्रदेश की प्रतिभाओ का मान और बढाया है। उन्ही के आग्रह से इस सकलन से मुझे भी जुडने का मौका मिला और मैंने सम्पादन करते समय श्री विपुल की रचनाओ से जैसे सीधा साक्षात्कार किया।

श्री विपुल की प्रूफ के दौरान जैसे जैसे रचनाएँ पढता गया उसके साथ ही मे कथा पर अपनी प्रतिक्रियाओ को भी लिपिबद्ध करता गया। वही पक्तिया यहा क्रमश उन कथाओ पर समीक्षात्मक टिप्पणियाँ बन गयी है। पाठको को कथा के सार सक्षेप और ध्येय-विधेय के विषय मे उन पक्तियो से समझने मे सहयोग मिलेगा ऐसा मेरा विश्वास है—

समीक्षात्मक टिप्पणियाँ

1 **अब नहीं आयेंगे**—अपने पुत्र को योग्य और उच्च पद पर प्रतिष्ठित करने के लिए अपने सब सुखो के हवन करने वाले पिता को अधिकारी पुत्र से जीवन के अंतिम दिनो मे अपने को बोझ-भार और व्यथ का उपकरण समझने की जो मानसिकता मिलती है—वही इस कथा का मूल कथ्य है। पत्नी और पिता के बीच घर का मुखिया जब अपनी पत्नी और बच्चो का पक्ष लेकर अलग थलग खडा हो जाता है—तो पिछली पीढी को यह तीखा दश झलते हुए कुछ कठोर निणय लेने ही पडते है।

2 **टीले**—स्टेशन मास्टर के जीवन और पेशे से जुडी कहानी 'टीले' वस्तुत मानसिक आरोहा अवराहो की कहानी है। व्यस्त जीवन, चूक की चिन्ता, जिम्मेदारी का अहसास, महत्वाकाक्षाओ के कुठित स्वरूप और लाचारी तथा बेबसी का इसम सजीव चित्रण हुआ है। अपने ही परिचितो के बीच एक बौने पन का अहसास यह कथा अपने नायक मे जागती है। कथा मे पेशे के अनुरूप ही शब्द सृष्टि हुई है जो प्रभावी है।

3 **भाई**—वृक्ष और पर्यावरण चेतना को समर्पित कहानी "भाई" वस्तुत मनुष्य के वृक्षानुराग को मुखरित करने वाली कहानी है। इस

कथा को पढते ही 'चिपको आन्दोलन' के नायक सुन्दर लाल वहुगुणा का चित्र पाठक के जहन मे शीघ्र ही बनने लगता है। वृक्ष को अपन भाई जसा मानना उसको अनिष्ट से बचाने के लिए अपनी आहुति दे देना—यह सब पर्यावरण चेतना को मुखर करने वाला है। गावो के बढते तनाव महत्वाकाक्षा, और मिथ्या गर्व को यह वाणी देने वाली कहानी है।

4 सूली टगे सुख – खदानो की ठेकेदारी, व्यस्त जीवनचर्या, सुरा-सुन्दरी, मजदूरिनो के देह सौन्दर्य, मे उलझी कामुकता—जब व्यापार और धन की चकाचौध मे अपने घर परिवार, बीवी बच्चो को भूल—इसे ही अपना सर्वस्व समझ लेती है तब अपने प्रिय का ध्यान और प्रतीक्षा करती पत्निया भी हताशा, उपेक्षा और देह सुख की कामना करती मार्ग विचलित हो जाय तो इसमे आश्चर्य कैसा ? कहानी मे नगे यथार्थ की प्रभावी अभिव्यक्ति है। वैवाहिक जीवन तो एक अनुबन्ध है यदि उसका एक पक्ष विकृत और विचलित हो तो दूसरे से नैतिकता की अपेक्षा कैसी ?

5 निहग अंधेरे—नारी की खरीद-फरोख्त करने वाली मानसिकता पर तीखा प्रहार करती है। आदिवासियो के अपने कानूनो और सस्कृति का देह-व्यापार मे लगे दलाल अपने हित मे दोहन करने लगे है। नशे की लत, नयी देह और यौवन को भोगने की तीखी ललक ने आदमी के दिल को पत्थर बना दिया है। अपनी औरत और बच्चे को बचते वक्त भी उसका दिल नही पसीजता। पाडुरग जैसे दलाल और रामचन्द्र जैसे पति ही आदिवासी सस्कृति मे सेध लगाती शहरी सस्कृति के प्रदूषण के लिए जिम्मेदार है। यही कारण है कि विमला जैसी नारिया गाय, भैंस, बकरी की तरह खूट दर खूटे बिकती रहेगी।

6 'रोशनी की शहतीर'—नटो और बाछडा जातियो की देह-व्यापार मे लगी मान्यताओ, खोखले विश्वासो और अपनी पहलौठी की लडकी की 'नथ उतराई' की रस्म पूरी कर उसे 'खिलावडी' बनाने यानि वेश्यावृत्ति का प्रारम्भ कराने वाली मानसिकता पर तीखा प्रहार करने वाली कहानी है।

रूप-रस के लोभी 'कज्जा' जैसे ग्राहक और पुत्री से वेश्यावृत्ति कराने वाले 'भाग्या' जसे पिता जब तक रहेगे तब तक गदराई देह की युवती कन्याए यू ही 'नथ उतराई' के नरक कुण्ड का 'मानसिक दश' भोगती रहेगी। जानवरो की तरह नुचती रुदती रहेगी।

'गगा' की पवित्रता यदि बची रह सकेगी तो केवल इस बिना पर कि वे 'नथ उतराई' जैसी घिनौनी रस्मो से नफरत करे और अपने ज्ञान साहस और बुद्धि बल से उनका मुकाबला करे।

'नथ उतराई' से लडकिया तो नरक भोगती ही हैं—किन्तु उस जाति और समाज को क्या कह जो 'नथ उतारने' वाले रूप-रस के लोभी भवरो की मानसिकता को प्रश्रय देते है, इसको उत्सव की तरह मनाते ह और लडकी का शील भग करवाकर जाति बिरादरी को जिमाते हे।

लेखक विपुल ज्वाला प्रसाद ने इस कहानी मे उन तकनीकी शब्दो के नगे यथार्थ की अभिव्यक्ति की ह—जो उस समाज के प्रति लेखक के अध्ययन और शोध का प्रतिफलन है। भाषा मे जिस परिवेश को बाधने का चष्टा की है वह कहानी मे मूर्तित हो उठा है।

अँधेरो की दुनिया से रोशनी की दुनिया मे आने के लिए साहस और कौशल के यह शहतीर चलाने ही होगे——तभी मुक्ति सभव है।

7 गिद्ध——हमारी सस्कृति मे प्रतीक बन गया है। उसका जो हताशा, लाचारी मे तडप-तडप कर मरता है और 'गिद्ध' इतमिनान से उसकी मौत का इन्तजार करता रहता है।

शिक्षा की तिजारत करने वाले प्राइवेट शिक्षण सस्थाओ की काय-समिति के सदस्य ट्रस्टी, अध्यक्ष आदि जब 'डोनेशन' बटोरने की लालसा मे 'गिद्ध' की तरह प्रतिभाओ की मौत का इतमीनान से इतजार करते है तो परिस्थितिया भयावह किबहुना असह्य हो जाती है।

परीक्षा की सफलता भले ही अको की उच्चता मानी जाती हो किन्तु उच्च शिक्षा के प्रवेश के लिए उनका कोई महत्व नही रह जाता क्योकि

शिक्षा की तिजारत करने वाले 'गिद्ध' प्रतिभाओं को अपने सामने ही दम तोडता देख रहे हैं और उनके कानो मे करुणा किसी पर्दे का स्पश नही कर पाती वे तो केवल रुपये की खनक सुन पाते हैं। यही 'गिद्ध' का मूल कथ्य है।

8 किरच-किरच आसमान--कहानी भी आदिवासी जीवन को मान्यताओ, विश्वासो, आस्थाओ को ही रेखाकित करने वाली कहानी है।

गाँव से अकाल से तग आकर 'सुरजी' गौतमपुरा के पास ईट के भट्टो पर काम करने के अपने गाव के टोले के साथ चली आती है किन्तु मेट, ठेकेदार, जमादार सब जसे उसके रूप, यौवन, सौन्दय को भूखे भेडिये की नजरो से देखने लगते ह किसी तरह वह उनकी नजरे बचाकर स्टेशन पर पहुँच गाडी पकडना चाहती है तभी बेहोश हो जाती है।

नाथूसिंह सुरजी को बचाता है दोनो मे काफी हेलमेल हो जाता है और सुरजी भगोरिया मेले मे आने का निमन्त्रण नाथूसिह को देकर अपने गाव चली जाती है और उससे ब्याह करने के सपने देखने लगती है। एक निश्चित दिन वह आ भी जाता है और जब सुरजी उत्साहित होकर उसे अपना जीवन साथी बनाने के लिए उसके हाथो मे अपन गालो पर मलने के लिए गुलाल थमा देती है—तब नाथूसिह प्रकट करता है कि वह तो विवाहित है। यह सदमा वह सुरजी बर्दाश्त नही कर पाती। उसके सपनो का आसमान किरचे-किरचे हो उठता है—वह फिर बहोश हो जाती है।

प्रेम जब आहत होता है, सपने जब बिखरते है, और भावी जीवन का जब स्वप्न भग होता है तो वह व्यक्ति को ऊपर से नीचे तक झकझोर जाता है। ऐसा ही सुरजी के साथ हुआ। पहल उसे इसलिए बेहोशी आयी कि वह भेडियो से अपने प्राण बचाकर भागी थी—आज इसलिए बेहोशी है कि वह जिसे तन-मन सौंपना चाहती है उसी का एक असत्य उसके भावना आकाश के मेघो को छिन्न-भिन्न कर जाता है।

9 मूले मटके—कहानी उन लोगो पर व्यग्य करती है जो शिक्षा, प्रतिशीलता, दार्शनिकता मे 'विवाह' को बधन, बेडियाँ और स्वैच्छिक भाग पर प्रतिबन्ध मानकर उससे कटते चले जाते है।

लेकिन जीवन के किसी मोड पर जाकर जब उनको अपना अकेलापन, उदासी, असह्यता कचाटने लगती है तो उनका दर्शन, मान्यताएँ, और प्रतिबाधित भोग की लालसा ताश के महल की तरह ढह जाती है--फिर वे भी किसी का सहारा, सहयोग साहचर्य तलाशने लगते हैं--उनकी मान्यताएँ चटक जाती हैं और उन्हे पूर्व स्थापित मर्यादाओं मे अनुभव का निचोड, सदाशयता उदारता के दर्शन होने लगते हैं और वे नारी के बिना जीवन को सचमुच अधूरा मानने लगते है।

10 नायमर-उजास--पहले उजले प्यार की उत्प्रेरक कथा है जिसमे उद्दाम यौवन की लालसाएँ भी कुपथ-कुमार्ग की ओर गमन नही करती--अपितु उजले सच्चरित्र, उन्नत मन की ओर ही अपनी गति-मति व्यक्ति करती है।

सरवती और मोहन का बचपन गाव मे साथ साथ बीता, पर पिता की जिद के आगे सरवती को कैलाशी से बँधना पडा और मोहन अपमान से आहत हो वह गाँव ही छोड आया।

कैलाशी के दुष्चरित्र, अय्यासी, लम्पटपन के कारण सरवती सदा-सदा के लिए उससे नाता तोड आयी। बरसो बाद जब सरवती पथरी के इलाज के लिए शहर के अस्पताल गयी तो वहा उसकी मोहन से पुन भेट हुई। प्रेम का सूखा बिरवा समय की फुहार पाकर फिर लहलहा उठा।

11 हवा के खिलाफ--कहानी नगरीय जीवन के सभासो की व्याख्या करने वाली कहानी है। शहरी जीवन मे पढे लिखे नौजवानो को रोजी नही, उन्हे रिक्शा चलाने को विवश होना पडता है किन्तु गुण्ड, बदमाश, उग्रवादी, आतकवादी सरे आम लोगो की जिन्दगी से खिलवाड करते रहते है मा बहनो की इज्जत पर डाके डालते रहते है। और जन धन पर ऐशो आराम की जि दगी बसर करत है।

महेश और तिवारीजी तो प्रतीक चरित्र है--जिनमे एक अन्याय अत्याचार, शोषण और भ्रष्टचार के खिलाफ लडता है तो दूसरा विवशता, हीनता, हीनता और लाचारी का प्रतीक चरित्र है।

गुण्डों के आतक से समाज को तभी मुक्ति मिल सकती है--जब भय, निराशा, हताश को छोड-समाज सगठित हो साहस और पराक्रम से इनका मुकाबला करें।

इस सकलन कहानिया श्री विपुल ज्वाला प्रसाद के कथा कौशल, जीवन्त अनुभवो परिवेश की गहनता और प्रखर अभिव्यक्ति के लिए किये गये शब्द-चयन के द्वारा अपने श्रेष्ठत्व की स्वय अभिव्यक्ति है। कहानियो मे जहाँ व्यक्ति, समाज, जातियो के रीति रिवाजो, प्रथाम्रा अँधविश्वासो और शताब्दियो से रचे वसे पर्यावरण को मुखरता मिली है वही इनमे जीवन की कुण्ठाओ, हताशाओ और नैराश्य की भी प्रचुर अभिव्यक्ति है।

परिवेश और पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग करने मे श्री विपुल पूर्ण सिद्ध हस्त है। जीवन मे जो कुछ देखा सुना और समझा वही श्री विपुल के कथा-साहित्य का परिवृत्त वन गया है। एक एक कहानी मे जिस मार्मिक सत्य की अभिव्यक्ति हुई है लगता है श्री विपुल उस सत्य के कही न कही, किसी न किसी रूप मे साक्षी रहे है—और यही उसकी सहज प्रमाणिकता है।

श्री विपुल ज्वालाप्रसाद को इन रचनाओ मे अन्धविश्वासो, कुप्रथाओ, कुठाओ, हताशाओ के विरोध मे एक क्राति शलाका दिखाई देती है। विरोध की एक चिनगारी दिखाई देती है। जो कभी भी ज्वाला का रूप धारण करने मे सहज समथ है।

आशा है इस सकलन की सभी रचनाएँ आपको पसद आयेगी और आपके मानस को झकझोरने मे अपनी अस्मिता अभिव्यक्त करेगी।

अजमेरा प्रिंटिंग वर्क्स के नियामक श्री रमेश अजमेरा ने बहुत कम समय मे, इस सकलन का जो कलात्मक मुद्रण करने मे सहयोग किया है उसके लिए वे साधुवाद के पात्र है।

अस्तु—
—डॉ० हरि महर्षि
सम्पादक

—1887, पाटनी भवन,
ऊँचा कुआ,
हल्दिया का रास्ता, जयपुर

1

अब नहीं आयेंगे

'देहरादून एक्सप्रेस' दरा की सुरम्य घाटी से सर्पाकार हो गुजर रही थी, किंतु उनका मन घाटी के नैसर्गिक सौंदय को निहारने के बजाय, स्टेशन पर विदा देने आए साथी सुघड सिंह की बातो मे खोया हुआ था। "मास्टर! तुम बडे भाग्यशाली हो। तुम्हारा लडका इजीनियर अब तुम उसके साथ ही दिल्ली रहोगे वहा बढिया

वह सारी बात समझ गए और बोले, "शुभ काम मे देरी किस बात की? अभी शाम को ही गाडी से बद्रीनाथ के लिए जाता हूँ। कल पूनो है, हरिद्वार मे हर की पैडी पर स्नान करने का अपना लाभ है।" क्या मतव्य था उनके इस निर्णय के पीछे?

खाग्रोगे-पीग्रोगे जीप-कार मे घूमोगे सेवा चाकरी के लिए नौकर-चाकर ! बीमारी-सीमारी के वक्त देख भाल के लिए बेटा-बहू ।"

ग्रपने भाग्य के लिए सुघड सिंह के मुख से ऐसी सुहानी सुहानी बाते सुन वह मन-ही-मन फूले नही समा रहे थे। मारे खुशी के उनका जीर्ण-शीर्ण सीना दो-दो मुट्ठी ऊपर उठ ग्राता था। मन-ही मन कहने लगते—इस दिन को देखन के लिए उन्होने मेहनत की, त्याग किया, कष्ट भी कितने झेले है। भला ग्रादमी की तीस साल की भी कोई उमर होती है। इसी उमर मे घरवाली साथ छोड गई। वह उस समय उद्दाम यौवन से प्रदीप्त युवक की तरह थे। रोटी-रोजगार से भी लैस। भला इत्ती-सी ही उमर से जीवन भर कौन विधुर बना रहना चाहेगा ? लेकिन उ होने उमेश की खातिर यह सुख गड्ढ से पानी की तरह उलीच दिया। घर मे दूसरी ग्रौरत ग्रा गई तो वह सौतन की ग्रौलाद को फलने-फूलने थोडे देती है ! दूसरी शादी के लिए बहुत से व्यक्ति ग्राए। लागो ने बहुत कुछ कहा—जिंदगी लबी है रमेश जी ! कहा तक ग्रकेले खटते रहोगे। तो उनका एक ही जवाब होता लोगो को, "मन ग्रौलाद के सुख के लिए ही शादी की थी। सो वह सुख प्राप्त है मुझे। ग्रब दूसरे सुख की मुझे जरूरत नही।"

उमेश को उसकी मा तीन साल का छोडकर मरी थी। वह तभी से उमेश का उसके समझदार होने तक गले म तावीज की तरह ग्रपने साथ रखते रहे। मुह ग्रधेरे उठते। घर के काम-काज, रोटी-पानी से निबट स्वय तयार होते, उमेश को तयार करते। दस बजे तक रमेश का साइकिल पर बिठा स्कूल मे ग्रध्यापक की नौकरी पर पहुँचते। फिर स्कूल की छुट्टी के बाद शाम को घर लौटना। ग्रौर फिर वही रोटी-पानी की खट-खट। उमेश को लेकर एकाध घटा मगज मारना। उसका मन नही लगे तब तक उसको कहानी-किस्से सुनाना। जिस-जिस स्कूल मे रहे, उमश को भी उसी स्कूल मे छाती के सामन रखा।

जब उमेश इजीनियरिंग म गया तब ता उ हे हाड-तोट मेहनत करनी पडी। उसके खर्च के जुगाड के लिए उ होन ग्रपना स्थानातरण ग्रामीण क्षत्र से शहर मे कराया। वहा रात दस-दस बजे तक ट्यूशना म

आंखें फोड़ी। घरवालों के सब गहना-गुडिया हवन कर दिए उसकी पढाई के चक्कर मे। तब कही पूरी हुई उसकी इजीनियरिंग की पढाई।

उसकी नौकरी दिल्ली मे है। साल मे एकाध बार आता है उनके पास। कभी-कभी उनसे भी वही चलने के लिए कहता है। सो अभी तक तो वह उससे यही कहते आए है, "वहा महानगर मे मरी तबियत थोडो हो लगनी भया। वहा की मशीनी जिन्दगी मुझे रास नही। आदमी को आदमी से बात करने की फुसत नही। अडोसी-पडोसी आपस मे अजनबी की तरह ह। यहा गाव की तरह सुबह-शाम मिल-बठना एक-दूसरे के दुख-दद मे हिस्सेदारी बटाना ऐसी आत्मीयता वहा देखना चील के घोसले मे मास टटोलने के बराबर है। स्वच्छ हवा-पानी के लिए भी मुहताज रहना। मार धुआं-धक्कड, रेलमपेल।" पर अब उमर पक गई है। पता नही पके आम की तरह कब पेड से टपक पडे! यहा गाव मे रहने पर लोग उमेश को बुलाएगे। तब वह आएगा। मिट्टी यहा खराब होती रहगी उसकी इतजारी मे। सो अब वह उसी के पास जा रहे है। कुछ होने पर किसी को कोई परेशानी न हो। मिट्टी खराब नही हो। इधर मुसाफिर ने सराय खाली करी, उधर पिंजरा आग के हवाले। "छिति, जल, पावक, गगन, समीरा" सब अपने-अपने तत्व अपने-अपने मे बिलायमान। कुछ ही घटो मे टटा साफ। किसी को कोई परेशानी नही। न किसी को तार-चिट्ठी देने की आवश्यकता।

× × ×

सिविल लाइस की बडी-बडी कोठिया शाम को डूबते सूरज की लालिमा मे दिपदिपा रही थी। एक बडी-सी कोठी के सामने रुक उन्होने एक युवक से पूछा, "भया! यह कोठी उमेश सक्सेना एक्सईन की ही है न?"

"हा बाबा।"

"शाबाश बेटा! जुग-जुग जिओ" वह कोठी के मुख्य फाटक पर जा पहुचे। बाहरी फाटक से कोठी के दालान तक दोनो ओर करीने से कटी मेहदी के बीच रास्ता बना हुआ था। रास्ते मे बकरे के लाल खून की

तरह बजरी बिछी हुई थी। रास्ते मे बगीचा लगा था। बगीचे मे खिलते जूही, मोगरा, गुलाब पता नही कौन-कौन से फूल! दालान तक फैले बगीचे के फूलो की महकती गध उनके फेफडो मे घुसी तो उन्हे रास्ते की आधी थकान उतरती-सी महसूस हुई। वह दालान से उमेश को ढूढते ड्राइग रूम मे घुस गए। वहा उमेश तो उन्हे दिखा नही पर ड्राइग रूम की वैभवशाली सजावट देख कुछ देर तक वही हक्के-बक्के से खडे रहे। ड्राइग रूम के फर्श पर बेशकीमती कालीन। खिडकिया पर रग-बिरगे आकर्षक महगे पर्दे लटक रहे थे। ड्राइग रूम के चारो कोनो मे पीतल के चमचमाते घडो मे असली से लगते प्लास्टिक के मनी प्लाट। दीवारो पर टगे हुए बहुमूल्य तैल चित्र। एक तरफ टी वी सट, वी सी आर, फ्रिज रखे हुए थे। कीमती फर्नीचर चमचमा रहा था। एकाएक उसके मुख से निकल पडा, "मेरे बेटे के ये ठाठ बाट! वभव "

ड्राइग रूम मे उमेश के न दिखने पर वह अन्दर पहुँचे। वहा भी वह उसके बच्चे, निरमा नही दीखी। वह फिर दालान म आए। इस बार उन्हे बाग म पेड-पौधो को पानी देता माली नजर आया। वे उससे ही पूछने लग, "ऐ-ऐ-ऐ भैया! वह ?" किन्तु उन्होने मुह से निकलते शब्दो पर तुरन्त ताला लगा दिया—मैं भी यार निरा मास्टर ही ठहरा। जसे उमेश भारी-भरकम इजीनियर न होकर कक्षा दो का विद्यार्थी हो। उसके लिए यह तू-तडाक भरा सबोधन। पुन अपने शब्दो पर सम्मान का आवरण पहनाते माली से पूछने लगे, "भैया! तुम्हारे साहब ?" गोरखा माली उनकी तरफ उन्मुख हुआ, "क्या चाहता है बाबा ?" उनके मन मे आया, 'बेवकूफ ढग से बोल। म तेरे साहब का बाप ।" किन्तु उन्होने तुरन्त इस विचार को मन से रफता कर दिया, "छोडो यार! काहे को इसके मुह लगा जाए। छोटा आदमी है। जितनी उसमे लियाकत होगी वसे ही तो बात करेगा "

'तुम्हारे साहब के पास आया हू ।"

"उनका गाव से आया!"

"हा म म म म।"

"तो इधर ही बैठो उधर कोठी मे नही जाने का। साहब मेम-बच्चा लोग मारकीट गया जब ग्रा जाए मिल लेना।" वह पुन ग्रपने काम मे लग गया। कभी-कभी उसकी निगाह उनके मुड-मुड हुए कुर्ता-पायजामा पर चली जाती थी।

× × ×

यहा ग्राकर वे बडे खुश थे। बना-बनाया भोजन मिलता। धुले-धुलाए कपडे। घर के सारे काम काजो, चिताग्रो से निवृत्ति। ग्रब उनकी दिनचर्या बन गई थी—सुबह ही सुबह दिशा-मैदान से फारिग हो छडी उठा सिविल लाइन की साफ-सुथरी सडक पर काफी दूर घूमने निकल जाना। सडक के दोनो ग्रोर खडे नीम, ग्राम, उन पर छाए बौर की गधयुक्त हवा उनके फेफडा मे ढेर-ढेर ताजगी भर देती। घूम कर ग्राने के बाद वे चाय पीते। उमेश के कावेंट मे पढते बच्चो से बतियाने लगते, "हमे सुबह ही सुबह ग्रपने घर ग्रापस मे गुडमार्निंग की जगह नमस्कार बोलना चाहिए। ग्रपनी भाषा इतनी दीन-हीन नही कि हम ग्रापस मे भी दूसरो की भाषा मे बात करे। हमे ग्रपनी भाषा, सस्कृति, देश ग्रौर माटी पर गव होना चाहिए। विदशी भाषा पढे उस पर ग्रधिकार रखे। पर उसे काम मे तभी ले जब ऐसा करना जरूरी हो। घर ग्राए ग्रतिथि का हाथ जोड स्वागत करना चाहिए। माता-पिता, गुरुजना के चरण स्पश।" वे बच्चो को रामायण, महाभारत के ग्रछूते-ग्रनसुने प्रमग सुनाते। बच्चो के स्कूल जान के बाद नहाते धोते, पूजा पाठ करते, तत्पश्चात भोजन फिर दोपहर म थोडा ग्राराम। शाम को घूमने चले जाते। किसी पुस्तकालय मे जा बैठते। उनका स्वास्थ्य ग्रब ठीक हो चला था। वर्षो स बिगडी खासी, हल्का-फुल्का महसूस करते। राह चलते कभी कभी ग्रपने ग्राप बुदबुदा लेते, "इन्ही दिनो के लिए तो ग्रादमी सतानोत्पत्ति करता है। जिदगी भर कोल्हू के बल की तरह उनकी समस्याग्रो मे जुता रहता है। ग्रगर बुढापे मे सतान ग्रपने वृद्धजना की सेवा नही करे तो फिर कोई क्यो इतनी खामख्वाम परेशानी उठाए।"

एक दिन शाम को निरमा ग्रौर उमेश साथ-साथ डिनर ले रहे थ। निरमा उमेश से बोली, "तुम्हारे डैडी से तो यहा बहुत डिस्टरबस है।"

"कैसे ?"

"आप फील नही करते "

"ध्यान नही दिया मने इधर "

"देखिए ! ड्राइग रूम का इन्होने कैसा सत्यानाश कर रखा है। वही सोते-बैठते है । वही अपना सामान सट्टा । कोई फ्रेंड आती है तो इनके ये हाल, इनका लिवास देख वडी शर्म आती है ।"

"बडे-बूढे है यार ! "

"लेकिन इनमे मैनर्स जरा से नही । सर्वेंट्स से घुट-घुट कर बातें करने लग जाते हैं । ड्राइंग रूम मे ही एक अलमारी में अपना ठाकुर द्वारा खोल लिया है ।"

"यस यस हीयर यू आर करैक्ट उस दिन एस० ई० साहब यहा आए थे । म और वह थोडी लेने लगे तो ये वही नाक पर रूमाल रख वैठे रहे । मुझे वहुत वुरा लगा पर "

यही नही उस दिन डी० इ० एन० मिसेज खन्ना आई हुई थी अपन लोग वूमन लिब० पर कुछ इम्पॉर्टेंट बात कर रहे थे । ये लगे उसी समय जोर-जोर से रामायण पढने क्लाइमक्स आफ स्टुपिडिटी किड्स को अट-शट सिखाते रहते हैं । वे अब सबसे नमस्कार नमस्कार करते है व्हाट्स दी फन टु सड दम इन कावेंट ? खासते भी ये कितनी बुरी तरह हैं, विचारा पामारियन डर कर पलग के नीचे घुस जाता है "

"कुछ भी हो अब सहना तो इनको पडगा ही "

"कब तक ?"

"जब तक जिए "

"ना नो दिस आई कांट "

"दन ?"

"इन्हे कही दूसरी जगह शिफ्ट कीजिए "

"अरे नही यार दूसरी जगह कहा "

"कही भी -"

"नही ऐसा नही थोडा पेशस रखो अब ये कितने समय के मेहमान ह ।"

"चाहे ये एक ही दिन अब और यहा इनका रहना मुझे टालरेट नही "

बात बढती देख उमेश ने दूसरी महत्वपूण बात छेड दी ।

निरमा का घ्यान उधर बट गया । उस दिन उनसे सबधित बात वही आई-गई हो गई । पर निरमा तो जसे उनके पीछे हाथ धो कर ही पड गई थी । जब भी उमेश से फुसतो के क्षण बातचीत होती—वह उन को पहले ले बैठती । उनकी छोटी-छोटी बातो को बढा-चढा, नमक-मिच लगा उमेश को पेश करती । उन्हे कोठी से कही अन्यत्र भेजने के लिए उसे उकसाती । पर उमेश बात को टाल जाता था । इस पर निरमा उसे चुभती, कटती बातें सुनाती । वह भी कुछ कह देता । दोनो मे किचकिचबाजी हो जाती ।

एक दिन उनको लेकर उन दोनो मे ज्यादा ही कहा सुनी हो गई । बाबू जी वहा नही थे । बच्चे अपने मा बाप को लडता देख सहम गए । निरमा रूठ कर अपने मा-बाप के यहा जाने लगी थी । उमेश ने ही अपनी हार मान बडी मुश्किल से उसकी खुशामद कर उसे अपने पीहर जाने से रोका था । वह उस दिन रुक तो गई थी—पर दोनो मे तनाव बना हुआ था । बातचीत बद थी ।

उस दिन इतवार को घर के वातावरण को हल्का फुल्का सरस बनाने के लिए उमेश ने अपनी ही ओर से पहल की, "आज नाश्ते से जल्दी ही निबटना यार ! पिक्चर चलेंगे "सरोवर" में बडी अच्छी सामाजिक फिल्म लगी है ।" निरमा ने कटीला जवाब दे उसके उत्साह-उमग को हवा कर दिया, "अपने डैडी को ले जाना " उसने निरमा की मनुहार की, "छोटी-सी बात पर ऐसा भी क्या मूड खराब ?" "मैंने आपको

फाइनली बोल दिया है न, जब तक आपके डैडी यहा है मेरा आपसे कोई कम्प्रोमाइज नही हो सकता "

उसका मन बुरी तरह बुझ गया। कोठी मे एक क्षण भी ठहरना उसे दूभर लगा। वह स्कूटर ले चुपचाप वहाँ से निकल पड़ा। निरुद्देश्य यो ही एक बाजार से दूसरे बाजार भटकता रहा। बाबूजी उस अपनी गृहस्थी म अब नागफनी से लग रहे थे। घर म तनाव-कलह की वही जड थे। वे अब अपने यहाँ उसे बेहद अवाछित तत्व लग रहे थे। बेहद कड़ुवाहट भर आई थी अब उसके मन मे बाबू जी के लिए। वह दोपहर ढल घर लौटा। बाबूजी माली के साथ बाग मे पेड-पौधा को पानी दिलवा रहे थ। वह उनके पास आया तो उन्होने वात्सल्य प्रेम में उमग भर कर कहा, "आओ बेटा !" पर उसन उनके स्नेह का कोई उत्तर नही दिया। अपितु उखडो-उखडी मुद्रा में उनसे कहन लगा, "आज बस स्टैंड पर गाव के राजहस ठाकुर मिले थे।'

"राजहस ठाकुर अ अ अ अ अ अ ?" उनके चेहरे पर बेहद आश्चय फैल आया।

"हा अ अ अ अ हा अ अ थ अ राजहस ठाकुर क्या गाँव वालो को मैं इतना भी नही पहचानता ?" उनके प्रति उनके मन मे भरी कड़ुवाहट एकदम बाहर आ गई। उन्होने उस ओर ध्यान नही दिया।

'क्या कह रहे थे बेटा ' तुम से राजहस ठाकुर ?"

"आपने मुझे लानत-मलानत कराने का अवसर जो दे रखा है।"

"साफ साफ बताओ बेटा। मैं समझ नही पा रहा हूँ।"

'राजहस ठाकुर कह रहे थे मुझसे तुम जसे कसाऊ बडे अफसर से तो हमारे कुपढ गरीब बच्चे ही अच्छे। बिचारे पडितजी को तुमन कुछ भी दिखाया-भलाया नही यो ही निकल गई बिचारे की जिंदगी देख लो हमारे बच्चो ने हमारे न न न करने के बावजूद हमे ढेर सारा खर्चा दे तीर्थयात्रा पर भेजा है केदारनाथ-बदरीनाथ जा रहे हैं -"
"एसा कर रह थ वे ?'

"ग्रौर नही तो ग्रापको तीर्थ यात्रा-देशाटन से किसने मना किया है ग्राप भी क्यो नही जाते... ? ग्रापके पास खर्चा पानी नही हो तो मेरे पास से ले जाइए—वापसी पर गाँव भी घूम-फिर ग्राइए।"

गाँव की बात सुन वह सारी बात समझ गए, "ठीक बेटा...ठीक बेटा बहुत ग्रच्छी बात कही तुमने। मैं ग्रभी तीथ यात्रा पर निकल जाता हू। शुभ काम म देरी किस बात की। ग्रभी शाम की ही गाडी से बदरीनाथ के लिए जाता हू। कल पूनो। हरिद्वार मे हर की पैडी पर स्नान करने का भी लाभ है।" निरमा उनका निणय सुन बडी खुश हुई। वे बाग से कोठी के दालान मे ग्रा गए। निरमा को ग्रावाज लगाई, "ग्ररी बहू, ग्रन्दर से मेरा थैला-बेंत भिजवाना तो सही बेटी।" निरमा ने नौकर का इन्तजार न कर खुद ही उनका थैला-बेंत ग्रन्दर से ला उन्हे पकडा दिया। "खुश रहना बेटी, चलता हू।"









चम्बल के चौड पाट की तरह रेलवे-याड फैला पडा है। याड मे लाल हरे-पीले सकेत देते सिगनल जल रहे है तथा याड का ही सीना चीर अप-डाउन मेन लाइन चरवेति-

---

उस दिन वह जीएम स्पेशल को झडी बता रहे थे। भडार-गृह से आई सीधी सिली-सिलाई वर्दी पहन रखी थी। सिर पर पीकैप। उधार राशन पानी देने वाले बजरिया के बनिए को पता नही क्या सूझा। प्लेटफार्म पर खडे दस आदमियो के सामने उनकी भप बाधने लगा "जा डरेस मे तो बाबूजी ! बैण्ड मास्टर बढिया जचत " वह बहुत ताव खा गये। तबियत हुई—बनिया की जमकर झडियो से सुताई कर दें। लेकिन फिर राशन-पानी उधार कौन देगा ? मन मसोसकर रह गये थे।

चरवेति का आह्वान करती विलीन होती सीधे मुह धावक की तरह समानान्तर दौडती, दूर क्षितिज मे विलाती दिखाई पड रही हैं।

घडी का छोटा काटा छ पर घूमते ही वह ऐन सुबह ड्यूटी करन चुस्त-दुरुस्त स्टेशन पर दाखिल हुए। आते ही सबसे पहले यार्ड-सिगनलो को निगाह से निकाला। फिर दफ्तर मे आ साथी से चावियां, रोकड, रजिस्टर, काशन आर्डर का चार्ज लिया तथा उसे भार मुक्त कर मेज पर रखे टी एस आर रजिस्टर मे लाल स्याही से 'ऑन ड्यूटी' लिखो। कुर्सी पर बैठने को ही हुए कि डाउन ब्लाक यत्र पर घटियां बजने लगी। घटिया सुन उन्होने श्री डाउन फ्र टियर मेल को लाइन क्लीयर दिया। अगले स्टेशन से भी लाइन क्लीअर मांग मेल को केबिनमैन न 'अ सिगनल' दिलवाये। दिये गये सिगनलो को स्वय जांच, तीन दिन से मिलने मे नही आ रही कोचिंग बलस शीट को मिलाने मे लग गये। उन्होने फिर से बैलस शीट के आकडा को स्टेशन के रजिस्टरो से टकराया। कैश आफिस को रोजाना भेजी गई रोकड का जांचा। इतना करने के बाद जब बलेसशीट का दोनो ओर का जोड आपस मे मिलाया तो अब की बार वह सिर पर हाथ रख बैठ गये। बुरी तरह बडबडाने लगे—कहा तक माथा मारता रहूँ तीन दिन हो गये स्साली मे पचत-पचते दिमाग खाली हो गया पर मिल ही नही पा रही—फरक निकल ही नही पा रहा ...आज इसे लेखा कार्यालय को भेजने की अ तिम तारीख है यदि यह आज लेखा कार्यालय नही गई तो—" इस विचार ने उन्हे मानो विपले बिच्छू ने डक मार बुरी तरह तिलमिला दिया हो— "तब तो गजब हो जाएगा। समय पर बैलसशीट नही भेजने के आरोप मे चाजशीट मिलेगी। दड स्वरूप पास-पीटोओ बद होगे। तीन माह — छ माह साल की तरक्की भी बद होने की नौबत आ सकती है। पसनल फाइल मे लापरवाह' 'अक्षम' की टिप्पणिया लाल स्याही से दज होने की नौबत भी—

रुआसे से हो वह खुदबखुद सवाल-जवाब करने लगे—कहाँ कर रहा हूँ लापरवाही जो लापरवाह' का तमगा मेरे माथे मढा जाएगा। समय पर ही ता इसे बनाने लग गया। यह दीगर बात है कि इसी बीच डी आर एम इसपेक्शन, आडीटर आ धमकने से दैनिक काम के साथ साथ इनको निबटाने के बाद बैलेसशीट तयार करने के लिए एक मिनट का

भी समय नही मिला और इस कारण बैलेसशीट समय पर लेखा कार्यालय न जाय तो इसमे मेरी क्षमता का क्या कसूर ? पर इस बात को यहा देखने-सुनने वाला कौन ? मूल उद्देश्य पर जाने की तकलीफ कौन करे ? यहा तो मरकर-खपकर किसी भी प्रकार समय पर सबको पकी-पकाई दो। नही तो भुगतो लोगो की धीगा-मस्ती। दादागिरी। पाश्रो परसाद। होश्रो जिवहा। दो साल हो गये सालाना तरक्की को नसीब हुए। तरक्की मिलने का मौका आता है कि कुछ न कुछ बवाल सिर पर आ टूटता है। कभी बैलेसशीट कभी गाडी का डिटेशन-अफसर की जी हजूरी मे कताई और नही तो 'स्लैक सुपरवीजन' का ही आरोप सही।

भीतर से तरल हो जाने से उनकी आखो मे पानी छलछला आया। बैलेसशीट को एक ओर सरका कोट की जेब से बीडी-माचिस निकाल ली। बीडी सुलगा धुए से भीतर की तरलता सुखाने लगे। मुश्किल से आधी ही बीडी खत्म हो पाई कि ब्लाकयत्र पर पिछले स्टेशन से मेल छोडने की घटिया बजी। उन्होने बीडी का फर्श पर रगड झटपट कुर्सी पर टगा वर्दी का कोट पहना। पी कैप लगाई। हाथ मे लाल-हरी झडी ले मेल को 'आल राइट' सकेत दिखाने के लिए दफ्तर से प्लेटफाम पर सावधान मुद्रा मे आ खडे हो गये। मेल पूरी गति से स्टशन पर प्रविष्ट हुआ। किन्तु याड छोडते छोडते एकाएक भिच्चSSSSS भिच्चSSSS कर स्टेशन पर खडा हो गया। मेल के एकाएक इस तरह खडे होने से वह बुरी तरह हडबडा गये। मेल क्यो खडा हो गया ? क्या बात हो गई ? मशीनी फुर्ती से कारण तलाशने लगे। तुरन्त ही उन्होने देखा कि मेल को दिये गये 'थ्रू' सिगनल गिर गये हैं। खतरे के स्थान पर हैं। उन्होने झटपट सिगनल पार करने के लिए मेल के ड्राइवर को कागज तयार किये। ड्राइवर को कागज देने के लिए पाइट्समैन तलासने लगे। एक पाइट्समैन बजरिया म धूनी रमाये बाबा के पास दम लगा रहा था। दूसरे को उन्होने खुद पी डब्लू आई को मीमो देने भेजा था। दम लगाते पाइटसमैन को बुलाने पर धीरे-धीरे वह ऑफिस आएगा। कागज पत्र लेकर धीरे-धीरे ड्राइवर के पास जाएगा। मेल ज्यादा पिट जाएगा। नतीजन उन्हे चार्जशीट 'पनिशमट' वह स्वय ही काग~~ मेल के ड्राइवर के पास दौड पड।

हाफते-हाफते वापस ऑफिस लौटे तो टिकट खिडकी पर लोकल गाडी के टिकट चाहने वाले यात्रियो की लम्बी कतार लगी हुई थी। उन्हाने यात्रियो को टिकट बाटना प्रारम्भ कर दिया। टिकट वाटने के साथ-साथ यात्रियो के मासिक सीजन टिकट, लगेज टिकट भी बनाते जाते थे। तभी पी डब्लू आई को मीमो देने गया पाइटसमन कार्यालय म लम्बे-लम्बे डग भरता आकर बोला—"साहब! पाटन बोर एसडीएम साब आय रऐ"।

कुछ ही देर मे एसडीएम साहब उनके कार्यालय म आये। एक क्षण को उन्होने यात्रियो को टिकट बाटना रोक उनका अभिवादन किया। बैठने को उन्हे कुर्सी दे तथा पाइट्स मैन को एसडीएम साहब के लिए चाय लाने का आदेश दे फिर यात्रिया को टिकट बाटने लगे।

"चाय मगाने की तकलीफ मत कीजिए माट्साब। अभी तहसीलदारजी के यहा से लेकर ही चला हू। गाडी कैसी है?'

"गाडी तो साब राइट टाइम पर यह कैसे हो सकता है कि आप यहा पधारे और हम एक कप चाय भी आपको पेश नही करे।"

"ऐसी कोई बात नही माट्साब!"

वह टिकट बाटते रहे। एसडीएम साहब उनके दफ्तर का नजारा देखते रहे। ऑफिस क्या एक तरह से कबाडखाना था। छोटी सी कोठरीनुमा जगह। तरह-तरह के सामानो, कागज-पत्रो स अटी हुई। कई कई फान। तार यत्र, अलमारिया, फस्टएड बाक्स, फायर एक्स्टिन ग्युशर, हैण्ड स्लाइड कन्ट्रोल, रिपीटस, तिजोरी, टिकट ट्यूब, पचिग मशीन, वेइग मशीन, कायदा कानून की किताबे, फाइल रजिस्टर, अजीब अजीब चित्रा-नारा वाल पोस्टर।

वह यात्रिया को टिकट बाट धम्म स अपनी कुर्सी मे आ धसे। आंख मीच थकावट सी उतारन लगे तभी एसडीएम साहब न उन्हे कहा—"आपकी पोस्ट ता ठीक है पर ड्यूटी बडी हाड है माट्साब—।"

"जी बहुत ही।"

"जिम्मेदारिया भी बहुत इन पोस्टरो मे जरा जरासी चूक से कैसे-कैसे भयकर हादसे होने की बात लिखी है।"

"पूछिए ही मत साब ।"

'पर इन सब कारणो से आप लोगो की वेतन-सुविधाएँ तो बढिया होगी ? सुनते है इडिया भर मे घूमने के लिए आप लोगो को फ्री पास मिलते है ?"

वह कुर्सी पर चौकन्ने हो बैठ गये। अपने पद के लिए सुहानी बातें सुन उन्हे मन ही मन बडा सुख मिला। किन्तु असलियत का ध्यान कर हसे भी खूब मन ही मन टोले दूर से सुहाने दिखते ह असलियत का पता तो तब चले जब कोई उनसे रूबरू हो। उत्तर मे वह गोलमोल बोले—सब ठीक ही है साबऽऽऽऽ ।"

"मेरे भी एक मित्र आपकी इस रेलवे मे एज स्टेशन मास्टर भर्ती हुए थे...अब तो कोई बडे अधिकारी होगे—आप अभी तक स्टेशन मास्टर ही कैसे ?"

बात को उन्होने तुरन्त ही साध लिया—मैं सीधी भर्ती से स्टेशन मास्टर नही— दूसरी ब्राच से प्रमोट होकर आया हू ।"

"..तभी "

'आपके मित्र का क्या नाम था साब ..। ?"

"गोपाल शरण "

जैसे एकाएक कुछ अप्रत्याशित घट गया हो। एसडीएम साहब के चेहरे को उन्होंने गौर से देखा तो उनके मन मे छनाका सा हो गया—अरे ये तो मट्रिक में उनके साथ पढा पीयूष है वह मैट्रिक पास कर नायब तहसीलदार हो गया था और म यहा रेलवे में .इतना जान लेने पर तो उनमें अजीब हीनता, कुठा, नैराश्य, मायूसी खलबल-खलबल करने लगी—समान योग्यता धारी होते हुए कहाँ आज पद-प्रतिष्ठा,

मान-सम्मान, सुख सम्पन्नता में उससे कोसा दूर आगे गोलमटोल सुदर्शन पीयूष !! कहाँ दीन-हीन लुटे-पिटे हारे सिपाही की तरह एक ही जगह स्थिर हाडो की माला वह। कही पीयूष ने उन्हे पहचान लिया तो उनकी बडी भद्द होगी। वह तुरन्त पीयूष के सामने से कुर्सी से उठ पीठ फेर काउन्टर के सहारे खडे हो गये। एक रजिस्टर खोल उसमे कुछ लिखा-पढी करने का नाटक करने लगे। मन कही बहुत दूर पख लगा उडता हुआ विचित्र-विचित्र सोचने लगा था—मरने वाली [पत्नी को इसी सम्बोधन से पुकारते हं] पर शायद इसीलिए खप्त सवार रहती थी—ओ-हो-ओ-हो–आ–हो – नाम वडे दर्शन छोटे

ऊची दुकान फीके पकवान—नाम स्टेशन मास्टर तनखा वित्तीसी कोल्हू के बैल की तरह चौबीसा घटे जुतो पहाडा सी जिम्मेदारी उठाओ—पाताल-पानी कालाकुण्ड निर्जन स्थानो की मार सहो—लेन देन के नाम वही मुट्ठीभर चना। और भी यहा क्या अमन चैन मारे-मारे फिरते रहने से बच्चे पढ नही पाते। बीमारी शीमारी भी अपनी गाठ से लगाते फिरा। कहने को रेलवे ने अस्पताल खोल रखे है। लेकिन रोडसाइड स्टेशन से मरीज को मालगाडी मे डाल जबतक शहर स्थित अस्पताल पहुँचो, मरीज की रास्ते मे ही टे बोल जाय। मेन लाइन पर स्टेशन मास्टर की नौकरी। नगे खाडे पर चलना, जरा सी चूक हुई वैठ गई भस पानी मे। बनर्जी बाबू ऐसे ही तो गये कामसे। घर से बीबी की सीरियस हालत का तार आया था। छुट्टी मागी। मिली नही। रात की ड्यूटी मे बस बीवी की सीरियस वाली बात ही दिमाग मे घुमडती रही। लेलो गाडी पर गाडी। हो गया भयानक धडाका। नौकरी गई सो अलग। दो साल की सजा और मिली। डूब गई बिचारे की लुटिया पानी म। फिर स्टेशन मास्टर रिटायरमैंट तक स्टेशन मास्टर बना रहे इसकी भी क्या गारटी ? नही 'बीजन टस्ट' मे लुढक जाओ को आ जाओ जनाब घूम फिर, फिर अपनी जगह। बन जाओ फिर तार-बाबू। कू फिर पीतलटो 'गर—गट्ट—गर गट्ट "

उस दिन वह जीएम स्पेशल का झडी बता रहे थे। भडारगह से आई सीधी सिली-सिलाई वर्दी पहन रखी थी। सिर पर पीकप। उधार राशन पानी देने वाले बजरिया के बनिए को पता नही क्या सूझा। प्लेटफार्म पर खडे दस आदमियो के सामने उनकी भप बाधने लगा

"जा डरेस मे तो बाबूजी ! बैण्ड मास्टर बढिया जचत" वह बहुत ताव खा गये । तबियत हुई—बनिया को जमकर झिडियों से सुताई कर दे । लेकिन फिर राशन-पानी उधार कौन देगा ? मन मसोसकर रह गये थे ।

लोगो की सामूहिक 'ह्—अह्-अह्—अ....' मे उन्होने भी 'ह्-अ-ह् अ—ह्-अ....' जोड दी थी ।

प्लेटफार्म पर गाडो प्रविष्ट होने से लोगो मे चिल्ल पो मच गई । वह एसडीएम साहब को गाडी मे विठा वापस दफ्तर लौट रहे थे । 'ए SSS बाबूजी SSS ' की आवाज ने उन्हे सिर से पैर तक कपा दिया । उस इलाके का जानामाना गुण्डा उन्हे चेतावनी दे रहा था । " इस गगू को समझालो बाबूजी SSS यह कुत्ता मुझसे गेट पर टिकट मांगता है । तुम्हारे लिहाज से मैं आज इसे छोड देता हू नही तो इसकी लुगाई शाम को आंख फाड देखती ही रह जाएगी कि बलमा नौकरी से अभी...."

बेहद घबडाहट मे उनके गले का थूक सूख आया । बडी मुश्किल से हकला-हकला कर बोले "गुस्सा थूको छोडो यार कमरू मिया । ....ये स्याला गगू अभी यहां नया-नया आया है । अपने-पराये को चीन्हता नही मैं अभी इसको समझाये देता हू आयदा यह ऐसी हरकत नही अबकी गुस्ताखी मुआफ "

गुण्डे के चले जाने के बाद वह फिर बडबडाने लगे । लो सिर पर यह नया बवाल और ...इधर कुआ उधर खाई । ऐसे लोगो से टिकट मांगे तो ये छुरा-चाकू बताए । टिकट कलक्शन कम रहे तो आफिस डडा मारे । ऐसे मामलो की पुलिस में रपोटा-रपोटी करे तो वह दो आजाद गवाह मागे । कहां धरे हैं गुण्डे के खिलाफ दो आजाद गवाह । वह भी एक परदेशी के लिए ?"

वह बेहद विवशता, भय, उत्तजना, आत्महीनता, अवसाद, नराश्य मे आकठ डूब आये थे । जीव की अपूर्व गर्माहट थी उनके पास लेकिन उन्हे लग रहा था—यह गर्माहट भी उन्हे बहुत समय तक गम नही रख पायेगी ।

3



पिछले कुछ दिनो से उनके चेहरे पर वह चमक-दमक नही। चेहरे पर चिन्ता की रेखाए जमी रहने लगी है। आखो के नीचे कालिमा व झुर्रियों के निशान भी उभर आये है। पहले उनका चेहरा

सूरज काफी चढ आया था। लखना अपने दल-बल सहित पेड काटने आ रहा था। लखना और उसके साथियो के चेहरो पर विजय भरी कुटिल मुस्कान खेल रही थी। शिवचरण भी अपनी मनचीती पूरी होते देख फूला नही समा रहा था। लखना ने दूर से उस सुहाने पेड को देखा तो एक क्षण को वह भी पेड को देखता ही रह गया। उसके मन मे भाव उठे—सचमुच पेड गजब का ही है। कैसा सुन्दर फलदार पेड ऐसे पेड को काटा नही जाना चाहिए "

ओज से चमकता रहता था। रौनक हर समय ठाठें मारा करती थी। उनका लम्बा-चौडा, गठा बन्धा शरीर। गोरवए। सिर पर बगवगा साफा। शरीर पर सफेद झक्क कुर्ता-धोती। पैरो में पालिश किए चमचमाते जूते पहन, हाथ मे बेत ले, बल डली मूंछो से बाजार निकलते तो देखने वाले उन्हे देखते ही रह जाते। बिना जानने-पहचानने वाले भी कहने लगते, "देखो तो सही! इस उमर मे भी ये कैसे जचते हैं ?" उनके साथी तो अक्सर ही उन्हे टोका करते, "यार रामनाथ! साठा मे भी पाठा हो रहा है इस सेहत का क्या राज ? कौन-सी चक्की का पिसा आटा खाता है यार!? . 'तो वह अपनी घनी मूछो में उजली धूप सा मुस्करा पडते "यह रौनक किसी चक्की के पिसे आटे की नही भाई! इसका राज तो कुछ दूसरा ही ..."

अदालत के अहाते मे वकील के ठाव पर बैठे वे वकील से आजिजी कर रहे थे "मेरे सही पक्ष पर किसी प्रकार की आच नही आनी चाहिए वकील साब! ...चाहे इस मामले मे मेरे हजारो रुपए खर्च हो जाए , दूध का दूध पानी का पानी ही होना चाहिए..." वकील उन्हे तसल्ली दे रहा था, "देखो भाई! तुम्हारा पक्ष मैं हाकिम के सामने पूरी मजबूती, वजन, तर्क से रखूगा , इसमे कोई कोताही नही होगी रहा तुम्हारे पक्ष-विपक्ष मे फसला होने का प्रश्न सो वह हाकिम के विवेक समझ पर निर्भर "

बात यो उठी—उस दिन जेठ की दोपहरी बुरी तरह चिलचिला रही थी। उन्होने ढोर-डगरो को खेत से पानी पिला, आम के पेड के नीचे खूटो से बाध दिया था। ढोरो के खनोटो मे चारा नीर दिया था। खुद भी नहा-धो दोपहर का भोजन कर वही ढोरो के पास पेड की छाया मे खटिया पर आराम कर रहे थे। पेड की सघनता से चिलचिलाती धूप का एक चदोवा भी नीचे नही आ पा रहा था। दोपहरी की तपिश भरी हवा भी पेड के नीचे से ठण्डी हो गुजर रही थी। हवा के साथ पेड पर लग रहे कच्चे आमो की महकी-महकी गन्ध उनके नथुनो मे घुसती तो बडा आनन्द महसूस करने लगते थे। पेड को वे बडे मोह स्नेह से देखने लगते। दोपहरी में उनकी आँखें लग गयी थी। ढोर-डगर भी आम के नीचे जुगाली करते आख झपका रहे थे।

एकाएक पत्थर लगने से पेड के नीचे बधी भैस बिभुक कर रस्सा तुडा भाग खडी हुई। भैस भागने की आहट से उनकी आँखें खुल गयी। भागती भैस को उन्होने पुचकार कर पकडा। टूटे रस्से मे गाठ लगा फिर भस को खूटे से बाध दिया। पत्थर कहा से आया—इसकी टोह लेने लगे। उन्होने देखा उनके प्रतिद्वद्वी शिवचरण का लडका पेड को पत्थर मार रहा है। उन्होने लडके को डाँटा, "ऐऽऽऽऽ! नालायक! पेड को पत्थर क्यो मार रहा है ? दो चार आम चाहिए तो पेड पर चढ कर क्यो नही तोड लेता ? पेड को नुकसान क्यो पहुँचाता है ?" तो लडके ने उन्हे उलटा जवाब दे भडका दिया, "आपको इससे क्या लेना देना ?"

"मुझे क्यो नही लेना-देना ?"

" पेड आपका थोडे ही ?" इतना सुनना था कि उनके तन-बदन मे आग लग गयी। वे लडके से इस बार कडककर बोले, "पेड मेरा या किसी दूसरे का तू यह न्याय करने वाला कौन....? मेरा दिमाग खराब मत कर भागजा नही तो एक ही थप्पड मे सीधा कर दूगा। आया पत्थर मार कर पेड से आम तोडने वाला "

इस पर भी लडका वहा से हिला-चिगा नही। उल्टे उन्हे चुनौती देने लगा, "दीजिए आप मेरे थप्पड ? पेड को पत्थर मार हम आम तोडेंगे तोडेंगे " इस बार वह स्वय पर नियत्रण नही रख सके। दौडकर उन्होने लडके को पकड लिया।

खीच कर एक करारा थप्पड उसके गाल पर रसीद कर दिया। लडका थप्पड की मार से बिलबिलाता उन्हे अपशब्द बकता गाव के लिए भाग लिया। उसके जाने के बाद वह स्वय ही बुदबुदाते रहे, "बदमाश कही के खामखाह दिमाग खराब करने चले आते है! ले!! और तोड आम पत्थर मार कर .। और जीभ लडा ." और फिर वह धीरे-धीरे ठण्डे होने लगे थे। तभी लडके का बाप शिवचरण चिल्लाता उनके पास आ धमका, 'चार जवान लठैत लडके हो गये है तो यह मतलब नही कि .? लडके को ऐसे जोर से मारा है थप्पड लगने की बात सुन वह मन ही मन कुछ कचियाए, "सचमुच गुस्से ही गुस्से मे जोर

सेही पडा था लडके के थप्पड कही साला बहरा न हो जाए ? मुसीबत गले पडेगी " किन्तु शिवचरण उन पर हावी न हो जाए, ऊपर से कडक कर बोले, "क्यो मारा लडके ने पेड को पत्थर ? चोरी और सीना जोरी पत्थर भी मारे ऊपर से बदजबानी भी "

"पर पेड तो सिवाय चक जमीन मे सरकारी आपको पेड क पत्थर मारने का दद क्यो ?"

"पेड सिवाय चक जमीन मे है तो क्या है तो मेरे बाप क हाथ का रोपा हुआ मेरे खेत की मेड के पास इसकी देखभाल तो मैं करता हू "

"करते होगे देखभाल । जमाने को इससे कोई लेना-देना नही । पेड पर सबका हक । कोई कैसे भी पेड से फल तोडे । आपको उस रोकने का क्या हक ?"

पेड से किसी भी तरह फल तोडने की बात सुन वह एकदम से फिर भडक उठे, "तू मुझे उलाहना देने आया है या लडाई करने—पेड के पत्थर मारने वाले की तो मैं टाग तोड दूगा "

"किसी की टाग नही तोडोगे खुद ही खिचे खिचे फिरोगे थाना-कचहरी मे—"

'तो तू मार पेड के पत्थर अभी तमाशा देख " प्रत्युत्तर मे शिवचरण भी चीखने लगा, "अच्छाऽऽऽऽ आपकी ऊपर से यह दादा गिरी और । गलती भी करे आख भी नटेरें देखाता हूँ अब यह पेड यहा कसे रहता है " शिवचरण साप की तरह फुफकारता वहा से चल दिया । शिवचरण को जाते-जाते उन्होने चेतावनी दी 'जाऽऽऽ जाऽऽऽ तुझ जैसे छत्तीस ऐसी धमकी देने वाले देखे ह जिस दिन पेड को किसी ने हाथ भी लगा दिया उस दिन लाशें गिर जाएगी लाशे " शिवचरण दौडा-दौडा उनके जानी दुश्मन लखना के पास पहुँचा । पेड के सिवाय चक जमीन मे होने तथा पेड से उन्हे बेहद लगाव प्रेम होने का राज उसे बता दिया ।

"बाबा ! तेरी भावना-तर्क को मैं समझ रहा हूं। यह बात भी मैं समझ गया हूं कि पेड को काटने का यह विशुद्ध षडयन्त्र है पर मैं इस मामले मे कुछ मदद नही कर सकता मामले को सावजनिक हित का रूप दे दिया गया है। सावजनिक हित के विरुद्ध म कुछ भी नही " परगना अधिकारी का दो टूक निणय सुनकर उनका जी हलक को आ गया। उन्हे लखना का षडयन्त्र सफल होता दीखा। वकील का सहारा छोड अपनी सारी तक बुद्धि को लगाते हुए वह अब खुद ही परगना अधिकारी से तर्क करने लगे, "लेकिन हुजूर ! पक्का खर जा बनाना ही है तो उसे गाव मे ही बनाया जाए। गाव के नगले की तीन मडइयो के लिए गाँव से नगला तक पक्का खर जा बनाने की क्या तुक ? गॉव मे बनने से पक्का खरजा तीन हजार आदमियो के काम आयेगा नगला मे तो ले देकर दस आदमिया की आबादी "

"आपका कहना वाजिब है पर पचायत सावजनिक हित मे कही भी निर्माण काय कराने को स्वतन्त्र मै इस सम्बन्ध मे किसी प्रकार का पचायत पर दबाव नही डाल सकता।" "तो हुजूर ! पक्का खरजा आम के पेड से हटकर मेरे खेत मे होकर निकाल लिया जाय " "मैंने इस मुद्दे पर भी विचार कर लिया है। अगर खरजा आपके खेत से निकलता है। तो इसकी सीधाई की खातिर यह दूसरे के खेत से निकलेगा। दूसरा इस मकसद के लिए अपने खेत से एक इच भी जमीन देने को तैयार नही। यह देखो उसका लिखित विरोध " परगना अधिकारी ने एक कागज उनको दिखाया। उन्हे ध्यान आया—अगला खेत उसी बदमाश शिवचरण का ही तो है। वह खर जा के लिए क्यो देने लगा जमीन अपने खेत से। उसी का तो यह बोया बीज । उनका जी बित्ताभर हो आया। आँखो मे पानी छलक आया। वह फिर परगना अधिकारी से रिरियाने लगे, "इस पेड को तो आपको जीवनदान देना ही होगा हुजूर। यह दया तो आपको करनी ही होगी " और वह अदालत मे परगना अधिकारी के हाथ जोड खडे हो गये। परगना अधिकारी भी उन पर अत्यधिक द्रवित हो आया। उनसे अत्यधिक सहानुभूति जताते बोला, "मेरे बस की बात होती बाबा तो मै आपकी मदद जरूर करता। पर "

परगना अधिकारी से सकारात्मक निर्णय न मिलने से वह बेहद निराश थे। लखना पच बार-बार उनके जहन मे फिरकनी की तरह घूम रहा था। वह होठ चबा-चबा अपने आप कुछ बुदबुदाने लगते थे।

लखना उनके मोहल्ले से पचायत के चुनाव मे पचो के लिए खडा हुआ था। उसके भय-आतक के मारे सभी मोहल्ले वाले उसे वोट देने की हामी भर रहे थे। किन्तु उन्होने दस आदमियो के सामने उसे अपने वोट न देने की बोल सीधी सट्ट लकडी सी तोड दी थी, "तुझे म अपने दस वोट नही दे सकता भैया ! तेरे ऊपर तो दस तरह के कुकर्म करने के बट्टे। मेरा वोट तो हमेशा भले-नेक, सीधे-सच्चे ईमानदार आदमी को ही जाते है ।" लखना फुफकारता वहाँ से चला गया था। उनकी जगह और कोई होता तो लखना उसकी गर्दन ही उमेठ देता, पर उनके चार जवान लठैत लडको के सामने उसकी एक न चल सकती थी। लखना ने उनको नीचा दिखाने तथा अपने अपमान का वैर लेने के लिए ग्राम पचायत के सरपच को पटाया। गाव से, गाव के नगला के लिए पक्का खर जा बनवाने का प्रस्ताव पचायत से पास करा डाला। आम का वह पेड खर जा बनने के रास्ते के बीच मे ही पडता था। पक्का खरजा बनाने के लिए भूमि को चौरस-समतल, अवरोध रहित करने की आड मे वह आम का पेड कट जायेगा। लखना का वैर उनसे चुक जाएगा। पेड कटने के बाद पक्का खरजा बने न बने यह दीगर बात। लखना के डर की वजह से गाव का और कोई व्यक्ति भी इस अनीति के विरुद्ध नही बोल रहा था।

शाम को वह घर पहुँच तो गाव मे लखना डोडी पिटवा रहा था। "कल सुबह आठ बजे कुए के पास सिवाय चक जमीन मे खड आम के पेड को काटा जायेगा। पेड की लकडी की नीलामी की बोली लगाने के इच्छुक व्यक्ति मौके पर उपस्थित हो।" यह सुन शाम का खाना उनसे नही खाया गया। उनका मन बहुत भारी-भारी था। घर वालो के बार-बार आग्रह पर उन्होने जैसे-तैसे एक दो रोटी कण्ठ के नीचे उतारी। फिर जल्दी ही हाथ धो थाली से खडे हो गये। चारो बेटो, घर वालो को बैठक म उन्होने टेर कहा, "पेड यह अपने खेत की मेड से लगा खडा हुआ है। सिवाय चक जमीन मे है तो क्या ? पेड के कानूनी वारिस हम। फिर पेड को मेरे बाप ने रोपा था। मै इस पेड को अपना भाई

मानता हूँ। पिछले वर्ष देशव्यापी अकाल पडा तो इस पेड ने हमारी जान बचाई। इसके फल बेच-बेच हमने गुजर-बसर की। अब भी हम इसके फल खाते है। इसकी शीतल छाया मे हम, हमारे ढोर-डगर बैठते उठते है। यदि इस पेड को सचमुच ही किसी उद्देश्य के लिए काटा जाता तो मुझे कोई एतराज नही था। प्रसन्न होता उल्टा कि मेरा पेड गाव-देश के काम आ रहा था। पर जब इसका दुर्भावनावश कत्ल किया जा रहा है। तब हमे भी इस स्थिति मे जान की बाजी लगाकर इसकी रक्षा करनी होगी।" और वह इतना कह घर के बाहर खटिया पर आ पड।

रात भर खटिया पर करवटे बदलते रहे। उनकी आंखो मे नीद थी कहाँ। कभी-कभी उन्हे झपकी लगती तो उनकी आखो मे वही सघन, हरा कच्च, फलो से लकदक करता आम का पेड आ उतरता। सपने मे उस पर बरसती अनेक कुल्हाडिया उन्हे दीखती। वह भडभडा कर खटिया पर बैठ जाते। बेहद व्याकुल हो उठते। जैसे-तैसे रात बीती। पौ फटते ही वह लुटिया ले दिशा मैदान के लिए चल दिये। हाथ-मुह धो वह घर के अन्दर घुसे। अभी तक अन्धेरा ही था। एक कोठरी से उन्होने अपनी जवानी वाली तेल पिली-पिलाई साभी बधी लाठी निकाली, और लाठी ले वह पेड की तरफ़ चल दिये।

वह खेत की मेड पर, हाथ मे कसकर लाठी पकड सावधान मुद्रा मे बैठ गये। गाव से पेड काटने आने वालो की प्रतीक्षा करने लगे। उनके चारो लडके भी अपनी-अपनी लाठिया सभाल पेड के पास खेत मे पडी झोपडी मे चुपचाप सतर्कतापूर्वक आ बैठे थे।

सूरज काफी चढ आया था। लखना अपने दल-बल सहित पेड काटने आ रहा था। लखना और उसके साथियो के चेहरो पर विजय भरी कुटिल मुस्कान खेल रही थी। शिवचरण भी अपनी मनचीती पूरी होते देख फूला नही समा रहा था। लखना ने दूर से उस सुहाने पेड को देखा तो एक क्षण का वह भी पेड को देखता ही रह गया। उसके मन मे भाव उठे—सचमुच पेड गजब का ही है। कैसा सुन्दर फलदार पेड.... ऐसे पेड को काटा नही जाना चाहिए " लेकिन रामनाथ द्वारा उस दिन दस आदमियो के सामने अपने अपमानित होने की बात उसके दिमाग मे आने पर पेड के प्रति उसके मन के वे भाव कपूर की तरह

पता नही कहा फुर कर उड गये । लखना और उसके साथियो को दख वह लाठी सभाल खडे हो गये । शिवचरण ने उन्हे लक्ष्य कर लखना से कहा, "पच जी ! जा पेड कूँ ठेठ जड मे से ही कटवाए -- आम का ससुर पेड बडा बेशम होवे जरा-सा भी तना जमीन पर रह जावे तो यह फिर उलह आता है" लखना ने भी उसी कुटिलता मे उनको सुना सुना कर कहा—' बिलकुल पण्डत ! इस ससुर आम के पेड कू जड से ही कटवाऊगा- नही तो फिर फूट कर रास्ते मे बाधा खडी करेगा - दुश्मन बीमारी कू जड से ही काटनो चँइए "

अबकी बार उनसे नही सुना गया, "अरे कायरो ! मुझे चुभती सुना सुनाकर मन को यो ही क्या खुश कर रहे हो । मद तब मानू जा पेड को हाथ लगाओ " उनकी कडक आवाज भरी चुनौती से एकबारगी तो सभी सहम गये । लेकिन तभी लखना ने सबकी हिम्मत अफजाई करते बात कही—' देखा पण्डत ! पचायती काम मे भी इनकी यह दादा-गिरी !! " और फिर अपने साथियो से कहने लगा, "काटो रे काटो देखे । यह क्या करते है ? इस पर लखना के एक सगी न जोश मे, आम के पेड के कुल्हाडी मार ही दी । उसन पड को कुल्हाडी क्या मारी रामनाथ को लगा जैसे कुल्हाडी उनके बदन मे लगी हो । वह अपना आपा खो बैठे । पेड को कुल्हाडी मारने के जवाब म उन्होंने उस आदमी के सिर मे कसकर अपनी लाठी मारी । आदमी लाठी के एक ही प्रहार से चक्कर घिन्नी खा जमीन पर ढह गया । उसका जमीन पर पडना था कि लखना के दो तीन आदमी उन पर झपटे । उन्हाने एक साथ रामनाथ पर लाठियाँ बरसा दी । बनटी खेले हुए हाथ थ उनके । वे दुश्मना का अपनी लाठी पर वार झेलने-बचाने लग । झोपडी म छिपे बैठे उनके लडको ने यह देखा तो वे घायल शेर की तरह झोपडी से लखना के गिरोह पर टूट पडे । उन्होने लखना के गिरोह पर लाठिया की बौछार कर दी । लखना के आदमी घायल—चुटियाने लग । तभी लखना के एक आदमी ने घात लगा रामनाथ के सिर पर दो-तीन लाठी मारी । उनके सिर की बधोनी खुल गयी थी । पहली दूसरी लाठी से तो वे डगमगा नही पाये - किन्तु तीसरी लाठी पर व जमीन पर गिर पडे । तीनो ही लाठियो की उनके सिर मे गहरी चाट थी । उनके सिर से भर भर खून निकल पडा । इधर लखना के गिरोह से भिडन मे लगे

उनके लडको को उनके गिरने का भान ही नही था। रामनाथ के लडको को लाठियो की मार से लखना के गिरोह मे भगदड मच गयी। लखना और शिवचरण तो कभी के ही मौका पा वहाँ से खिसक लिये थे। जब लखना और उसका कोई गिरोह वाला लडको को नही दीखा तो तब उनकी नजर रामनाथ पर गयी। अब तक उनके सिर से काफी खून निकल चुका था। लडके उन्हे खटिया पर डाल झट-पट घर लाये। खटिया पर आँगन मे खडे नीम के नीचे उन्हे लिटा दिया। रामनाथ के अडौसी-पडौसी इकट्ठे हो आये थे। उनकी सगीन हालत देख सभी कह रहे थे, "अरे भाइयो ! इन्हे जल्दी ही गाडी तैयार कर अस्पताल ले चलो कही ऐसा नही हो कि ?" उधर रामनाथ अर्द्धचेतन अवस्था मे भी कहे जा रहे, "अरे देखो ! पेड कट नहीं जाय कट नही जाए, पेड मेरा भाई पेड मेरा भाई "

□





उसने ग्रन्दर के कमरे से नीलिमा को ग्रावाज लगाई। कोई प्रत्युत्तर नही मिला तो वह कमरे के बाहर निकला। रसोईघर की ग्रोर मुह कर जोर से कहने लगा, "नीलू मैं खान पर चल रहा हूँ। रात को शायद नही लौट पाऊ।" ग्रौर बिना उसकी किसी प्रतिक्रिया की

नीलिमा को लगता है ग्राजकल वह उससे उखडा-उखडा-सा रहता है। बनावटी प्रेम उडेलता है ग्रपने व्यवहार मे। चिकनी चुपडी बाते करता है। ग्रतसको वह पहले वाली निश्छल महमहाती गध नही दिखती उसके प्रेम में ग्राजकल। लगता है जैसे वह मात्र ग्रौपचारिकता का ही निर्वाह कर रहा हो। घर में ग्राते ही चौबीस घटे व्यस्तता भागमभाग का नाटक रचता रहता है।

प्रतीक्षा किए वह बैडरूम, ड्राइगरूम को लाघता हुआ कोठी के बाहरी दालान मे पहुँचा। नीलिमा ने रसोईघर मे उसकी आवाज सुनी तो वह रसोई को ज्यो की त्यो छोड उसके पीछे दौड सी गई। उसे आवाज लगाई, 'सुनिए तो ।" उसकी आवाज सुन वह वही ठिटक गया। प्रश्नवाचक सी मुद्रा मे उसे घूरने लगा। जब वह उसके बिल्कुल करीब आ गई तो अत्यधिक कडुआती हुई उस पर बिफर पडी, "यह घर है या भटियार खाना आए रोटी खाई चल दिए किसी से कुछ पूछ न ताछ जैसे यहाँ सब मर गए है काई है ही नही चौबीस घटे सिर पर बस खान ही खान का भूत सवार – कुली-मजदूर के इतजाम की बात भाड मे जाए तुम्हारी खान मजदूर कुली हाँ, तो जो "

प्रत्युत्तर मे उसने एक नम सा कथन उछाला, "ताव मत खाओ यार। क्या करू यह स्साला धधा ही ऐसा है। चौबीस घटे जुटा रहना पडता है। निगरानी मे जरा सी चूक हुई कि माल यारो का "

"माल यारो का हो या दुश्मनो का मुझे कुछ लेना देना नही। म तुम्हे आज खान पर किसी भी कीमत पर नही जाने दूगी। जरा भी ख्याल नही आता है तुम्हे अपनी छोटी-सी बच्ची बीबी का "

"ख्याल तो सबका ही है। लेकिन धधे की अपनी मजबूरी है। नये पिट पर काम चालू करवा रखा है। सैकडो कुली-मजदूर लगे हैं। झडाई का काम तेजी पर है। उनकी छाती पर न जमू तो "

"रहने दीजिए। मुझे बताइए मत। रात मे भी आप वहाँ ठहरते है। रात मे भी झडाई का काम होता है?"

"अरे भई, रात मे झडाई नही होती यह दीगर बात है। लेकिन रात को वहा ठहर जाता हूँ तो सुबह जल्दी काम चालू हो जाता है। यदि यहा से जाकर काम चालू करवाऊँ तो कम से कम दो घटे की ढील तो समझो ही समझो।"

"कुछ भी हो म तुम्हे आज नही जाने दूगी। मेरी जिद है।"

वह असमंज भरी स्थिति मे नाखन कुरतने लगा। फिर बोलो में चासनी-सी घोलता हुआ उसे समझाने लगा, "आज झड़ाई का काम अंतिम दौर मे है। यदि आज काम बंद रहा तो समझो काम दस दिन पीछे ढिकल गया। अभी मुझे जाने दो। हाँ, रात को वहाँ किसी भी कीमत पर नही रुकूगा। रात को जरूर-जरूर घर आऊँगा।"

उसके वाक्य ने अपना असर बताया। उसके तेवर ढीले पड़े।

"अगर नही आए तो ?"

"प्रोमिज।"

"ठीक है जाइए।"

वह पिण्ड छुड़ाने की तरह, बिना पीछे देखे दनदनाता हुआ कोठी के गट पर खडी ड्यूक कार मे जा बैठा। और कार फर्राटे भरने लगी। वह बरामदे मे खडी खडी बहुत देर तक कार से उठते गर्द गुबार को अपलक देखती रही।

× × ×

नीलिमा को लगता है आजकल वह उससे उखडा-उखडा-सा रहता है। बनावटी प्रम उडेलता है अपने व्यवहार मे। चिकनी चुपडी बाते करता है। अतसको वह पहले वाली निश्छल महमहाती गध नही दीखती उसके प्रेम मे आजकल। लगता है जैसे वह मात्र औपचारिकता का ही निर्वाह कर रहा हो। घर मे आते ही चौबीस घटे व्यस्तता भागमभाग का नाटक रचता रहता है। घर मानो उसके लिए ततयो का छत्ता हो। कई कई दिनो तक खानो से लौटता ही नही। राते भी वह वही गुजार दता है। कभी भूले-भटके रात बिरात को आ भी जाए तो क्या ? उसका आना, न आना बराबर। नई-नई लगी शराब की लत से गधाता शरीर लिए गिर पडते आता है। आते ही पलग पर बेहोश सा पड जाता है। मन उससे बातें करने को कितना ही तरसे उसको बला से। उसको

ज्यादा ही कौचा कौची करो तो टका-सा जवाब दे सारा उत्साह, उमग को हवा कर देता है, "बहुत थका हूँ यार। मन आज ठीक नही।" सारे मीठे क्षण निरथक, सारहीन, बेमतलब से लगने लगते है। वह प्यासी मछली सी तडफती रह जाती है ठेठ दरिया के किनार रहते हुए भी।

पहले वह ऐसा नही था। अजब अनुराग चहचहाता रहता था आँखो मे उसके लिए। एक पल के लिए भी परछाई की तरह अपन से अलग नही होने देता था। कभी दो-चार दिन के लिए पीहर चली जाती थी तो वह फट फट पडता था, "खुद तो अपने पापा ममी के पास मस्ती मारती हो। मै यहा जला करता हूँ तुम्हारे वियोग मे दिए पर पतगे की तरह।" उसके ऐसे वाक्य सुन वह अन्तर से हुलस हुलस पडती थी फूली मेहदी की तरह। लेकिन बाबूजी की मृत्यु के बाद जबसे उसने खानो का काम सभाला है, वे आकठ गीले क्षण स्वप्न की बात हो गए है। उसके मन मे अनेक शकाए भनभना पडती है। अनेक सदेहो के काफिले अपना भडा-तम्बू आ गाडते ह। तीव्र बदबू की तरह इद-गिर्द मडराती फुसफुसाहटे जहन मे घनघना पडती है। कई कई खान वालो को तो बीबी की जरूरत ही नही पडती।

एक चिन्ता दबोच लेती है—कही कोमल भी तो इस ऐब का शिकार नही हो गया हो ? नही तो इस युवावस्था मे भी उसके प्रति आलपिन की तरह गहरा सालता उसका यह बैरागीपन

लेकिन दूसरे ही क्षण उसमे दूसरे भाव आ उगते ह—कोमल एसा नही हो सकता। भला वह एसा होगा भी क्यो ? उसम क्या कमी है जा वह इधर उधर भटकेगा ? वह पढा लिखा समझदार भी। अपनी इज्जत आबरू को समझता ह। इधर उधर भटक क्या अपनी इज्जत पर कालिख पोतेगा ? नही नही वह ऐसा नही हा सकता। शायद काम की व्यस्तता के कारण वह ऐसा हो गया है।

× × ×

बहुत दिना बाद कोमल आज रात घर रहगा—यह साचते हुए वह बहद खुश हो रही थी। उसकी सेवा, सत्कार म वह जुट गई थी। रसाई

से महाराज को हटा स्वय ही उसके लिए स्वादिष्ट, रुचिकर व्यजन बनाने बैठ गई थी। यादकर कर उसकी रुचि के व्यजन तैयार करती रही। पूरी अपनी पाक कला लगादी उसने तरह तरह के पकवान-व्यजन तैयार करने मे। भोजन से निपट उसने शृगार भी जच के किया। अच्छा सा मेक अप कर शिफान की साडी पहनी। उससे मेल खाता ब्लाउज। गले मे नेकलेस और कानो मे चमचमाते टाप्स। आइने मे स्वय की तस्वीर देखी तो खुद ही रीझ पडी अपने दिपदिपाते रूप पर।

नीचे से महाराज से खाना उठवा कर कोठी की दूसरी मजिल पर ले गई। प्रियतम की पलक पावडे बिछा प्रतीक्षा करने लगी। बडी चौ-चीती हो बैठी थी वह उसकी वाट मे। नीचे कोठी मे किसी वाहन की आने जाने की आहट होती तो लपक कर वह खिडकी से जा लगती। जब उसकी जगह कोई और होता तो वह बुझी-बुझी सी हो जाती। कई घटो तक भी प्रतीक्षा करने के बाद वह नही आया तो वह काफी निराश, हताश हो गई। पलग पर जा पडी—मन बैचेन हो डोलने लगा। मन के आकाश मे फिर बुरी बुरी शकाओ की चीले मडराने लगी। इसी उधेडबुन मे उस दिन की बात उसकी आखो मे सिनेमा के रील की तरह सरने लगी

वह कोमल के साथ उस दिन खाने देख रही थी। कोई खान चौडे तालाब की तरह कम गहरी थी तो कोई चौडे मुंह वाली बावडी की तरह काफी औडी। खानो से निकले मलवा के ढेर जमीन पर पहाड जैसे दीखते थे। खानो, मलबो के ढेरो के बीच मजदूर ही मजदूर कुलबुला रहे थे। कोई मजदूर मलवा उठा रहा था तो कोई नीचे से ला रहा था। कोई पत्थर काटते कारीगर की मदद कर रहा था। यह सब देखने के साथ-साथ वह कनखियो से सभी, मजदूरा और मेट के बीच आँखें बचाकर चल रही हसी, ठिठोली, छेडछाड की हरकतें भी देखती रही। मट छाट-छाट कर रखी गई मजदूरिनो से हल्का-फुल्का काम लेकर कुछ रियायत-सी देते दिखाई पडते थे। उन के अधखुले सीनो की सवलाई गोलाइया को देख-देख मटो की आँखो मे तेज गधक की सी लौ उठती दिखाई पडती थी।

"नीलू। मैं उधर पिट पर हो रहे काम का देख आता हूँ तुम तब तक इधर ही घूमो-फिरो।" कोमल उससे बोला था।

"मैं भी चलती हूँ आपके साथ।"

"नही नही तुम क्या करोगी ? उधर जगह ऊबड खाबड है। तुम्हे चलने मे परेशानी होगी।"

वह वही रह गई। कोमल चला गया। बहुत समय के बाद भी कोमल नही लौटा तो वह भी उसी तरफ चल दी। वह कुछ दूर चल पाई थी कि उसे खानो के मलवे के ढेर के पास एकान्त मे कोमल एक खूबसूरत लडकी के साथ आता दिखाई दिया। उसको देख कोमल चौंका अचकचाकर बोला "तुम क्यो आई ? मैं तो आ ही रहा था आओ चले" और लडकी को हल्का डाटते हुए बोला, "तुम मेरे पीछे पीछे क्यो....? ....जाओ अपना काम करो।"

× × ×

घडी ने एकाएक बाहर के घटे बजाए। उसके मुह से सहसा निकल पडा—बारह भी बज गए लेकिन अब भी वह नही आया। जरूर ही वह वहा पर किसी मजदूरिन से..., वे भी तो वही रहती है। नही तो ऐसा भी क्या काम कि पत्नी इस तरह तरसे ? एक अजीब तडप, बैचेनी, आग ने उसे अत्यधिक विचलित कर दिया। वह स्वय पर काबू नही रख पा रही थी। वह तेज कदमो से कोठी से नीचे उतरी। चौकीदार को बुलाया, "गर्मी लग रही है। दो बाल्टी पानी ऊपर डाल आओ।"

एयर कडीशड कमरे मे गर्मी लगने की बात सुन चौकीदार को अचम्भा लगा। बतौर स्पष्टीकरण वह विनम्रता से बोला, "क्या करू मम साब ?"

वह वात को सभालती हुई दुवारा बोली, "अरेभई, जी आज कुछ ऐसा ही है। नहाऊगी। ऊपर की टकी मे पानी नही। नीचे से दो वाल्टी पानी ऊपर डाल आओ।"

युवा चौकीदार एक ही बार मे पानी से भरी दो बाल्टी उठा मचर-मचर करता कोठी के ऊपर ले गया। वाल्टियो का पानी टकी में उडेल वह वापस आने लगा तो उसने चौकीदार को रोक लिया "शाम को तुमने खाना खाया ?"

"नही मैम साव। सुवह ही बनाया था। शाम को आलस कर गया।" "तो लो खालो।"

"नही—नही मैम साव। सुवह ही खाऊगा।"

"नही—नही तुम्हे खाना पडेगा। मेरे घर पर कोई भूखा सोये यह ठीक वात नही।"

चौकीदार के लाख मना करने पर भी उसने उसके सामने खाना परोस दिया। चौकीदार अपने आप मे सिकुडता हुआ बार-बार मना करता रहा, "नही मैमसाब नही मैमसाव—" लेकिन उसका आग्रह ज्यो का त्यो बना रहा। चौकीदार ने अत्यधिक सकुचाते जैसे तैसे खाना निगला।

"भूख मिटी तुम्हारी ?" उसने चौकीदार से पूछा।

चौकीदार खाना खाने के बोझ से अत्यधिक दवते हुए मिमियाया, "जी मम साव।"

"चलूं मेम साव।" वह उठते हुए बोला। तो उसने चौकीदार का हाथ पकड लिया, "तुम्हारी भूख तो मिट गई पर— मेरी भूख—" यह सुन उसकी आंखे कपाल से जा लगी। उसे अपने पैरो से जमीन खिसकती जान पडी। वह बेहद घवराया, "आप क्या कह रही हैं मैम साब ?"

तो दूसरे ही क्षण चोकीदार को वह चडी सी लगी।

"अगर तूने इकड-तिकड की तो "

"मुझ गरीब को बख्शो। मैं मारा जाऊंगा मम साब " चोकीदार घिघियाया।

"और किसी बात की तू चिन्ता मत कर मैं सब ठीक कर लूंगी। मैं जो कहती हूँ सो कर. हां, अगर तूने मेरी बात नही मानी तो .."

यह कह कर उन्मादिनी-सी होती हुई उससे लिपट गई। उस अपनी बाहों मे कसकर भीच लिया। वह पोर पोर से दहक रही थी अगारे की तरह।

□





दिन भर का थका सूरज पहाड़ की ओट विश्राम करने जा रहा था। उसकी लालिमा धीरे-धीरे सँवलाने लगी थी। गोधूलि की गर्द क्षितिज मे मडरा रही थी।

"तू स्साली ऐसे घर से नही निकलेगी " रामचन्द्र विमला का हाथ पकड उसे खीचने लगता है "नही रे नही रे " विमला रोदन करने लगती है। घर की देहरी से पैर अडा देती है। रामचन्द्र से खिचने मे नही आती।

"तू स्साली कुतिया ऐसे नही निकलेगी " रामचन्द्र पौरी के कौने मे रखी छडी विमला पर दे मारता है। विमला बचाव के लिए अपना हाथ ऊपर करती है। छडी उसकी कलाई पर पडती है।

उसका तीखा जवाब सुन रामचन्द्र तनतना गया "तेरी तो स्साली हरामजादी . ठहर ऽऽऽऽ " वह उसे मारने को खडा हुआ। लेकिन फिर उठकर डगमगाने लगा। वह वही बैठ उसे कुफरान बकने लगा स्साली छिनाल ! तेरा मगज बहुत चढ गया है मुझसे जबान लडाती है— दारू को बोलती है जरा नशा ठडाने दे तब चखाता हूँ तुझे मजा, बद-जबान बोलने का "

"हा हा क्यो नही चखाएगा मजा औरत को तो मजा चखाना मरते-मरते तेरे मा-बाप भी तुझे सिखा गए है " 'कुतिया ! स्साली तू मेरे सुरग मे बठे मा-बाप तक भी पहुँचने लगी ठीक है ठीक है तू अब औरत नही रही . मेरा खसम हो रही करता हूँ तेरा इतजाम इसी पठ मे "

पैठ की बात सुन वह डर गई। उसका जी बित्ताभर हो आया— क्या-क्या बक गई इस मुए को गुस्से ही गुस्से मे आजकल इस बेईमान का कोई ठिकाना नही चौबीस घटे नशे मे रहता है नशे मे विवेक-बुद्धि कहा आदमी कर गुजरे सो ठीक वैसे भी मुआ यह अब कहाँ रखता है उससे पहले कीसी मोह-प्रीति दूर-दूर रहता है नासपीटा नदी की धार से किनारो की तरह आजकल—

रामचन्द्र के गुस्से को ठडाने विमला झट भात बना उसके पास ले गई। पानी का लोटा भी उसके हाथ मे था। लोटा और भात की देगची को एक तरफ रख वह पौरी मे रखी ढिबरी जलाने लगी। फिर पडे हुए रामचन्द्र का हाथ पकड उठाने लगी "ले भात खाले— दिन भर की भूखी थी सो ऐसे ही निकल गई कडवी बात मुँह से " रामचन्द्र ने अपना हाथ उससे झटक लिया 'खबरदार जो अब मुझे हाथ लगाया तो ! ! स्साली सूकरी जूता मार पोतती है नही कुछ खाना अब तेरे हाथ का "

विमला उसकी खुशामद करने लगी "अरे खाले रे कसम मॉ-बाप की जो अब तुझे एक शब्द भी कडवा बोलू " रामचन्द्र ने फिर अपना हाथ उससे झटक लिया "बोला न कुतिया अब मुझे तेरे हाथ का कुछ नही खाना इस भात को अपने किसी यार को खिला " और उसने पडे-पडे ही भात की देगची को कसकर लात मारी। भात घर की मोरी मे फैल

गया। विमला ने फिर भी उसे खूब मनाया। पर रामचन्द्र मनने म नही आया। विवश हो वह भी दिन भर की भूखी बच्चे को छाती से चिपटाए घर में एक तरफ पड गई। वैसे भी घर में अब और कुछ खाने-पकाने को नही था।

बजरैंडी गाव की पैठ खूब जम कर भर रही है। बहुत भीड है इस हाट मे। यह पठ इस आदिवासी इलाके की बडी हाट कहलाती है। कारण महासक्रान्ति के त्योहार से ठीक एक दिन पहले भरती है। आदिवासियो के गले तन इस समय धान की फसल भी आ जाती है। उनका घर व अन्टी धान-धन से गर्म रहते है—इसलिए वे इस हाट मे खूब खरीददारी करते हैं—इसी कारण यह बडी पैठ कहलाती है—दूसरी तरह की भी खरीद-फरोख्त इसी हाट मे अक्सर होती है। हाट में तरह-तरह के सामानों की दूर-दूर से दुकानें आती है। हाट मे रग-बिरगी पोशाको में नर-नारी ही नर-नारी तिरा रहे हैं। पठ मे पाण्डूरग अपने विश्वस्त साथियो, खरीददारो के साथ घूम रहा है। और किसी के चेहरे पर इस समय रौनक देखने को को भले ही नही मिले पर पाण्डूरग के चेहरे पर बेशुमार रौनक है। वह अपने विशेष लिबास, चाल-ढाल से दूर से ही पहचानने मे आ जाता है—बडी-बडी आखे हमेशा सरूर मे डूबी। सिल्क का कुर्त्ता टेरीकाट की धोती। गले मे सोने की जजीर। हाथ मे सुनहरी घडी। ऊँगलियो में सोने चाँदी की नग जडी अँगूठियाँ। पान का बीडा चाबता हुआ। पाण्डूरग घूमते-घूमते रामचन्द्र के घर आता है। रामचन्द्र इस गाव का रुतबे वाला आदमी है आदिवासियो मे। सो वह रामचन्द्र के मख्खन लगाता है—उसे ऊँचा उठाता है। क्या हो रहा रामचन्द्र पाटिल?" रामचन्द्र जाति से पाटिल नही। "कुछ नही पाडूरग सेठ! ऐसे ही बठा हुआ" रामचन्द्र हाथ मे लगी बीडी का जोर से सुट्टा लगाता है।

"तो चले हाट मे— कुछ काम काज' कँधे पर पडी रेशमी शाल को पाडूरग ठीक करता है।

"चलता हूँ सेठ पर पहले मेरी सुनलो!"

"बोलो पाटिल!"

"यार विमला को बेचना चाहता"

"क्यो ? अभी तो वह बहुत अच्छी " पाडूरग के माथे पर यह सुन सल पडते है।

"नही यार— अब वह बच्चे वाली हो गई फिर स्साली का आजकल मिजाज भी बहुत कडवा " फिर वह अपना मुँह पाडूरग के कान के पास ले जा फुसफुसाता है। "यार अब इससे मन भर गया। उस दिन हाट मे जबसे तलपोडे के नारायण की लडकी को देखा है तबसे दिल उसी पर। इसे बेचकर सौ-पचास और गाठ से मिला उसे खरीद लूगा—"

"ऐसी बात है तो बिकवा दूगा।"

"—दूँगा नही— मुझे विमला को इसी हाट मे बेचना .."

"पर अभी तो मेरे पास कोई लोकल ग्राहक नही। ये परदेशी हैं पर ये रहने वाले इधर के ही। नही तो तुम कहने लगो—मेरी औरत को गैर आदिवासी मे बिकवा दिया। "

"ये अब कहाँ रहते है ?"

"यही अपने सूबे की सरहद पर " और वह रामचन्द्र की ओर से मुँह फेर अपने साथी दो परदेशियो की ओर आख मिचकाता है।

"क्यो ! परदेशियो ! तुम्हारे पुरखे इधर कही के ही थे न ?"

"हाँ सेठ ! इधर की अगरबाडी के ही तो थे।"

"ठीक अ अ अ अ" रामचन्द्र पाण्डूरग की तरफ मुखातिब हुआ "बेच दूँगा विमला को इन्हे ही " और अपने हाथ मे जल रही बीडी को जमीन पर फेंक जूते से रगड दिया।

"तो तुम्ही सीधी बात करलो इनसे पाटिल ! विमला की कीमत तुम्हे कुछ कम बढ मिली तो कहोगे, पाण्डूरग यार के माल पर भी दलाली खा गया "

"नही सेठ ! मैं ऐसा नही सोचता धधे मे यारी दोस्ती नही चलती। वा भइयन लोग यू० पी० म कहावत बोलता है न "भटियारिन

मुसाफिर से यारी करेगी तो खाएगी क्या खसम के हाड खैर तुम चाहते हो तो मैं ही कर लेता हूँ इनसे बात "

"हाँ भाई माल लेना चाहते हो ?" रामचन्द्र पाण्डूरग के साथ लगे दो परदेशियों से बोला।

"क्यो नही पाटिल ! माल के लिए ही तो हम घूमते हैं।"

"तो देख लो उस औरत को ," घर के आगन मे सकरे बतन माजती विमला की ओर उसने परदेशियो को सकेत किया। परदेशी विमला को देखते ही ठगे से रह गये। बडी मुश्किल से विमला से उनकी निगाह हटी "ले लेंगे पाटिल ! इसके कुल ,गोत ?"

" आदिवासी लगाट।"

"उम्र ?"

"यही छब्बीस , सत्ताईस साल ."

"बोलचाल , मतलब हकलाती— तुतलाती तो नही ?"

"नही सीधी-साफ बोलती "

"चार सौ मे नही बेचनी।"

"देखो रामचन्द्र राव ! इस महराऊ को हम अपने घर के लिए ले जा रहे है कही बेचना होता तो दस बीस रुपये ज्यादा दे देते "

"अच्छा चलो सवा चारसौ मे तोडकरो " पाण्डूरग बीच मे अपना निणय देता है।

"सेठ का बात नही टाल सकता " परदेशी रामचन्द्र को अपनी स्वीकृति देते हैं।

"बच्चे के बारे मे—?" रामचन्द्र पाण्डूरग से पूछता है।

"रिवाज के मुताबिक सात साल तक उसे पालने की जिम्मेदारी विमला की। उसके बाद बच्चा तुम्हारे पास मेरी गारटी—"

पाण्डूरग रामचन्द्र से कहता है। फिर परदेशियो की ग्रोर मुखातिब होता है "तो हो जाय पहला सौदा पटने की खुशी मे "

"क्यो नही सेठ ! "

रामचन्द्र झटपट ताजी कढी ताडी की बोतल ले आता है।

द्वार पर ग्रजनबियो तथा पाण्डूरग को देख विमला को दाल मे काला नजर ग्राने लगा था। वह किवाड की ग्राड मे खडी हो, बाहर हो रही बाते सुन रही थी। ग्रपने बिकने की बात उसने सुनी तो वह धक्क सी रह गई। ग्रपना होश-हवाश भूलने लगी। ग्रब क्या होगा ? कहा ले जायेगे उसे ? किस घाट उतारें—? भाऊ गोविन्द उसे बता रहा था—पाण्डूरग इधर की ग्रौरतो को बाहर तिडीपार करा देता है। ग्रादिवासियो मे ग्रापस मे ग्रौरते खरीदने-बेचने की कुप्रथा का वह भरपूर लाभ उठाता है। बाहर के ग्रादमियो को वह ग्रादिवासी बता उन्हे इधर की ग्रौरतें बिकवा देता है। ग्रौर उनके जरिये ग्रन्य जगह। कोठो चकलो मे भी बैठा देता है। इस इलाके की रतनीताई को पाण्डूरग ने ऐसे ही ग्रादमियो को ग्रादिवासी बता बिकवा दिया था तथा उनके जरिये कोठे पर। जब पुलिस ने कोठे पर छापा मारा तब ग्रसलियत का पता लगा। लेकिन पाण्डूरग ने सब दबवा दिया। उसकी पहुँच ठेठ प्रदेश की राजधानी तक है।

भय-विकलता ग्रवसाद मे विमला पोर-पोर डूब ग्राई—कितना-कितना चाहा है उसने एक सद्गृहस्थ की तरह एक ही ग्रादमी के साथ ग्रपना जीवन सफर तय करदे। जगह-जगह बिकने-खरीदने का वह शिकार न बने। पर कहा पूरी हो पाई है उसकी चाहत। वह ग्रादमी के लट्ठ-पसे के जोर से एक खूटे से दूसर खूटे पर जोर जबरदस्ती से डोरी-डुराई जाती रही है। इस डुरने-डुराने के दौरान जहा-जहा भी उसने ग्रपने स्थायित्व की क्षीण सी भी सभावना देखी है। वह जगह पाने-कब्जाने की उसमें कितनी हूक-व्यग्रता, ललक रही है। पर स्थायित्व पाने की उम्मीद की चिडी हाथ ग्राते-ग्राते फुर-फुर उडती दूर ही दूर रही है—कभी इस डाल कभी उस डाल। रामचन्द्र के यहा ग्राकर उसमें ग्राशा जगी थी कि वह उसका जीवन भर साथ देगा। पर यहा

चीज उन्हे ला थमाई। विमला के लाख हाथ-पैर मारने के बावजूद जबरदस्ती उन्होने बसकरी श्रौर उसकी नाक पर रखदी। कुछ ही देर बाद में विमला ने हाथ पैर फैला दिए। विमला के पास ही दहाड मार कर रो रहा उसका बच्चा भी वह चीज सुंघा देने से बेहाश हो गया। विमला श्रौर उसके बच्चे को परदेशियो ने गाडी मे पटक लिया।

धूल भरा दगरा ठेठ नाक के सुघ स्टेशन को गया था। गाडी मे विमला, उसका बच्चा दोनो परदेशी श्रौर गाडीवान। गाडी धीरे-धीरे चलती है तो उसे गति देने के लिए गाडीवान बैलो को पैनियाँ मारता हैं। टिटकारी मारता है। बैल दुलत्ती मार भागते है। धूल की मोटी मोटी परते उठ रही हैं गाडी के इर्द गिर्द। बैलो की गदन मे बँधे झुनझुने श्रौर भी जोर जोर से घनन घनन बजने लगते हैं। एक परदेशी गाडीवान को टोक्ता है "श्ररे धीरे-धीरे हाँक भाई बैलो को हमे टेसन पहुँचने की जल्दी नही—" दूसरा परदेशी बुदबुदाता है "टेसन जल्दी पहुँचने मे बीस खतरे यह होश मे श्राजाय चीखे चिल्लाए हमारी श्राफत खडी कर दे, गैल-घाट के स्साले बीस बवाल हालाकि पाण्डूरग सेठ ने दीवान दरोगा से लेकर बडे-बडे ठिकाने साध रखे है पर श्रोट श्राड तो रखनी ही पडेगी। श्रँधेरे मे टेसन पहुँचने पर खतरा कम। उस टैम हमारी तरफ जाने वाली गाडी श्राती है। इसको गाडी से उतार सीधे टिरेन मे। टिरेन म पहुँचने पर तो यह हमारी हमारे बाप की। बहुत श्रादमी होते है हमारे उस गाडी मे"

गाडी मे पडी विमला का चेत श्रा गया है। पर बच्च को नही। उसन परदेशी की बुदबुदाहट सुनली है। वह श्रपने बचाव की तरकीबें सोचती है—स्टेशन पहुँचने पर वह जरूर श्रपनी मदद के लिए लोगो से गुहार करेगी। चीखगी-चिल्लाएगी। पर कही इन राक्षसो ने उसका मुँह ही बद कर दिया तो ? वह श्रत्यधिक बेचैन हो उठती है—उसका मन होता है। वह इस चलती गाडी मे से ही कूद भाग जाय। लेकिन कैसे ? ये मुस्टडे दरिन्दे इनकी मदद के लिए गाडीवान भी उसके श्राडे श्रा सकता ह। फिर बच्चे को लेकर वह भागेगी भी कैसे ? तो फिर वह रास्ते मे श्राने जाने वालो से श्रपनी रक्षा की गुहार करे। लेकिन इस गैल मे भी तो निहग सन्नाटा। न चिडी चहके न बाज फडके वह स्वय को बेहद विवश, श्रसहाय निरीह महसूसती है। करे भी

तो क्या करे इन राक्षसो के कब्जे के छूट भागने का कोई भी तो उपाय नही।

काफी देर तक एक ही करवट लेटे रहने से उसकी पसलिया पिराने लगी है। करवट बदली तो एक गाँठ उसकी पसली मे चुभी। उसे याद आया—गाठ मे हल्दी कुमकुम है। आज महासक्रान्ति का त्यौहार जो है। यहा रामचन्द्र के यहाँ आकर उसमे आशा जगी थी कि वह उसका आजीवन साथ निभाएगा। और कोई ठिकाना सेहने की नौबत नहीं आएगी। सो इस आश उमग से उसने अपनी जोडी की मगल कामना के लिए आज इस महापव पर व्रत रखने की सोची थी। कुम्हार के यहाँ से लाई 'सकरात' को गुड-तिल से पूज पाँच सधवाओ से अपनी जोडी के मगल के लिए उनके अशीष लेने थे सीता चा ओ ओ सा रामचा ओ ओ सा.... जलम जोडा ओ ओ सा (सीता के होओ, राम की होओ, जन्म जन्मातर जोडी बनी रहे) बदले मे उन्हे हल्दी कुमकुम लगा तिल गुड देना था। पर अब तो वह सपना ही बिखर गया। रामचन्द्र भी पूव जालिमो जैसा निकला। अब किसकी जोडी कैसी जोडी—अब तो कुछ और ही

बगल मे पडे बच्चे पर उसकी निगाह जाती है—उसके साथ इस अभागे की भी तकदीर मे पता नही क्या ? यह भी खरड की तरह उसके साथ पता नही कहा-कहा ठोकर खाता फिरेगा ? हो सकता है ये भेडिए बच्चे को उससे अलग भी करदें। वह अत्यधिक मोहाश्रित हो आती है। बच्चे को छाती से चिपटा लेती है। उसका हिया फट फट पड रहा है। छाती फाड रुलाई फूट पडती है उसकी आखो से—विठ्ठल अब पता नही और भी क्या दिखाना चाहता रुक नही पारही है उसकी रुलाई चादर मे ।

6

रोशनी की शहतीरें

आकाश छूते बरगद की फुनगी पर पूनो का चंद्रमा कांसे की गोल थाली की तरह उगकर बैठा था। चांदनी बर्फ के श्वेत फोहो की तरह कच्चे घरो की छत पर मुडगटियो तक लबालब हो,बेतहाशा खिलखिला रही थी, और इस खिलखिलाती चांदनी की तरह खिलखिला रहा था

'मारा गया हुजूर बचाओ माई बाप " इस तरह उसे पैरो में गिरते, कज्जा उसे विस्मित सा देखने लगा। कज्जा की आवाज कोठरी के बाहर न जाय अत उसने कोठरी के किवाड बद कर लिए। दात पीसता माग्या से कहने लगा "माल को तो अभी तक लाया नही हरामी, ऊपर से यह ड्रामा क्या करने लगा?" बडी मुश्किल से माग्या के मुंह से बोल फूटे "गगा किसी के सग फरार हो गई सरकार "

गया ' और फिर फुसफुसाते अपने कथन मे ये शब्द भी जोड दिए माग्या और उसके खास-खास आदमियो को कूकडा (मुर्गा) पलेन की दावत भी "

दैन दायज को देख-देख औरत आदमियो की आखे फटी-फटी जा रही थी 'आज तक इतनी लडकियो की नथउतराई हुई पर किसी की मे भी इतना दैन दायज नही आया। सारे गाव को बुलाकर नुकती-पूडी की दावत तो किसी ने भी नही दी। भगवान सबको ऐसी ही ना'ही बख्शे .. गगा बडी भागवान...." गगा के लिए प्रशसात्मक टिप्पणियाँ सुनसुन उसके बाप मांग्या का जीण-शीण सीना मारे दप के दो दो मुट्ठी ऊपर उठ-उठ पड रहा था 'इतना दैन दायज आया है तो कॉई हो ग्यो . छोरी रूपाडी भी तो कितनी ' माग्या का साथी सुमेरा उसकी बात का समथन कर रहा था 'दादा गलत थोडे कह रहा। छोरी गगा जैसी कद कॉठो रूप-रग वालो ऐसी और दूसरी छोरी आसपास कहा ताजा'लूणी घी जैसी उसकी गुदाज-भरी देह। केसर सा रग। हिरणी की सी उसकी बडी बडी आखे। सुआ की सी नाक। बटुआ सा मुह। छोरी की उठवा छाती राम राम " कज्जा उसे भोगेगा तो साछात इ'दर राजा की रभा के सग ऐश आराम "

गगा के द्वार पर भट्टी पर शुद्ध मूगफली के तेल मे सिकती नुकती-पूडी की गध सारे गाँव मे तैर रही थी। गध से लोगो के मुह मे पानी भर भर आ रहा था। पानी आता भी क्यो नही। यहा छटे-छमासे ही तो एसी दावते खाने के अवसर मयस्सर होते हैं। भट्टी के पास चोथडो म बैठा एक बूढा जाडे के मारे कँपकपा रहा था। यद्यपि उसने भी अपनी सामर्थ के अनुसार कच्ची पी रखी थी फिर भी उसे लग रहा था कि जाडा उसकी हड्डियो को फोड बाहर ही निकल जाएगा। बूढे ने अपने पास ही गुलाबी नशा मे बैठे एक अधेड से कहा 'जब तू स्यूनार बणे, तम्बाखू ही भर ले रे भाया। कुछ जडास मिटेगो "

"लाओ!" अधेड ने बूढे के सामने हथेली फलाई। बूढे ने अपनी टॅट मे खुली तम्माखू की थेली मे से सोरा मिली कातिकी तम्बाखू अधेड की हथेली पर रखी। अधेड ने पहले तम्बाखू को हथेली पर रगडा मसला। फिर टीटकी (लकडी) से चिलम का गुल साफ किया।

युवती गगा का घर। गगा का घर खूब सजाया सँवारा गया था। जिस कच्च घर पर बमुश्किल होली दीवाली पाण्ड् ही पुत पाती थी, आज कलई से सारस के सफेद पखो की तरह झकझका रहा था। द्वार पर चित्र विचित्र माडणे माडे गये थे। हाथी के हौदे मे बैठे मुहर बाध, राजकुमारी को ब्याहने जाते राजा के कुवर के। उसके आगे पीछे खरामा-खरामा चलते हथियारबँद प्यादो के और साज शृंगार मे लदी फदी कानो तक लम्बी लम्बी आखो वाली भरी जवानी की कामिनियो के। पेड-पत्त, लताओ के। इस गाव के लिए अब तक अजूबी चीज चाँदनी भी गँगा के घर के सामने तनी थी। घर के सामने खड नीम की डाल पर गैस भी सफेद उजीता फेकती जगमग-जगमग कर रही थी।

गजब का ही आनन्द-उल्लास थिरका पडा था गँगा के द्वार पर। शादी-ब्याह के से ढोल-तासे बज रहे थे। द्वार की चौतरी पर औरत 'कामए' मागलिक गीत गा रही थी। बच्चे किसी प्राप्ति की आशा म थिरक रहे थे। लोग महुआ से ताजी कढी 'कच्ची' पी-पी चहक-चहक पड रहे थे। तभी घर की देहरी के बीच काठ का पट्टा बिछा दिया गया। एक-दो औरतो ने गँगा को घर के भीतर से पट्टा पर ला बिठा दिया। गाव का पटेल गँगा के पास आ बैठ गया। औरतो, ढाल तास वालो को कुछ दर शान्त रहने के लिए हिदायत दे दी गई। उत्सुकता मे लोग गँगा के इद-गिद घुमड आए। पटेल टोकरी मे से एक-एक चीज गँगा की झोली मे रख, रकम चीज गिनाने लगा। 'नान्ही के वास्त यह जावद वाली खूबसूरत काचली। नकली सुनहरी गोटा चढा यह रतलामी लहँगा। इनके ही रग से मेल खाता यह नकली सिलक का पालका। देखो नान्ही के लिए यह दा ताला चादी की रखडी कसी चमचम कर रही है। नाक के लिए यह आध आना-भर सूना की नथ कसो चिलक मार रही है? य हैं गँगा के भाईजी-जीजी (माता-पिता) के लिए कुडता-धोती-स्यापा। लहँगा काँचलो-पोलका। गँगा के भाई-बहिनो के लिए ये झगल्या-टोपी। ये दो सौ एक नकद गगा के भाईजी को नजराने मे " पटल टोकरो मे रखे दैन-दायज के सारे सामान का गगा की झोली म रख कोंछ झाड खडा हा गया। लेकिन तभी उस जसे अपनी कोई भूली बात याद आ गई हो अरे! कज्जा द्वारा सारे गाँव-ढाणी का छककर नुकती-पूडी की दावत देन का ता एलान करना ही भूल

गया ' और फिर फुसफुसाते अपने कथन मे ये शब्द भी जोड दिए माग्या और उसके खास-खास आदमियो को कूकडा (मुर्गा) पलेन की दावत भी ."

दैन-दायज को देख-देख औरत आदमियो की आखें फटी फटी जा रही थी 'आज तक इतनी लडकियो की **नयउतराई** हुई पर किसी की मे भी इतना दैन दायज नही आया। सारे गाव को बुलाकर नुकती-पूडी की दावत तो किसी ने भी नही दी। भगवान सबको ऐसी ही ना ही बख्शे . गगा बडी भागवान...." गगा के लिए प्रशसात्मक टिप्पणियाँ सुनसुन उसके बाप मांग्या का जीण-शीण सीना मारे दप के दो दो मुट्ठी ऊपर उठ उठ पड रहा था 'इतना दन दायज आया है तो कॉई ही ग्यो . छोरी रूपाडी भी तो कितनी ' मांग्या का साथी सुमेरा उसकी बात का समथन कर रहा था 'दादा गलत थोडे कह रहा। छोरी गगा जैसी कद-काँठी रूप-रग वाली ऐसी और दूसरी छोरी आसपास कहा ताजा लूणी घी जैसी उसकी गुदाज-भरी देह। केसर सा रग। हिरणी की सी उसकी बडी-बडी आखे। सुआ की सी नाक। वटुआ सा मुह। छोरी की उठवां छाती राम राम " कज्जा उसे भोगेगा सो साछात इन्दर राजा की रभा के सग ऐश आराम "

गगा के द्वार पर भट्टी पर शुद्ध मूगफली के तेल मे सिकती नुकती-पूडी की गध सारे गाँव मे तैर रही थी। गध से लोगो के मुँह मे पानी भर भर आ रहा था। पानी आता भी क्यो नही। यहाँ छटे-छमासे ही तो एसी दावते खाने के अवसर मयस्सर होते ह। भट्टी के पास चीथडो म बैठा एक बूढा जाडे के मारे कँपकपा रहा था। यद्यपि उसने भी अपनी सामथ के अनुसार कच्ची पी रखी थी फिर भी उसे लग रहा था कि जाडा उसकी हड्डियो को फोड वाहर ही निकल जाएगा। बूढे ने अपने पास ही गुलाबी नशा मे वैठे एक अधेड से कहा "जब नू त्यूनार बणे, तम्वाखू ही भर ले रे भाया ! कुछ जडास मिटेगो "

"लाओ !" अधेड ने बूढे के सामने हथेली फलाई। बूढे ने अपनी टेंट मे खुली तम्माखू की थेली मे से सीरा मिली कातिकी तम्वाखू अधेड की हथेली पर रखी। अधेड ने पहले तम्वाखू को हथेली पर रगडा मसला। फिर टीटकी (लकडी) से चिलम का गुल साफ किया।

चिलम को उल्टा कर फूक मारी। फिर चिलम मे कॅंकड जमा तम्बाखू रखदी। तम्बाखू पर भभकता अँगार रख दिया। बाए हाथ को दाए से छुम्रा उसने बूढे को चिलम पेश की। बूढा मुह पर चिलम रख सू सू करने लगा। पर चिलम से धूम्रा नही काढ सका। उसने चिलम अधेड को फेरी 'सुलगा कर दे चिलम। मुह मे डाढ-दात नही कस खीचते मुह से हवा निकल जावे।" अधेड ने चिलम के जोर-जोर के कस खीच। कुछ ही देर मे उसने चिलम से धूम्रा-ही-धूम्रा निकाल डाला। अतिम कस मे चिलम से लौ निकल पडी। उसने चिलम बूढे को फरी, "अब पीम्रो दादा।" बूढे न इस वार तवीयत से चिलम के तीन चार कस लिए। अतिम कस मे वहुत कुछ धूम्रा उसकी म्रातो मे पठ गया। वापस उसके नाक-मुह से निकलने लगा। बूढा खी खी खी खी, करने लगा। जब बूढे के दम मे दम म्राई। उसकी कुछ जडास कम हुई तो बूढा अधड से पूछने लगा 'यह कज्जा कुए है रे ?'

'मन्ने मालम नही।'

'अच्छा तो मुझ से ही वरण रिया तू माय्या का खास दोस्त तुझे मालूम नही ?'

"क्या करोगे जानकर ?"

"भई वाह! मै कोई रॅंडा-भॅंडा ? वालवच्चेदार नही ? मेरे भी एसे काम-काज म्राते हैं ..।"

'तव की तब देखेंगे...."

"नही रे नही रे वता वता..." बूढा रिरियाने लगा।"

'किसी और को तो नही कहोगे कज्जा के बारे मे ?"

"नही नही..."

"गगाजी की सौगध खाम्रो..."

'गगाजी की सौगध।"

"अपने हलके का वा मम्वर सा० "

"अच्छा... अच्छा जदई तो.. "

"कोई मतलब ?"

"अरे भाया ! यू ही तो नथ उतराई मे इतना दैन-दायज ज्यादा आया।"

"ऐसा कैसे...?"

"अरे भाई ! मेम्बर सा ज्यादा ही दो लम्बर वाला। इसी वजह से उसने इतना खच कर दिया मौज-मस्ती के लिए। नही ता म्हार हाडे (मेरे साले) ये सेठ...लम्बरदार नथ उतराई मे इतना खर्च थोडे करे।"

"हाँ यह तो है।" अधेड ने अपनी दाढी खुजलाई।

"है की बात नही यह कडवी सच्चाई है भाई। तुझे भी मालम वह साचरौद का भायाजी अपनी भतो को तीन वीसी मे ही रूँद गया। भतो बी गगा की नाई रूपाडी थी। खैर मम्बर सा० से अपना मेल जोल हो गई। यह हऊ (अच्छा) रिया "

"कैसे ?"

"अरे तू इतना भी नही समझे ? इनकी वजह सू अपनी भी राज-दरबार मे पूग हो जाएगो। अपनी वहाँ सुनवाई होन लगेगी। पुलसिया अपन कू तग नही करेगा। नही तो ये म्हारे हाडे चौथ भी वसूले हम से। अपनी छोरियान कू भी मुफत मे "

गगा घर की अदरूनी कोठरी मे सहेलियो से घिरी बैठी थी। नथ उतराई मे आए दैन-दायज के कपडे रकम-चीज सब उसे पहना दी गई थी। उसके माथे पर कढी सुनहरी चमकती कुमकुम की महराब दमदम कर रही थी। और नाक मे नथ तो गजब की ही चमक रही थी। पर गगा के चेहरे पर कोई हँसी खुशी नही थी। अपितु वह बेहद उदास, निराश, हताश दीख रही थी। उसके घर के पिछवाडे खडे महुआ की मदमाती गध हवा के साथ कोठरी मे आई तो गगा की एक सहेली ने चहककर उसके च्यूटी भरी "तूभी तो काई गा दारी ! थारे ही लिए

तो यह खुशी का दिन— और तूही इस तरह — जसे तेरे भाईजी फोत ." गगा ने सिर्फ उसे सूनी-सूनी आंखो से देखा भर। कहा कुछ नही। सिर्फ तडप कर रह गई। गर्दन नीची कर उँगली से जमीन कुरेदने लगी। गगा द्वारा खुशी मे किसी भी प्रकार उत्साह न दिखाने पर गगा की सहेली ने ही गीत उठाया—

"म्हारा वदन मरोडिया खाय
बलम था बेगां आवोजी
जोवन फूल्या ज्यो कचनार
भरमावे मन फागण बयार
म्हा अंग न अंगिया समाय
बलम थां बेगां आवोजी।"

गगा की हताशा, निराशा के बारे मे उसकी मा ने स्पष्टीकरण उछाला "इतना दैन-दावज आने से नानी कू रांड रडवान की नजर चाट गी ए। राई-नून उतारूंगी तब कही नानी—"

गगा सहेली को उत्तर देती भी तो क्या ? उसकी स्थिति तो यहां खूटे पर बधे निरीह पशु की तरह है। हलाल होने वाले बकरे की तरह उसे भी उसकी मरजी के विरुद्ध जिबह किया जा रहा है। राजस्थान-मालवा मे बसे इन खेतिहर बाछडाओ मे अद्भुत परम्परा है। वे अपनी पहलौटी लडकी की नथ उतराई कराते है। नथ यानी लाज। यानी अपनी पहले पहल की लडकी की किसी मालदार ग्राहक से उसकी लाज उतरवाते है। उसको गहस्थ बनने की अनुमति नही। इस एवज मे वे कज्जा से ज्यादा से ज्यादा एक मुश्त रकम, दन-दावज वसूलते है। विशेष रूप से आमंत्रित कज्जा आज उसकी भी लाज उतारगा। उसके कोरे, अछूते शरीर, यौवन, रूपरग को आज कज्जा द्वारा छक कर भोग लेने के बाद वह आजसे खिलावडी हो जाएगी। खिलावडी माने वेश्या। इसके बाद तो उसे मां-बाप के घर से सटी घास-फूस या खपरैल की टापरी मे अलग से बठा दिया जावेगा। जहा रोज मौके-बेमौके नरोक्टाक उसके मा-बाप भाई बहिन की उपस्थिति मे वासना की आग बुझाने ग्राहक आएँगे। कुछ सिक्को की एवज मे चाहे-अनचाहे वह ताजिन्दगी नुचती रूँदती रहेगी। यह नरक भोगते-भोगते।

इन खिलावडियो मे एक स्थिति आती है—कभी रूप-रस-गँध के लोभी भौरो द्वारा इनकी ओर आकर्षित न होना। तब इन खिलावडियो मे व्याप्त कुठा, मायूसी, हताशा देखने काबिल होती है। इस हताशा कुठा मे कभी-कभी खिलावडिया कुआ-पोखर कर बैठती है। आग को भेंट चढा देती है। उसकी आखो मे आसू छलछला आए। मा-सहेलियो की ओर से उसने अपना मुख दूसरी ओर कर लिया। आखो से टप्प से दो आसू टपक पडे। मकान के कच्चे फश पर गिर कर सूख गये।

इन बाछडाओ को नेक, भले, समाज सुधारक कितना-कितना तो समझाते है इस नरक की प्रथा को छोडने के लिए। उसको गाँव के ही स्कूल मे पाचवी तक पढाने वाले उसके वे अध्यापकजी इनको कैसी तो सुनाते थे "अरे ढाँढाओ ! पशुओ, क्यो अपनी फूलसी कोमल कन्याओ पर जुल्म ढाते रहते हो ? किस नीच-कमीने ने तुममें यह भ्राति फैला रखी है कि वाछडाओ को देवता का श्राप है। श्राप के कारण उन्हे अपनी पहलौठी लडकी को खिलावडी बनाना ही होगा। अरे जाहिलो ! कही देवता भी किसी को ऐसे श्राप देते है। फिर जो देवता ऐसी बुराई पसद करे, वह देवता नही। वह दैत्य है… राक्षस है धता बताओ ऐसे देवता को। किसी को कोई श्राप व्राप नही' दिमाग से निकालो इस बुराई को इस घिनौनी प्रथा को जमीदोज करो किसी विकट नीच ने अपने घृणित स्वाथ सिद्धि के लिए तुम लोगो मे यह श्राप वाली नीचता भरी भ्रान्ति फैला रखी है…" पर इनको तो एक नही लगती है।

आधी रात हो आई थी। पूनो का चद्रमा और भी खूब खिल आया था। जमीन, नदी पहाड, स्वच्छ-निमल चादनी मे ओर-पोर नहा रहे थे। गगा की नथ उतराई के उत्सव मे लोग कच्ची पी-पी, ज्योनार छक कर औंधे मुह पडे थे—निद्रा मे मगन थे। इस समय कोई जाग रहा था तो माँग्या के घर से सटी विशेष रूप से सज्जित कोठरी मे बस कज्जा। कज्जा वहा गगा के आने की बेकरारी से प्रतीक्षा कर रहा था। कोठरी टगे सिने तारिकाओ के अध नग्न शरीरो के चित्रो को देख-देख उसकी काम वासना भडक-भडक पड रही थी। ज्यादा व्यग्रता बढती तो राहत के लिए थोडी सी केसर-कस्तूरी हलक मे उतार लेता था। बाहर जरा सी भी आहट होने पर वह खटिया से उठ-उठ पडता था। काफी

"माल को तो अभी तक लाया नही हरामी, ऊपर से यह ड्रामा क्या करने लगा ?" बडी मुश्किल से माग्या के मुह से बोल फूटे "गगा किसी के सग फरार हो गई सरकार.. "

"क्या–ग्रा–ग्रा ?" कज्जा की त्यौरिया चढ गई ।

" भाग गई हजूर ! "

'तेरी तोSSSS" कज्जा का क्रोध पैंट्रोल मे आग लग जाने की तरह फूटा पडा—"हरामजादे मादर इतना माल खोने के बाद भी मेरे साथ ऐसी बदकारी लोडिया को किसी के साथ भगवा दिया और मुझे चरका दे रहा है कि " वह बेत ले दात पीसता सडाक सडाक माग्या पर पिल पडा । माग्या को अधमरा कर डाला । माग्या मार से भकराने लगा उसकी आखो से आसुओ का रेला बह निकला । शरीर मे कई-कई जगह से गोश्त बह निकला । खून रिसने लगा था । माग्या की भकराहट बाहर जाने लगी तो कज्जा ने भारी क्रोध मे उसका मुह भीच दिया "चाप्प S S S S स्साले ज्यादा भकराया तो यही जमीदोज कर दूगा सही सही बता लोडिया कहा ?" माग्या मार से थर-थर काप रहा था "मैं आपसे सही ही अरज कर रिया परथीनाथ ! मुझे आपको धोखा देकर मरना ऐ ?" "फिर वही गद्दारी हराम-खोरी " अब की बार कज्जा ने बेरहमी से उसे अपने बूटो से रोद डाला । माग्या बुरी तरह तडफने लगा "आप म्हारी जान भी लेलो सरकार ! पर मैं आपसे झूठ नही बोल रहा गगाजी की सौगध "

अबकी कज्जा को माग्या पर एतबार आया । बाछडे गगाजी की झूठी सौगध नही उठाते । पर उसके माल पर कोई दूसरा हाथ मारे यह उसे कैसे गवारा । उसने क्रोध ही क्रोध मे आधी बोतल बची केसर कस्तूरी एक ही बार मे हलक के नीचे उडेल ली 'हूँ–ऊँ–ऊँ " एक खोफनाक हुकार भरी उसने । अपने साथी लठैतो को बुलाया "देखो मेरे साथ यहाँ धोखा हुआ—हमारे माल को कोई पकडकर उस कुत्ते की छुट्टी काट-कूट रेल की पटरी पर पटक देना माल को जल्दी हमारे हवाले— पहचान के लिए साथ मे इस हरामी को .." अपना नाम सुन मांग्या ने पैरो मे पडे-पडे कज्जा की ओर ताका तो मारे डर के उसने

प्रतीक्षा के बाद भी गगा वहाँ नही आई तो उसके सत्र का बाध टूट पडा। उसने पेश्तर से अपने आदमी द्वारा माग्या को बुलवाया। आंख काढ उस पर गुर्राया, क्यो रे ढेड ! तुझे कितना समझाया था। मेरे यहाँ पहुँचते ही सारा इतजाम झटपट कर देना। देर मत लगाना। कही विरोधियो को भनक लग गई तो— पर तेरे मगज मे एक न बठी। अब मेरा मुह क्या झाकता है ? माल कहा ? रातभर यही झक मारता रहूँगा ? माग्या ने भी जश्न मे खूब लगा रखी थी। पर कज्जा की इस जरा सी ही डपट मे उसका आधा नशा काफूर हो गया। कज्जा के हाथ जोड घिघियाने लगा, 'माफी चाहूँ हुकम ! मैंने तो आपके आने से पहले ही नानी का यहा पहना-ओढा भेज दिया था। अब पता नही कहा मरगी राड भडी (पागल) है— अभी बुला कर लाऊँ सरकार ! —" माग्या भागता घर के भीतर गया। अपनी जनानी को टेरा "अरे गगा कहा मरगी ? हाल तक कज्जा के हुडे (पास) नही गई उस अब जल्दी भेज भागवान ! " गगा के कज्जा के पास न होने की सुन जनानी चिन्तातुर हुई "मैंने तो उसे कभी का ही कोठरी मे भेज दिया था— तुम कह रहे हो कि कहा चली गई इस आधी रात—?" जनानी गगा को आस-पास घरो मे तलाशने दौडी। पूरे पाडे-मोहल्ले को छान मारा उसने पर गगा उसे नही मिली। यह बात उसने माग्या को बताई तो माग्या अत्यधिक चिन्तित हुआ "कहा चली गई कम्बख्त इस टैम ?" वह भी गगा को मौहल्ले मे ढूढता हुआ पूरा गाव छानने लगा। ढूढते-ढूढते जब वह गाव के नुक्कड वाले घर पर पहुँचा तो वहा एक वृद्ध ने उसे बहुत समय पहले गगा को हाजत के लिए पानी का लोटा लिए अफीम के खेतो की ओर जाते देखने की बात कही। माग्या बदहवाश सा खेतो की ओर दौडा। गगा को पुकारने लगा—हो-ओ-ओ गगा गगा हा–ओ–आ " पर आवाजें पानी मे हरुफ काढने जैसी निरथकता ही बताती रही। माग्या ने गगा को खेतो मे घुस घुस कर भी ढूढा। कूआ नहची-मोरे भी तलाश डाले। पर गगा उसे कही नही मिली। इस पर तो माग्या बेहद घबडा गया। भय से थर-थर कापता कज्जा के परो मे आ गिरा "मारा गया हजूर बचाओ माई बाप " इस तरह उसे पैरा मे गिरत कज्जा उसे विस्मित सा देखने लगा। कज्जा की आवाज कोठरी के बाहर न जाय उसन कोठरी के किवाड बद कर लिए। दात पीसता माग्या से कहने लगा

"माल को तो अभी तक लाया नही हरामी, ऊपर से यह ड्रामा क्या करने लगा ?" बडी मुश्किल से माग्या के मुह से बोल फूटे "गगा किसी के सग फरार हो गई सरकार.. "

"क्या–आ–आ ?" कज्जा की त्यौरिया चढ गई ।

" भाग गई हजूर ! "

'तेरी तोऽऽऽऽ" कज्जा का क्रोध पैट्रौल मे आग लग जाने की तरह फूटा पडा—"हरामजादे मादर इतना माल खोने के बाद भी मेरे साथ ऐसी बदकारी लौडिया को किसी के साथ भगवा दिया और मुझे चरका दे रहा है कि " वह बेत ले दात पीसता सडाक सडाक माग्या पर पिल पडा । माग्या को अधमरा कर डाला । माग्या मार से भकराने लगा उसकी आखो से आसुओ का रेला बह निकला । शरीर मे कई-कई जगह से गोश्त बह निकला । खून रिसने लगा था । माग्या की भकराहट बाहर जाने लगी तो कज्जा ने भारी क्रोध मे उसका मुह भीच दिया "चाप्प ऽ ऽ ऽ ऽ स्साले ज्यादा भकराया तो यही जमीदोज कर दूगा सही सही बता लौडिया कहा ?" माग्या मार से थर-थर काप रहा था "मैं आपसे सही ही अरज कर रिया परथीनाथ ! मुझे आपको धोखा देकर मरना ऐ ?" "फिर वही गद्दारी हराम-खोरी " अब की बार कज्जा ने बरहमी से उसे अपने बूटो से राद डाला । माग्या बुरी तरह तडफने लगा "आप म्हारी जान भी लेलो सरकार ! पर मैं आपसे झूठ नही बोल रहा गगाजी की सौगध "

अबकी कज्जा को माग्या पर एतबार आया । बाछडे गगाजी की झूठी सौगध नही उठाते । पर उसके माल पर कोई दूसरा हाथ मारे यह उसे कैसे गवारा । उसने क्रोध ही क्रोध मे आधी बोतल बची केसर कस्तूरी एक ही बार मे हलक के नीचे उडेल ली "हूँ–ऊँ–ऊँ " एक खौफनाक हुकार भरी उसने । अपने साथी लठैतो को बुलाया "देखो मेरे साथ यहा धोखा हुआ—हमारे माल को कोई.. पकडकर उस कुत्ते की छुट्टी काट-कूट रेल की पटरी पर पटक देना माल को जल्दी हमारे हवाले— पहचान के लिए साथ मे इस हरामी को.. " अपना नाम सुन माग्या ने पैरो मे पडे-पडे कज्जा की ओर ताका तो मारे डर के उसने

पुन आँखें बन्द करली। कज्जा उसे इस समय खूखार भेडिया सा लग रहा था।

धूल भरे दगरे मे माग्या ने टार्च के उजाले मे पैरा के ताजे निशान देखे तो "ठहरना बनासा । अपने साथी लठतो को उसने रोका। बीच दगरे में बैठ पैर के निशानो को नापने लगा" "हूँ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ठीक... बिल्कुल ठीक... एक बलिश्त तीन अँगुल ... ये पैर के निशान उसी राड के... वह उठ खडा हुआ" तेज चाल करो बनासा ये ताजे पैर के निशाल उसी गनकडी (कुतिया) के हाथ से उसके लिए चमरौधे जूते मैं इसी नाप के लाता था .." वह तथा लठैत तेज रफ्तार से आगे चलने लगे। माग्या और लठत चलते-चलते रास्ते के आस पास के क्षेत्र का भी टार्च डाल डाल मुआयना करते जा रहे थे।

गगा उनके आगे आगे तेज रफ्तार से कस्बे के स्टशन की ओर जा रही थी। उसके मन में एक दृढ निश्चय पक रहा था "वह भीख माग लेगी। भूखी रह लेगी। जान भी दे देगी पर इस नथ उतराई के नरक कुण्ड मे नही गिरेगी। वह खिलावडी किसी भी कीमत पर नही बनेगी।" स्टेशन जाने के रास्ते मे पठार पर से गुजर रही थी वह इस समय। ऊँचाई से एकाएक उसने अपने पीछे उठती लदर-पदर की आवाज सुनी तो वह चौकी। पीछे मुड देखा तो नीचे के रास्ते में उजाला ही उजाला चमक रहा था। वह काप गई—निश्चय ही ये वे ही भेडिए होगे उसको ढूढने निकले है—स्टेशन जल्द से जल्द पहुँच जाने के लिए वह दौडने लगी। परन्तु लदर-पदर आवाजे निरतर हो उसका पीछा कर रही थी। माग्या और लठैत अब पठार पर थे। और गगा उनके आगे-आगे उतार वाले नीचे रास्ते मे। पठार पर आ माग्या ने, आगे उतार के रास्ते पर दूर-दूर तक प्रकाश देने वाली टाच डाल "देखना बनासा ! वह दो एक मील दूर रास्ते मे काली सी छाया कसी ? हो न हो वही कुतिया होगी और तेज चाल करो बनासा " वह साथी लठतो से कह रहा था।

माग्या और लठैतो की पास से पासतर आती आवाजें सुन-सुन गगा भीतर से काप-काप उठती थी। उसकी धुकधुकी बढती जा रही थी। दौडते-दौडते साँस भी फूल गई थी उसको। पर भी बुरी तरह थक

ग्रौर मनाही कर रहे थे। वह ग्रब गिरी--- ग्रब गिरी जैसा उसे लग रहा था। जब उसके पैरो ने ग्रौर ग्रागे बढने के लिए साफ ही इन्कार कर दिया तो उन भेडियो की पकड मे ग्राने की स्याह ग्रशका से त्रस्त हो वह थर-थर कापने लगी "ऊपर वाले का भी नरक कुण्ड मे ही धकेलने की मशा" मुक्द्दर में सडाध मारती गटर के कुलबुलाते कीड की सी ही जिन्दगी बदी लो भेडियो लो मेरी बलि !! " उसकी ग्राखो मे फर फर ग्रासू बहने लगे। कदम रुकने को हो ग्राये। पर तभी भीतर से कोई ग्रावाज उसे प्रेरित करने लगी "मजिल के करीब ग्राकर हिम्मत हारती है कायर बुजदिल ग्रब थोडी सी दूरी की ही तो बात वह रहा सामने स्टेशन दस कदम ग्रौर यह मौका हाथ से रपट गया तो जिन्दगी भर बस लगा एक ग्रौर ग्रार की डुबकी " ग्रौर जसे एकाएक उस पर उन्माद छा गया हो। वह रुकते-रुकते हवा की तरह दौडने लगी। भीतर से ग्राती ग्रावाज निरन्तर उसे बढावा देती रही "शाबाश !! बहादुर बस बस ग्रा गई मजिल पर वह ग्रा गया स्टेशन दो कदम तेज ग्रौर " ग्रौर सचमुच काफी देर तक उसी उन्माद की सी ग्रवस्था मे दौडते-दौडते स्टशन ग्रा चुका था। स्टेशन पर लगे बिजली के लट्टू जुगनू की तरह टिमटिमा रहे थे। उसा स्टेशन याड मे एक तरफ खडा मालगाडी का डिब्बा देखा। ग्राव न देखा न ताव। उछल कर उसने डिब्बे मे छलाग लगा ली। डिब्ब मे ता वह ग्रा गई किन्तु फिर उसे काफी देर तक ग्रपना होश हनाश नही रहा। बेहोश पडी रही। काफी समय बाद वह चौचीती तब हुई जब उसन माग्या की क्रोध, हताशा भरी बडबडाहट सुनी "इधर ही ता ग्राई थी मालजादी गनकडी कहा सुरग मे जा पहुँची ग्रबकी मिल ता जाय गला न टीप दू ँ तो ऽऽऽऽ"

तभी स्टेशन पर एक यात्री गाडी प्रविष्ट हुई। माग्या ग्रौर लठत उसे प्लेट फार्म पर चौकन्ने हा तलाशने लगे। इधर से उधर प्लेट फाम पर शीघ्र-शीघ्र चक्कर काटने लगे। गाडी ने स्टेशन पर कुछ क्षरण बाद सीटी मारी। गगा ने डिब्बे से झाक माग्या ग्रौर लठैतो की ग्राहट ली। उसने दखा वे उस समय प्लेटफाम पर विपरीत दिशा मे उसे तलाश रह थे। उसने हाथ ग्राया ग्रवसर नही छोडा। डिब्बे से हिरनी की सी कुलाच भरी। चलती गाडी के एक डिब्बे का डडा पक्ड लिया। दूसरे

... पता नही कैसे वह मग्गा की निगाह मे आ गई। वह चिल्लाता उस डिब्बे की ओर दौडा "पकडो पकडो वह उस डिब्बे मे बैठ गई वह " लठत भी उसके पीछे तेजो से दौडे। लेकिन तब तक गाडी की गति काफी तेज हो आई थी। वे उस डिब्बे तक नही पहुँच सके। उनकी आवाजे शून्य म ही टकरा-टकरा कर बिखर गई। वे हाथ मलते रह गये। मग्गा अत्यधिक हताशा मे स्टेशन पर ही फैल गया "अब क्या जबाव दूँगा कज्जा को सिर पर यह पहाड कहा से आ टूटा राम रे अब तो मेरी जीते जी मौत - "

गगा उनकी पकड से दूर—बहुत दूर आने पर गजब की ही प्रसन्नता—राहत अनुभव कर रही थी। किन्तु तभी मन मे उठती चिन्ता रग मे भग डाल रही थी "शहर मे अकेले वह कहा जायगी ? बिल्कुल अपरचित शहर औरत जात सकडो बवाल जान के लिए जगह जगह जीभ लपलपाते भेडिए सियार " लेकिन तभी उसे अपने उन अध्यापकजी द्वारा एक अनाथ महिला को शहर नारी निकेतक पहुँचा देने की बात उसक जहन मे याद हो आई—बस बस हो गया उसकी चिन्ता का फिलहाल समाधान वह शहर पहुँच सीधे नारी निकेतन मे ही आश्रय लेगी। वह वहा सिलाई, बुनाई, कढाई सीखेगी। पीछे छूटी पडी पढाई को भी आगे बढाएगी इस दौरान। जल्दी ही कुछ हाथ का हुनर सीख वह नारी निकेतन छोड देगी। अपने पैरो पर खडी हो जाएगी। फिर किसी मन पसद साथी से विवाह की बात आने पर तो कई-कई मीठी मीठी कल्पनाएँ उसके मन मे जल तरग की तरह टुन टुटाने लगी ' वह इन बाछडाओ के गर्हित जीवन से बिल्कुल भिन साफ-सुथरा सम्मानजनक सदगृहस्थ का जीवन जी रही है। उसकी अपनी छोटी सी गहस्थी। उसका अपना छोटा सा सुहाना घर। घर के आगन बाल क्रीडा करते सुन्दर स्वस्थ एकाध बच्चे साझ घर आने पर वह रोज सद गृहस्थ की तरह तुलसी चोरा तले घी का दीपक जला स्वगत गुनगुनाती है "भए प्रकट कृपाला " उसे लग रहा है उसके इद गिद अब रोशनी ही रोशनी खुशिया ही खुशिया अब वह नरक कुण्ड का कीडा नही

और इन मीठी-मीठी कल्पनाओ मे बहते बहते वह गाड के डिब्बे मे पता नही कब निद्र द्व नीद के आगोश से बँध गई थी। □

7



पटरियो पर सरटि भरती रेलगाडी एक बडे नगर मे प्रवेश कर रही है। मैं शहर के उस स्टेशन पर उतर जाता हूँ और चदौरी स्थित इजोनियरिंग कालेज पहुँच जाता हूँ। अभी सुबह के नौ भी नही बजे है। कालेज वद है। मुख्य द्वार पर

"तुम तो बाबूजी बिल्कुल हौलू ही रिये अरे कही दो लम्बर के पैसे की भी रसीद दी जाती है। यह रसीद तो सिफ इस बात का ही परूफ है कि उनका सारा पैसा चुकता। हमारे लल्लू को एडमीशन पक्को "

मैं घोर निराशा, मायूसी, आत्महीनता मे वर्फ के टुकडे की तरह गलने लगता हूँ।"

एक चौकीदार बठा है। मैं चौकीदार से पूछता हूँ—"कालेज कितने बजे खुलेगा ?"

"दाह् बाजले " उसकी मैं भाषा नही समझ पाता। उसका मुह ही देखता रह जाता हूँ। तो वह टूटी-फूटी हिन्दी मे ही उत्तर देता है। "दस वजा...किससे मिलना मागता ?"

"प्रिंसिपल साहब से "

"किस खातिर ?"

"बच्चे का बी ई मे भर्ती कराना "

"फिर तो तुम बावा साहिब से मिलो वही करता बच्चा लोगो को भर्ती प्रिंसीपल साहब तो फकत बच्चा लोगो को पढाता "

"ये कौन है ?"

"इस कालिज का मालिक कॉलिज टरस्ट का परसीडन्ट "

"कहा रहते ह ?"

"टेसन के पास "

लम्बे-चोडे मदान मे फैला एक अत्याधुनिक बगला। बगले के वरामदे मे अच्छी खासी भीड जमा है। मुझे आया देख कुछ लोग मुझे ऐसे घूरते हैं जसे वहाँ बटने वाली जायदाद मे हिस्सा बटाने वाला उनका एक और प्रतिद्वदी आ गया हो। मैं भी उस भीड का अग बन जाता हूँ। बातो ही बातो मे वहाँ आए लोगो के साहबजादो की फस्टईयर की परसटेज की जानकारी लेता हूँ। किसी की बावन। किसी की तिरेपन। राजेश की इन लोगो से परसटज बहुत ज्यादा है। ये कही नही ठहरते उसके सामने। मैं मन को तसल्ली देता हूँ।

वही वरामदे के एक कमरे मे बठे क्लक से पचास रुपया देकर कॉलेज का फाम खरीद लेता हूँ।

मेरे बच्चे का भी फाम भरवा देना जी बाबूजी "

मेरी बगल मे बैठे सज्जन उठकर अपनी जगह अपने बच्चे को बैठा देते हैं। मैं उन पर सरसरी दृष्टि डालता हूँ। टेरीकाट के सफेद झक्क कुर्ता-धोती मे सजे-धजे। सिर पर लगी सफेद टोपी। गदन मे सोने की जजीर। पैरो मे चमचमाते जूते।

"आप बच्चे के पिता ?" म उनसे पूछता हूँ।

"हाँ सा हाँ सा "

"क्या प्रतिशत है बच्चे की फस्ट ईयर में ."

वे रोने सी शक्ल बना लेते हैं "ये मत पूछो सा पढ़ाई-लिखाई में ये बडे मट्ठ वडी मुश्किल से तीन साल मे इन्ने एफ ए करी है—वो तो इस साल नीली छतरी वाले की महर इन्टर मे इनकी पूरमपट्ट पचास परसिंट आ गई एक लम्बर भी कम पड जाता तो बैठ जाती भैंस पानी में फिर ये यहा भरती नही हो सकते थे। यहा की उनीवरसिटी ने भर्ती के ल पचास परसिंट का नियम बना रखा है।"

"कहने को पचास परसट है। पर पचास परसट वाले को कॉलेज यूनीवर्सिटी प्रवेश थोडे ही देती है लालाजी। "

"क्यो सा ?"

बी ई मे भर्ती के लिए ऊची प्रतिशत वाले विद्यार्थी आते है। जब तक ऊँची प्रतिशत वाले विद्यार्थी को कालेज यूनीवर्सिटी द्वारा प्रवेश देने का सवाल हो नही—"

'जि कोऊ बात नई सा चादी की मार मे वडी ताकत होवे बावूजी। देखना पहले इनकी एडमीशन होगी। चादी की मार के सामने तुम्हारी परसिंटेज फरसिंटेज एक तरफ रह जाएगी—"

"सो तो ठीक लालाजी। पर यहा एडमिशन मे पैसा सीधे तौर पर काम नही कर सकता। एडमिशन देने के कुछ निश्चित नियम है।"

"म कह रहा हूँ बावूजी। आप देखना तो सही। तेल देखो तेल की धार देखो।"

म मन ही मन चिढ जाता हूँ— "अगर पैसे से ऐसा होने लगे तो हो गया बटाढार। फिर तो सब जगह पैसे वाले ही पैसे वाले। बुद्धि, प्रतिभा, मेहनत को फिर कौन सूघेगा ?"

जुलाई का प्रथम सप्ताह है। ग्यारह बजने को है दिन के। तभी बगले के भीतर से एक क्लक बाहर आकर एडमिशन प्रारम्भ होने की सूचना देता है। लोग सतक सावधान हो जाते है। मेरे आगे एक बगाली मोशाय का नम्बर है। काफी देर बाद उनका नम्बर आता है। वह अन्दर से जल्दी ही वापस बाहर आ जाता है। मारे खुशी के फूला नही समा रहा। अपने साथी को भुजाओ मे भर लेता है। "भइयन ! हमरे छोकरे का एडमीशन हो गिया। आज से हम भी इन्जनीयर का बाप— कोई हमसे पूछेगा तो हम भी छाती फूला बोलेगा हमारा बेटा इन्जीनियर "

"तो फिर मिठाइया विठाइया खिलावा भाई।"

"हा हाँ ... क्यो नही - चलो हमरे साथ बाजार चलो तुमको कालाजामून खिलायेगा आज तुम हमरे सियालदाह मे होता न भइयन तो हम तुमको अपने तोलाब का ताजा-ताजा मोछली खिलाता सच्च..."

खुशी मे चहकते मोर की तरह झूमते बगाली को देख मेरे मन मे भी हूक उठती है—यदि राजेश का बी ई मे एडमीशन हो गया तो म भी अच्छो-अच्छा को घास नही डालूगा।

काले-काले बादलो से आवत्त सूय कभी-कभी दिखने पर बेहद मरियल-पतला दीख रहा है। चार बज गये है। अब कही मेरी बारी। नाम पुकार जाने पर धुक-धुक करता म चम्बर मे पहुँचता हूँ। दिन भर की उमस, गर्मी से त्रस्त शरीर, एअरकडीशड चैम्बर मे बडी राहत महसूस करता हूँ। अध्यक्ष महादय एक बडी व्हील चेयर पर बिराजमान है। उनके सामन सनमाइका मडित वडी मेज रखी है। मेज के इद गिद कीमती कुर्सियाँ। मेज पर सोने का पानी फिरा कलमदान रखा है। सहमता हुआ मैं उनका अभिवादन करता हूँ। उत्तर म उनकी मोटी गदन मामूली सी हिलती है। वे सामने कुर्सी पर बठने का सकेत करते करते हैं। वडी हिचकिचाहट के साथ म उनक सामने बठ जाता हूँ।

"अपने बेटे के ओरिजनल सर्टीफिकेट्स दिखाइए।"

मैं तुरत-फुरत राजेश के सारे प्रमाण पत्र फाइल से उनके सामने रख देता हूँ। वे मुह बिचकाते हैं, "अरे भाई केवल एच एस सी की मार्कलिस्ट दिखाइए " और सारे प्रमाण पत्रो को वे मेज पर कचरे की तरह मेरी तरफ कर देते हैं। मैं बहुत ही शीघ्रता से राजेश की फर्स्टइयर की मार्क लिस्ट उनको निकाल कर देता हूँ। वे केलकुलेटर की मदद से मार्क लिस्ट का पी सी एम, फिजिक्स, कैमिस्ट्री, मैथ्स मे प्राप्त अंको का प्रतिशत निकालने लगते हैं।

"फिफ्टी परसट से एबव ह। फर्स्टइयर मे मार्क्स—"

जी जी जी सेवेन्टी टू परसट है। मेरे सेवेन्टी टू वाले कथन पर वे कोई ध्यान नही देते।

"कौन सी ब्रान्च चाहिए आपको बच्चे के लिए—?"

"जी.... कप्यूटर साइस इलैक्ट्रोनिक्स "

उन्होने मेज पर रखी ढेर सारी फाइलो मे से एक फाइल निकाली। उसम कुछ पढा। पुन बन्दकर मेज पर रख दिया।

"हो जाएगा बोलिए.." और अपनी रौबदार दृष्टि मेरे चेहरे पर टिका देते हैं। उनके मुख से राजेश को एडमीशन देने की बात सुन मेरी छाती दो-दो मुठ्ठी ऊपर उठ जाती हे। खुशी को जज्ब करता बहुत विनीत हो उनसे पूछता हूँ—'सर। में आपका मतलब ?"

वे व्यग्य मे मुस्कराते है, "आप बहुत भोले हैं "

" ..अरे भाई कप्यूटर साइइस के लिए आप हमे क्या डोनेशन देगे..?"

"डोनेशन—?" मेरे माथे पर बल पड आते हैं।

'हाँ भाई। हम डोनेशन से ही बच्चो को एडमीशन देते है। परसेंटज के बेस पर नही।"

वे बुरी तरह मुह बना लेते है "नही नही ऐसा कुछ नही परसटेज के मामले मे सिफ यूनीवर्सिटी द्वारा निर्धारित मिनिमम परसेंटे की बाइन्डिग्स की फामलिटी ही पूरी करते है। बाकी ग्रोर किसी परसेंटेज का..."

उनका दो टूक उत्तर सुनकर अभी-अभी शोख तीतर सी उछल कूद मचाती मेरी प्रसन्नता एक-दम गदन तोड जमीन पर भहरा पड़ती है। मुह से बोल निकलने दूभर हो जाते हैं।

"मैं तो सर। अदना सा एल डी सी आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ! आपका हुकम ही है तो दे दूगा सर। दो-ढाई हजार..."

"दो ढाई हजार...। उनकी आखे कपाल से जा लगती है। म घिघियाता हूँ "जी जी... जी मेरी बस इत्तीसी ही कूवत " वे मेरे ऊपर क्रोधित हो जाते है "तुम बच्चे को बी ई मे भरती कराने आया या हमसे मजाक करने दो ढाई हजार मे बी ई मे बच्चे भर्ती होते है...?"

"मेरी इससे ज्यादा कूवत नही सर। "

"मालूम है तुमसे आगे वाले बगाली ने कम्प्यूटर साइस के लिए कितना दिया है -?"

"कितना दिया है सर। ?" पूछते म अत्यधिक कातर हो आता हूँ। इस बार अध्यक्ष महोदय अपना गुस्सा नही रोक पाते "प्लीज डान्ट वेस्ट माई टाइम। आप यहा से बाहर निकल जाइए। कहते-कहते उनका चेहरा सीमेन्ट पुता हो आता है। लगता है जैसे इस आदमी को दया, सहानुभूति, सवेदना छू कर भी नही निकली हो। वह मुझे चेम्बर से बाहर कर द ती है।

बाहर आया देख लालाजी मेरी तरफ आते है "है गयो।" बाबूजी तुम्हारे लल्लू को एडमीशन ?" सारा वाकया बताने मे मुझे बडी आत्म-ग्लानि, लज्जा अनुभव होती है। बताना टाल जाता हूँ 'पहले आप अन्दर हो आइए, वे अब आपको बुला रहे हैं- बताऊंगा "

लालाजी बहुत जल्दी ही चैम्बर से बाहर आ जाते है। उनका गोल सुख चेहरा और भी सुख हो आता है। म उनकी तरफ लपकता हूँ "हो गया आपका काम ?"

'है गयो बाबूजी। "

"क्या डोनेशन दिया आपने ?"

"पचपन हजार "

'क्या कह रहे है आप ?"

"जो कह रहे है वो सब साच साच बगाली ने तो कम्प्यूटर सैस के लिए साठ दोये है हम आपसे जो कह रहे थे। वही बात हुई न पैसे मे बडी ताकत होती है बाबूजी।"

"रसीद दी उन्होने पचपन हजार की ?" वे मेरी ओर एक रसीद कर देते है।

"इसमे तो केवल सौ रुपये की प्राप्ति अकित है।"

'तुम तो बाबूजी बिल्कुल होलू ही रिये अरे कही दो लम्बर के पमे की भी रसीद दी जाती है। यह रसीद तो सिफ इस बात का ही परूफ है कि उनका सारा पैसा चुकता। हमारे लल्लू की एडमीशन पक्को "

मै घोर निराशा, मायूसी, आत्महीनता मे बफ के टुकडे की तरह गलने लगता हूँ।

वहा से उठने लगता हूँ। पर लग रहा है पैरा मे जान ही नही है।

□

8

बिख-बिख आसमान

वह ऐन अंधेरे को ही झाबुआ बस स्टण्ड पर आकर बैठी है। बड़ी व्यग्रता-बेकरारी से पाहुना के आने की प्रतीक्षा कर रही है। जैसे ही मेघनगर से आने वाली कोई बस, बस स्टण्ड पर आकर रुकती है। वह

एक हसीन और खूबसूरत लेकिन गरीबी से तंग वह युवती मजदूरी के लिए निकली लेकिन भूखे भेड़िए उसकी इज्जत लूटने के लिए उसके पीछे लग गए। बाद में उसे एक युवक ने शादी का वादा किया। भगोरिया में युवती उसका इन्तजार करती रही। अन्तत वह आ भी गया लेकिन इस भगोरिया में जब युवती ने उससे कहा कि वह गुलाल लगाकर उसे अपनी बना ले तो युवक के मुंह से दो शब्द निकले उसे सुनकर युवती धड़ाम से जमीन पर गिर गई।

उत्साह उल्लास से थिरकती बस के पास जा दौडती है। बस के ढग-ढाग से खडे होने के पहले ही एडी उचका-उचका कर बस की खिडकी से बस का अदर से मुआयना कर डालती है। पाहुना को उस बस मे नही पाकर, किसी दूसरी बस के आने की सोच वह पुन अपन ठीए पर आ, उसी रा मे उसके आने की प्रतीक्षा करने लगती है।

पाहुना की मोहक छवि, दूध-बतासे सा उसका कोमल-मीठा व्यवहार, उसकी आदमीयत सुरजी के जहन मे फिरकली की तरह घूम रह है। इस साल झाबुआ की तरफ आषाढ के शुरु-शुरु के दिनो मे मामूली वर्षा को छोड फिर कभी बादल भूले भी नही भटके। खेतो म हाथ-हाथ भर की मक्का पानी के अभाव से सूख गई थी। आदमी, मवेशी के लिए अन्न चारा का भारी अकाल पड गया था। आदिवासिया को उधार-कर्ज देने वाले सेठ-साहूकारो ने उन्ह अन्न-पानी, पैसा देने से बुरी तरह हाथ खीच लिया था। वे आदिवासियो को खाता-बही के खाली पन्ना मे, उसके चार-चार पाच-पाच अगूठा लेने के बाद भी बमुश्किल पाच दस सेर अनाज देने लगे थे। इस कारण इधर झाबुआ की तरफ गाव के गाव खाली होने लगे थे। उसके सिर पर छाया ता किसी की थी नही। बाप बचपन मे ही मर गया था। जवान होने के उपरान्त भी अभी हाथ पीले नही हुए थे। सिर पर छाया के नाम केवल प्रौढ माँ थी। उसको वही अपने गाव भगवान भरोसे छोड वह अपने गाव वाला के टोले के साथ गीतमपुरा ईट के भट्टो पर मजदूरी करने आगई थी।

वह भट्टा पर काम करने क्या आई, जसे कोई अनहोनी हो गई हो। भट्टो पर कुछ लोगो का तो वही आकपण वि दु बन गई। उनकी जबान पर बस उसका हो नाम, उसके ही रूप, सौदय, जवानी की चर्चा रहती थी। कुछ शाहदा, ठीलो लाग वाला ने तो उसके कितने ही अभद्र नाम रख रखे थे छप्पन छुरी बिजली परी, वे उसे भूसे भेडिए की तरह आखा ही निगल जाने को जीभ लपलपाते रहते थे। कई उसे फासने के लिए उस नोट दिखाते। कई उस पर किसी और तरह दबाव डाल उसे कब्जाने की हरकत करते। उसकी जान बडी सासत मे आ गई थी। किस तरह उन भेडिया सियारा से वह अपनी आबरू बचाए बस चौबीसो घटे उसके दिमाग मे यही चिन्ता बसी रहती थी। शुरु-

शुरु मे तो जैसे-तैसे अपनी इज्जत बचाती रही। किन्तु जब वह उन भेडियो के कब्जे मे किसी भी तरह नही आई तो वे उसे जबरदस्ती पकडकर चीरने-फाडने को उतारु हो गए थे। तब तो वह हर समय बेहद डरी-डरी, भयभीत, विकल रहने लगी थी। अपनी अस्मत की रक्षा के लिए उसने अपने साथियो से भी गुहार करी। प्रतिक्रिया स्वरूप पहले उनकी आखो मे क्रोध की चिंगारिया फूटी। किन्तु जब उनका ध्यान पेट की ओर गया तो वे बेहद बर्फ, मूक, बहरे, अधे हो गए थे। वहा किसी भी तरह अपनी इज्जत बचती नही देख, एकदिन वह अपनी ही तरफ किसी भी तरह दिन फोड लेने की सोच, उन भेडियो सियारो की निगाह चुका, भट्टो से भाग निकली थी।

जैसे तसे गौतमपुरा रेल्वे स्टेशन पकडा था। दोपहरी तप रही थी उस दिन। आबरू बचाने की चिन्ता मे दो दिन से उसने कुछ पेट मे भी नही डाला था। ऊपर से उसदिन ज्वार की तिजारी और उसे जलाए दे रही थी। दोपहरी मे गाडी चली तो उसे बस डिब्बे का डडा पकडने की याद है। उसके बाद उसके साथ क्या हुआ? उसे कुछ ध्यान नही। उसे होश आया था तो स्वय को पाहुना के क्वाटर मे पाया था। नई अजनबी जगह देख उन्ही भेडियो का ध्यान आने पर वह चीख पडी थी। "बचा बचा म्हारी माई (मा)" तो पाहुना ने बडी कोमलता, स्निग्धता मे उसके सिर पर हाथ फिराते उसे बडी तसल्ली दी थी, घबडा मत हो बाई तू जल्दी ही ठीक हो जाएगी 'डरे मत तू अपने को अपने ही घर समझ—" जब दूसरे रोज उसे अच्छी तरह होश आया तो पाहुना ने उसे बताया था तू डिब्बे मे चढने लगी तो तुझे जोर का चक्कर आया। वह तो तेरा राम रखवाल! मैं तेरे पास ही, स्टेशन पर खडा था। चक्कर आते ही तुझे हाथो हाथ सभाल लिया। नही तो तू गाडी के पहिए के नीचे आजाती।' गाडी के पहिए के नीचे आने की बात सुन वह एडी से सिर तक काप गई थी। उसकी तिजारी उत्तर नही पा रही थी। पाहुना पास के गाव से कम्पाउडर बुलाकर लाया था। कम्पाउडर की फीस दवा-दारू का खर्चा पाहुना ने ही भुगता था। उसके पास तो कानी कौडी भी नही थी। पाच-दस दिन की मजदूरी करी थी, सो वह उन भेडियो के डर के मारे, ठेकेदार के पास ही छोड भागी थी।

पाहुना की तीमारदारी तथा कम्पाउन्डर की दवाइया इन्जेक्शनो से बुखार धीरे-धीरे उतरने लगा था। तबियत मुकाम पर आने लगी थी। शनै शनै पहले की सी आकपक सेहत लौटने लगी थी। दवा-दारु देते वक्त वह पाहुना का स्पर्श पा जाती तो वह भनभना पडती। पाहुना भी उसे मीठी निगाहो से ताकने लगता। पर क्या मजाल उसके व्यवहार मे कभी कोई गदगी, पशुता, हिंस्रपन आया हो। ऐसा भी नही कि वह किसी लायक नही था। बूढा-टेढा अक्षम हो। वह उसी की तरह जवान गबरू हृष्ट-पुष्ट था। ओज तेज से लबालब। आकर्पण दिखनोट। पर जब भी उससे पाहुना की आखो मे देखा पवित्र स्नेह, आदमियत ही दखी। वह उस निहग एकान्त मे उसके साथ कुछ भी कर सकता था। उसके रेल्वे के क्वाटर की बगल मे फकत एक क्वाटर था। उसमे भी एक बूढा "पोटर" रहता था। वह भी दीन दुनिया से बिल्कुल बखर।

सप्ताह तक पाहुना के पास रहने से, वह और नाथसिह आपस मे खब खुल गए थे। सुरजी के मन मे नाथूसिह के लिए अपरमित स्नेह, श्रद्धा, कृतज्ञता भरी रहती थी। नाथूसिह स्टेशन पर नौकरी पर जाने मे पहले जब तक उसके पास क्वार्टर मे रहता, सुरजी उसे शरबती चितवन से देखती रहती। एक सप्ताह मे वह बिल्कुल स्वस्थ हो आई थी। उसकी पहले की सी वही आकपक लुभावनी सेहत लौट आई थी। वही टिपटिपाता उजला, गोरा रग। लम्बी छरहरी देह, बडी-बडी कजरारी आखे। अरुणीय होठ-कपोल। मिथुन मूर्तियो का सा उभरा वक्ष। नहाने से उसका मुख कमल की तरह खिल आया था। कमर तक झूलते उसके लम्बे काले केश बडे दिलकश लग रहे थे। नाथूसिह स्वभाव से बडा मजाकिया था। सुरजी को इस रूप मे देख वह हस हस कर उससे कहन लगा तेरे नाम का तू अथ समझती है सुरजी !?' नाथूसिह पर शहतूती चितवन गडाती वह बोली नथी—(नही)

"अरे ! तू तरे नाम का मतलब भी नही समझती ? तू सूरज की तरह दिपदिपाती है न इसलिए तेरा नाम, सुरजी—" सुरजी लाज से लाल हो आइ। नाथूसिह झरने की तरह उन्मुक्त हसने लगा था। नाथूसिह की तारीफ से सुरजी मन ही मन फूली न समाई। अपने रूप यौवन की उसक मुह से फिर तारीफ सुनने को उसका मन लालायित होने लगा, ओ-आ-ओ झूठी तारीफ मत कर म्हारे म अय्या काई लाल लटक—

'यह तो देखने वाले से पूछ ' नाथूसिह बोला। इस पर तो सुरजी गुलमुहर की तरह लाल हो गई। शरीर मे थरथरी महसूस की उसने। शर्म से उसकी दृष्टि क्वाटर के फर्श पर झुक आई। काफी देर बाद प्रसग बदलती सुरजी नाथूसिह को शरबती चितवन से नहलाती उससे पूछने लगी—'अकेले ही काटर मे थारो तबियत लग जावे रे।?' नाथूसिह फिर मुक्त हसने लगा 'भई वाह! यह भी कोई पूछने की बात। 'दुकेला कहा से लाऊ?' सुरजी की हिरनिया आखो मे बेहद आश्चर्य फैल आया 'काई थारो लगन (शादी) नथी थाई (हुई) ?'

'नही....'

'क्यो ?'

'कोई करता ही नही '

'झूठ बोले। थारी तो दस दस लगन थाय जावे दिखनौट होवा के साथ-साथ रेलवई की सरकारी नौकरी वाला बी '

'तो सही-सही बता दू ,'

'हाँ '

'तेरी जैसी कोई मिल जाए तो आज ही ' कहकर नाथूसिह फिर उन्मुक्त हसने लगा। इस पर तो सुरजी बिल्कुल आरक्त अनारकली हो आई। मारे लाज के उसकी कान की लोर तक दहकने लगी। पूरी की पूरी थरथरा पडी वह। कुछ देर लगी उसे सामान्य हाने मे। अबकी बार आखो मे बेहद मिठास घोलती उसकी आखा मे आख डालती पूछने लगी 'हू (क्या) क्या जात ए थारी ?'

'पटेलिया भील '

'पटेलिया भील ?'

'हाँ '

इतना सुन सुरजी इन्द्रधनुष सी तनी-खिली पूरी की पूरी लरजी। चोर नजरो से उसने फिर नाथूसिह को अपूर्व अनुरक्त भाव से ताका। दृष्टि को फिर फर्श पर झुकाती उगली के पोटुआ से फर्श पर किलकोआ काढती स्वत बुदबुदाई ',ऊपर वाला थारी मन चीती जरूर पूरण करेगा—" पर पता नही क्यो नाथूसिह का मन अजीब हो गया था ?

नाथूसिह उसे लोकल मे बिठाने के लिए स्टेशन पर उसके पास खडा था। लोकल सर से स्टेशन पर प्रविष्ट हुई। स्टीम इज्जन के उस अधरक आगवाले ने सुरजी को नाथूसिह के पास देखा तो अपने मन की निकालने से नही चूका 'क्यो जमादार! तेरे ये ठप्पे! ये सोन चधिया कहा से ' आगवाले की हरकत नाथूसिह को बहुत बुरी लगी। यह स्साला आगवाला आगे भी पता नही नाथूसिह उसे क्या-क्या गाली देता रहा।

'ले यह मेघनगर का टिकट ' नाथूसिह ने सुरजी का ध्यान बटाया।

'हा यह जरूरी, नही तो रास्ते मे टीटी पुलिस ' सुरजी ने टिकट चोली मे खुडेस लिया। फिर पूरी शिद्दत से नाथूसिह को उसके वायदे की याद दिलानी कराने लगी, तो फागण मे , भगोरिया हाटो के टैम म्हारे गाव जरूर आना पाहुना—

'हाँ जरूर ' नाथूसिह ने उसे आश्वस्त किया। 'जरुर नही तुझे आना ही है पाहुना हूँ थारी रोज रोज वाट लूगी दिन गिन गिन ' उसकी आवाज बहुत भारी हो आई थी। गाडी ने सीटी मारी तो वह बहुत व्याकुल हो आई। वियोग की सी अग्नि मे जलते हुए उसकी आंखो मे पानी बलबलाया 'थू तू जरूर जरूर आज्यो ' गाडी जब तक शून्य मे नही खो गई। वे दोनो एक दूसरे को अपलक देखते रहे। गौतमपुरा की घाटी म उस दिन पूरी शिद्दत से चाँदनो खिली थी। चाँदनी की ही तरह खिली खिली सुरजी को याद कर नाथूसिह उस शाम बहुत उदास हो आया था। पर उसके मन मे दूसरी बात भी आ रही थी।

सूरज दूर खोपडी पर आकर बैठा है। पर नाथूसिह के आने का अभी काई ठिकाना नही। सुरजी बहुत उदास, निराशा, मायूस हो आई

है, वह मन ही मन शका—कुशका करने लगी है 'शहरी लोगो का काई भरोसो ? पत पाड भी दें.... न भी पाडे ! . गाव वालो की वनिस्पत उनमे मोह-प्रीति कम ही रहे। नाथूसिंह ने भी उसे टरकाने के लिए कही झूठ माठ वायदा कर दिया हो नही तो उसके कहे मुताबिक अबतक उसे आ जाना चाहिए। नाथूसिह का चेहरा उसके दिमाग मे उभर आता है। चेहरे से तो बिल्कुल नही गलता कि उसने झूठा वायदा किया हो। नाथूसिह के आने का उसे पूरा भरोसा हो आता है। वह अपने ठीए से हुकमती बस स्टैण्ड की टिकट खिडकी पर आ पहुँचती है। 'क्यो र टकट बाबू ! मेघनगर से अबी कतरी और बसा आवेगा ?'

'तीन और '

सुरजी फिर से अपने स्थान पर आ प्रतीक्षा के दीप बालती मेघनगर की तरफ मुह कर बैठ जाती है। काफी देर बाद एक बस मेघनगर की तरफ से आती उसे दिखाई देती है। बस देख वह उडीसी लगती है। बस के ठीक तरह खडे होने के पूर्व ही एडी उचका बस की खिडकी से बस के अदर देखने लगती है। अबकी बार वह क्वार के कास की तरह फूल आती है। बस मे नाथूसिह बठा उसे दिख जाता है। वह लपक कर बस मे चढ जाती है। अपूर्व आनद-उत्साह से नाथूसिंह का हाथ पकड उसे उतारने लगती है 'वडी देर कर दी रे तूने आबा मे देख थारी बाट नाडते-नाडते मैं कतरी पिरा '

एक दूसरे से दूर-दूर स्थित बीस-तीस कच्चे घरो का लोमडी गाव। गोबर-माटी लिपे-पुते एव कच्चे घर मे बटी एक प्रौढा सुरजी के साथ नाथूसिह को देख हुलस पडती है। झटपट उसके लिए सन की खाट पौढा देती है। खाट पर नई नकोर दरी। बतासे घोल उसे शबत पिलाती है। पाहुना के यहा आने पर पहले पहल यहा इसी तरह स्वागत सत्कार किया जाता है। सुरजी घर के अन्दर जा झटपट नया घाघरा काचली-कब्जा पहन आती है। मांग-पट्टीकर आखो मे काजल आज लेती है। वह बेहद उत्तेजक, मोहक, नशीली लग रही है आज। उसका रूप, यौवन कासे की थाली की तरह खिले पूनो के चन्द्रमा की शारदीया चादनी की तरह दिपदिप कर रहा है। आन द-उत्साह मे वह चिहुक चिहुक प[illegible] है। सुरजी बेहद मोहक-मीठी चितवन नाथूसिह पर डालती

जब तक रोटी बने भगोरिया हाट घूम आए ' नाथूसिंह का वह हाथ थाम लेती है। नाथूसिंह स्वचालित सा खटिया से उठ लेता है।

'इस तरह चलेगा हाट मे पाहुना ?...' सुरजी उसे देख खिलखिला पडती है। नाथूसिंह को लगता है—जसे हरसिंगार के ढेर-ढेर फूल झर रहे हो।

नाथूसिंह कुछ पूछे उससे पूव ही 'ऐसे नही ऐसे ...' सुरजी उसे पेंट-कमीज की जगह घटनो तक का पजा धारियो वाली लठ्ठा की कमीज, सिर पर फटा बाघ देती है। बाजुग्रो मे तीर-कमान का थैला। कमर मे गोफन। हिरनी की तरह कुदकती सुरजी नाथूसिंह को हाट की तरफ दौडाए ले जा रही है। सुरजी के गुनगुने स्पश से नाथूसिंह ग्रजीब मद मे डूब डूब पड रहा है।

एक लम्बे-चौडे मैदान मे हाट लग रही है। तरह तरह की दूकान वहाँ लगी हुई है। रग-बिरगे परिधानो मे ग्रसरय नसाटी ग्रानन्द उल्लास मे थिरक रहे है। भील युवक-युवतिया उन्माद-उत्तेजना मे ग्राकठ डूबे हुए है। ढोल-तासा, मजीरो, बासुरी की लय पर गाते प्रम गीतो मे वे लरज-लरज पड रहे है। पूरा का पूरा माहौल गम-गर्म सासो, ग्रबीर-गुलाल से बेहद गमकता। सुरजी नाथूसिंह का हाथ छोड एक दूकानदार से गुलाल की पुडिया बधवाती है। इधर नाथूसिंह देखता है एक भील युवक ने एक भील युवती के कपोला पर गुलाल मल दिया है। ग्रोर वे दोनो किसी ग्रज्ञात स्थान की ग्रोर दौडने लगते है।

ग्रपरमित शहतूती ग्रनुराग मे लबालब सुरजी नाथूसिंह की ग्राँखो मे ग्राँख डालती है। तू लगन के लिए मेरी जैसी छोकरी चाहता है न ग्रपनी जसी कहाँ ढूढू ले मैं ही तेरे लिए ' लाज मे पूरी की पूरी ग्रारक्त होती सुरजी गुलालभरी पुडिया नाथूसिंह की ग्रोर बढाती है व ग्रपनी दृष्टि जमीन पर झुका लेती है। नाथूसिंह उसे ग्रवाक सा देखता ही रह जाता है। कुछ करता नही। 'तू ग्रब ग्रोर काई चावे ?' ' ग्रनुराग-उल्लास मे नदिया सी उफनती सुरजी पुन नाथूसिंह को ग्रपन कपोला पर गुलाल मल उसे कही ले भागन के लिए प्रेरित करती है। नाथूसिंह के मुह स बडी मुश्किल से बोल फूटते है, मैं तो सुरजी '

'ग्रौर काई ?' 'साफ साफ बोल' सुरजी उसका मुख ताकने लगती है।

"मै तो विवाहित हूँ सुरजी ! "

"थारी लगन थायी गई ?" एक ही क्षण मे सूरजमुखी सी खिली सुरजी मुरझा जाती है।

"हाँ "

"उस दिन तो तूने " उसका रग-रग विषाद मे डूब आता है।

"मजाक ही मजाक मे मुह से झूठी बात निकल गई घरवाली उस समय पीहर गई हुई थी—तुझसे छल करना ठीक नही।"

"साच-साच बता मजाक मत कर मुझे भरोसा नही"

'मैं साच साच ही बोल रहा हूँ सुरजी मैं विवाहित हूँ ...।"

सुरजी का चेहरा एक दम राख हो जाता है। उसकी टागे कापने लगती है। हाथ मे ली गुलाल की पुडिया उसके हाथ से छूट पडती है। हल्की सी चीखती जमीन पर गिर पडती है। क्षणाश तो नाथूसिंह उस दृश्य को देखता ही रह जाता है। लेकिन पलक झपकते ही वह उसे जमीन से उठाने को लपकता है। लेकिन सुरजी को अपने तन का कुछ होश नही। नाथूसिंह के उठाने पर वह बार-बार गिर-गिर पड रही है। घबराकर नाथूसिंह उसे होश मे लाने के लिए पास से पानी लेने दौड पडता है।

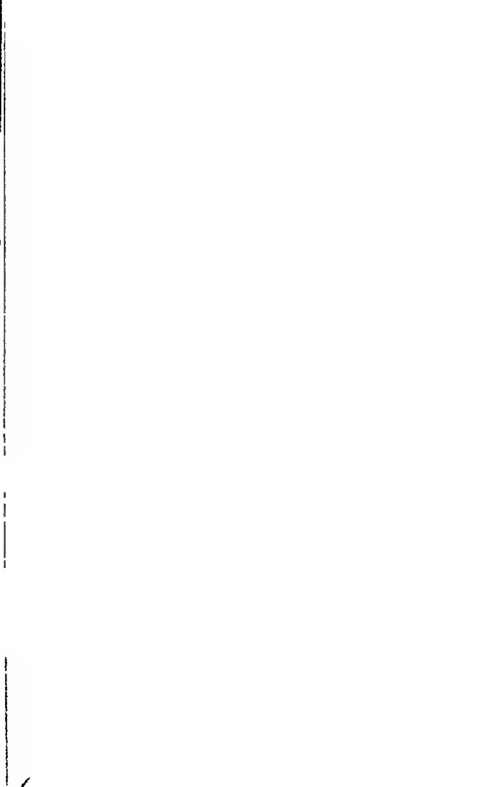


इतवार

को छुट्टी थी। उसका
समय हो गया था और पर
करने को कोई काम काज नहीं
था। सो सुबह ही सुबह उसने
मित्र पास दिया।

फ्लैट का दरवाजा बन्द था।

"पहले तुम मेरी पूरी बात सुन लो सुबोध भाई! यह सृष्टि नर-नारी के ही कारण तो अस्तित्व मे है। सब मेरी तरह ही होते तो संसार का यह रूप होता? मैं कितना जड मूर्ख निकला कि कुदरत के शाश्वत नियम को ही चुनौती देने लगा आज मेरा कोई हमसफर होता तो इस त्रासद को प्राप्त होता? मैं अपने अनुभव के आधार पर कहता हूँ बिना अन्तरंगसाथी के जीवन की कोई सार्थकता नही।"



9

भूले-भटके

इतवार का दिन था। ऑफिस की छुट्टी थी। उससे मिले काफी समय हो गया था और घर पर भी करने को कोई खास काम नहीं था। सो सुबह ही सुबह उससे मिलने चल दिया।

फ्लैट का दरवाजा बन्द था।

"...तुम मेरी पूरी बात सुन लो सुबोध भाई!
...के ही कारण तो अस्तित्व में है।
...तो संसार का यह रूप होता? मैं कितनी
...किया कि कुदरत के शाश्वत नियम
...आज मेरा कोई हमसफर होता तो
...? मैं अपने अनुभव के आधार
...के जीवन की कोई सार्व...

"अब तुमसे क्या झूठ बोलू सुबोध भाई वात— शादी से मे तुम्हे तग करते करते मुझे शम सकोच होने कराता तो तुम मुझे वहा अस्पताल मे रहने नही ?" आखिर किसी चीज की कोई हद भी होती है।"

"इसका मतलब दु ख-तकलीफ मे अपने आदमी के लिए भटकते फिरे ?"

"नही नही मेरा यह मकसद नही खैर माफी नाराज मत होओ बैठो " मै पास ही पडे एक सोफे पर बैठ

'अब तबियत कैसी है ,? चाहो तो वही घर ही चलो। उससे फिर कहा।

"नही , नही— अब जरूरत नही अब तो ठीक हूँ— पीएच डी वाली लडकी मेरी देखभाल कर रही है।"

"यह फ्लट की हालत क्या कर रखी है ?"

' क्या बताऊँ सुबोध भाई ! परेशानियाँ आती है तो सब ओर से एक साथ .. नौकर का बाप मर गया है— सो वह छुट्टी मे सारा काम वह लडकी ही " वह पलग से उठ खडा हुआ "सुबोध भाई ! जरा फ्रैश हो आऊँ। फिर चाय-वाय " वह अन्दर चला गया।

मैं और उमेश एक ही जगह के है। एक ही मोहल्ले के। अडौसी-पडौसी भी। यह भी सयोग कि हम दोनो एक ही स्कूल कॉलेज मे पढे। एक ही यूनिवर्सिटी से मास्टर डिग्रिया ली। मैं एम ए करके पोस्ट आफिस मे लग गया और उमेश पीएच डी करता रहा। पीएच डी के बाद वह कालेज मे लेक्चरार हो गया। इसे भी सयोग ही कहा जाएगा कि हम दोनो एक ही शहर मे कार्यरत हैं। उमेश अपने माता-पिता की इकलौती सतान था। उसकी मा तो बचपन में ही स्वग सिधार गई थी। पिता ने ही उसका लालन-पालन । उमेश की नौकरी लग जाने पर उसके पिता की बडी जीवन मे प्रवेश करे। पर पता नही क्यो बिदकता जसे नाक मे नाथ डालने से डी की तो

मैंने बैल बजाई। भीतर से महीन, पतली पतली आवाज आई "कौन.. ?"

'मैं हूँ भई। दरवाजा खोलो"—मैंने बाहर से कहा।

"अच्छा सुबोध भाई। आओ। आओ। दरवाजा भीतर से बन्द नही, वसे ही उढका हुआ है।" मैं दरवाजा खोल भीतर पहुँचा। फ्लट मे काटने वाला एकान्त पसरा हुआ था। दीवाल पर रेगती गिलहरी टिहक टिहक कर रही थी। फ्लैट मे साफ सफाई का भी नामोनिशान नही था। फश पर कचरा पडा था। चीजें अस्त व्यस्त बिखरी पडी थी। मैं उसके सोने के कमरे मे पहुचा। वह पलग पर लेटा हुआ था। उसकी खिचडी दाढी बढी हुई थी। बहुत कमजोर लग रहा था। चहरे पर पीला पन था। कपोलो की हड्डिया निक्ली हुई थी। मैं यकायक उसे इस तरह देख चौका "यह क्या उमेश ?" वह पलग पर उठकर बैठ गया।

"बीमार पड गया था यार ?"

"बीमार ? कब ?"

"हो गये बीसेक दिन।"

"क्या हो गया था ?"

"टाइफाइड तीन ही दिन हुए है अस्पताल से आए। वही भर्ती था।"

"तुम इतने बीमार हो गए और हमे तुमने खबर तक नही की।"

"खबर क्या यार ? वह अपनी दाढी खुजलाने लगा। "एकाएक तबियत खराब हुई। नौकर पास ही था। सो वह मुझे सीधे प्राइवेट अस्पताल ही ले गया।"

"ठीक है वह तुम्हे सीधे अस्पताल तो ले गया। लेकिन वहाँ से तो खबर हमे करा सकते थे।" जैसे उसका झूठ पकड लिया हो। वह सिटपिटा गया।

वात— शादी से

?"

ती

"अब तुमसे क्या झूठ बोलू सुबोध भाई
मे तुम्हे तग करते करत मुझे शर्म सकोच होने
कराता तो तुम मुझे वहा अस्पताल मे रहने नहा
आखिर किसी चीज की कोई हद भी होती है।"

"इसका मतलब दु ख-तकलीफ मे अपने आदमी
के लिए भटकते फिरे ?"

"नही नही मेरा यह मकसद नही खैर माफी
नाराज मत होओ बैठो " मै पास ही पडे एक सोफे पर बै०

'अब तबियत कैसी है ,? चाहो तो वही घर ही चलो ,
उससे फिर कहा।

"नही नही— अब जरूरत नही अब तो ठीक हूँ—
पीएच डी वाली लडकी मेरी देखभाल कर रही है।"

"यह फ्लैट की हालत क्या कर रखी है ?"

'क्या बताऊँ सुबोध भाई! परेशानिया आती ह तो सब ओर से
एक साथ नौकर का बाप मर गया है— सो वह छुट्टी मे सारा काम
वह लडकी ही " वह पलग से उठ खडा हुआ "सुबोध भाई! जरा फ्रैश
हो आऊँ। फिर चाय-वाय " वह अन्दर चला गया।

मैं और उमेश एक ही जगह के है। एक ही मोहल्ले के। अडोसी-पडोसी भी। यह भी सयोग कि हम दोनो एक ही स्कूल कॉलेज मे पढे। एक ही यूनिवर्सिटी से मास्टर डिग्रिया ली। मैं एम ए करके पोस्ट आफिस मे लग गया और उमेश पीएच डी करता रहा। पीएच डी के बाद वह कालेज मे लैक्चरार हो गया। इसे भी सयोग ही कहा जाएगा कि हम दोनो एक ही शहर मे कार्यरत है। उमेश अपने माता-पिता की इकलौती सतान था। उसको मा तो बचपन मे ही स्वर्ग सिधार गई थी। पिता ने ही उसका लालन-पालन किया। उमेश की नौकरी लग जाने पर उसके पिता की बडी इच्छा थी कि वह गृहस्थ जीवन मे प्रवेश करे। पर पता नही क्यो उमेश विवाह के नाम पर ऐसा बिदकता था जसे नाक मे नाथ डालने से बछडा। पिता ने लाख कहा पर उसने शादी नही की तो

नही ही की। पिता बहू पोते का मुख देखने की लालसा लिए ही स्वगवासी हो गए।

तभी उस युवती न प्रवेश किया फ्लैट मे। उमेश लगे हाथ शेविंग भी करने लगा था। दिन अब काफी चढ आया था। कमरे में खूब धूप फल आई थी। जाड की धूप सुघड बाल की तरह अच्छी लग रही थी। युवती को आया देख उमेश प्रसन्न हो उठा "आओ सरला!" युवती ने उसे तथा मुझे नमस्ते की। युवती के बारे मे मुझे दिये गए परिचय मे उमेश ने कुछ और शब्द जोड दिये "कथा लेखिकाओ मे सघप चेतना" पर शोध प्रबन्ध लिख रही है।

"सर! मै पहले फ्लट की सफाई कर देती हूँ।" और जैसे वह इस काम के लिए पहले से ही तयार होकर आई हो। कपड बदल वह फ्लट की सफाई मे जुट गई। कुछ ही देर मे फ्लट चमका डाला। इधर-उधर बिखरी वस्तुएँ उसने करीने से लगा दी। फ्लैट अब चमचम करने लगा था। सूखी पडी बगीचो मे उसने नल खोल दिया था। बगीची की मिट्टी से सोधी-सोधी गध उठ रही थी। हम तीनो से अब फ्लैट भरा भरा सजीव लग रहा था। इस दौरान उमेश तीन कप चाय तैयार कर ले आया था। हम तीना ने चाय पी। लडकी हाथ मुह धोकर भोजन बनाने मे जुट गई। उमेश गुसल घर मे चला गया था।

उस दिन भी शायद इतवार ही था। उमेश मेर घर पर ही था। भोजन आदि से निवृत्त हो दोपहरी मे बच्चे एक अलग कमर मे खेल रहे थे और मैं, पत्नी तथा उमेश एक कमरे म यो ही गप शप लगा रहे थे। उमेश उस समय कोई पतीस के पेटे मे रहा होगा। जानते हुए भी पत्नी को एकाएक पता नही क्या सूझा। उमेश से कहन लगी "अब तो आप शादी कर ही डालिए लालाजी! बहू का मुह देखन की बडी इच्छा है।" जसे सुघनी प्रयुक्त न करने वाले व्यक्ति को अचानक सुघनी सुघा दी हा। उमश का प्रसन्न मुख एकाएक तमतमा आया। पर पत्नी से उसने वहा कुछ नही। फिर भी पत्नी उसे खाद खोद कर पूछती रही "चुप क्या हैं लालाजी? बताइए न।" अब उमेश का स्वर कडवा हो आया "आप सारी बाते करिये भाभीजी पर इस शादी वादी के बारे मे नही—"

क्यो नही करें आपसे शादी वादी के बारे मे बात— शादी से आपको इतनी चिढ क्यो है ?"

उमेश बुरी तरह चिढ गया "क्या धरा है शादी-वादी में— ?" मनुष्य दूसरो की सुख सुविधा के लिए जिये कोल्हू का बैल बने— वह मरता खटता रहे दूसरे उसकी छाती पर ऐश करते रहे " पत्नी उसकी बात का उत्तर देने को उद्यत हुई। पर वह तो उसकी सुनने को कतई तैयार ही नही था। बस अपनी ही दागे जा रहा था "शादी से मनुष्य शरीरिक-मानसिक रूप से गुलाम बन जाता है उसका शोषण होता है निश्चित दायरे में ही चक्कर काटते हुए वह बेहद परम्परा-वादी—अप्रगतिशील रूढिवादी बन जाता है। मैं इस घोर शोषक प्रक्रिया के सख्त खिलाफ हूँ। मैं अपने पैरो मे बेडी नही डाल सकता। स्वतन्त्र— स्वछन्द— उन्मुक्त बधन रहित जीवन जीना चाहता हूँ— दूसरो की खातिर स्वय को कुर्बान नही कर सकता नही कर सकता " कहते-कहते उमेश का मुख लाल हो आया था और वह हाफने लगा था।

पत्नी यह सुन अपमान बोध से बुरी तरह ग्रसित हो आई थी। मैंने उसे इशारे मे समझाया क्यो इस उद्दड रुखे— लाठीमार आदमी मे अपना अपमान कराने पर तुली हो अपना काम इसे सिफ समझाना माने न माने इसके ऊपर जोर क्यो देती हो ?"

दोपहर हो आई थी। हम तीनो फ्लट के लॉन मे बैठे थे। तेज ठड मे धूप बडी राहत पहुँचा रही थी। उमेश के चेहरे पर अब उस एकाकीपन के तनाव का कोई चिह्न नही था। इस समय वह प्रसन्न चिन्ता रहित दीख रहा था। वह युवती से बोला "सरला! स्टडी रूम से किताबे ले आओ। कुछ काम करे। बहुत समय हो गया थीसिस के काम को हाथ लगाए " लडकी ने अपने काले-घुघराले केशो की वेणी को झटका दे पीछे किया "आज नही सर।"

"क्यो—?"

"मुझे अभी घर वापस जाना होगा— कुछ गैस्ट आ रहे है आज वहाँ।"

"अरे भई इन गैस्ट वैस्ट के चक्कर में मत पडो। अपना काम पहले। नही तो समय के भीतर थीसिस पूरी नही हो सकेगी।

"लेकिन सर! वे तो वे "

"कौन ?"

"आपको बता रहे थे न सर, पापा उस दिन "

"मतलब तुम्हारी एगेजमैन्ट के सिलसिले मे— लडका आज तुम्हे देखन आ रहा है ?"

युवती की आंखो मे लावण्यमयी चचलता थी। अत्यधिक प्रसन्नता थी और फिर लाज-शर्म से आरक्त अनारकली हो आई।

"जी सर। " युवती की गदन नीची थी। फिर वही काले घुघराले केशो की वेणी सामने झूल आई थी। मैंने अनुभव किया युवती के रूप सौन्दय-यौवन से पूरा का पूरा लॉन दिप दिप करने लगा है। उमेश भी उसके रूप-सौन्दर्य को एकटक निहारे जा रहा था।

"फिर तो तुम शाम को भी नही आओगी ?" उमेश ने उससे पूछा।

"जी सर। "

"अच्छा। " उसके चेहरे पर पशोपेशी के चिह्न थे "जाओ भई ऐसी बात है तो " कहते-कहते उसके चेहरे पर मायूसी घिर आई थी।

सूरज अब अपन विश्राम स्थल पर जाने की तयारी म था। पक्षी अपने बसेरा के लिए लौटने लगे थे। युवती के जाते ही पलट मे फिर एकाकीपन पसरने लगा था। हम दोनो स पलट दब नही पा रहा था। मुझे भी अब वहां बोरियत होने लगी थी "चलू यार। –" मैं कुर्सी से उठा। तो उसने मेरा हाथ थाम लिया "बैठो चले जाना यार। " उसके आग्रह पर मैं बठ गया। पर मन को अब और वहा बठना रुचिकर नही

लग रहा था। कुछ देर वाद मैं कुर्सी से फिर उठा "अब तो चलता ही हूँ पूरा दिन हो गया यहा तुम्हारी भाभी को कुछ शापिंग करनी टाइम से नही पहुँचा तो लडेगी "

"आठ वजे तक चले जाना—"

"अरे नही बहुत समय हो जायेगा वाजार नही जा सकेंगे "

"मेरी रिक्वेस्ट है " वह बुरी तरह रिरियाया।

मुझे आश्चय था—वह वेहद एकान्त प्रिय कठोर, रूखा, निर्मोही निरा भौतिकतावादी इस तरह क्यो कर रहा है "आठ वजे तक रुकने की कोई खास वजह—?"

"क्या बताऊँ यार? अकेले मे मुझे अब बहुत घबराहट होती है। रोजाना शाम के आठ वजे तक यह लडकी मरे पास रहती थी। खाना खा पीकर तब तक मुझे नीद आ जाती थी। सुबह फिर जल्दी आ जाती थी। एकान्त नही अखरता था—घबराहट नहीं होती किन्तु आज "

"ऐसी बात है तो रुक जाता हूँ— यह घबराहट शायद तुम्हारी बीमारी की कमजोरी के कारण ?"

'अशत यह कारण हो सकता है। पर मन मे घवराहट तो विगत एकाध साल से बीमार होने के पहले से ही रहती है।"

"अच्छा ?"

"हाँ " और वह विचलित हो प्याज से छिलके उतरने की तरह परते सुलझाने लगा "मन मे केवल घबराहट ही नही रहती इस उम्र मे मन और भी तरह तरह की असभाव्य इच्छाएँ करता है कोई छाया की तरह मेरे साथ हर समय रहे मेरी आहत भावनाओ को सहलाये मरहम लगाए मेरे दु ख-सुख मे सतत हिस्सेदारी करे - और इन सबकी प्राप्ति सभव है तो सिफ पत्नी नामक प्राणी से— बाकी इतनी अन्तरगता और किससे ?" उसके मुख से ऐसी बाते सुन मुझ अत्यधिक आश्चय हुआ। उससे कुछ पूछ लेकिन वह तो मुझे कुछ कहने का अवसर

ही नही दे रहा था "तुम्ह प्रपने बीवी बच्चा के लिए खटते देख मुझे तुम्हारे ऊपर बडी दया आती थी लेकिन अब मैं महसूसता हूँ कि जो शान्ति सतोष आनन्द दूसरो को तृप्त सुश देखने मे है वह सुख-सतोष विशुद्ध आत्मजीवी भौतिकवादी केवल खुदी के लिए ही ऊहा ऊहा करने वाले व्यक्ति के जीवन मे कहाँ ?" मैं अत्यधिक आश्चय चकित हो आया। फिर मैं कुछ कहने को हुआ। लेकिन उसने तो उस समय मेरा एक भी शब्द सुनने की कसम ले रखी थी। वह अपनी रो मैं था "सुबोध भाई ! काम के कारण जरा सी भी देरी से तुम्हारे घर पहुँचने पर भाभी के चिन्ता-तनाव ग्रस्त चेहरे पर तुम्ह देखते ही प्रसन्नता—सुखकी जो रोशनाई फल जाती है बच्चे पापा पापा करते तुमसे लिपट जाते हैं इस प्रेम-स्नेह-मोह-ममत्व केबिना जीवन कितना महत्वहीन, निरीह बेमतलब पता नही कैसे थोथी सिरफिरी नितात भौतिक विचारधारा के जाले मे फस गया इस स्थिति का भोग रहा हूँ शादी नही की। किसी दिन ऐसे ही अकेला मर जाऊँगा मेरे ऊपर दो आसू बहाने वाला भी कोई नही होगा पुलिस के हाथ की लकडी मिलेगी। नौकरो न भी किसी को निहाल किया ?"

है ए-ऐं-ऐं ऽऽऽऽऽ !! ?"

"पहले तुम मेरी पूरी बात सुन लो सुबोध भाई ! यह सृष्टि नर-नारी के ही कारण तो अस्तित्व मे है। सब मरी तरह ही होते तो ससार का यह रूप होता ? मैं कितना जड मूख निकला कि कुदरत के शाश्वत नियम को ही चुनौती देने लगा आज मेरा कोई हमसफर होता इस त्रासद को प्राप्त होता ? मैं अपने अनुभव के आधार पर कहता हूँ बिना अ तरगसाथी के जीवन की कोई सार्थकता नही वह जीवन आधा अधूरा बेमतलब।" उसकी बातें सुन-सुन मुझे अपनी उपस्थिति का ही भान नही था।



10



अब दोपहरी ढल गई थी। धूप की तपिश बहुत कुछ कम थी। वह बस स्टैंड के टीन शैड के नीचे से उठी। उठते-उठते शैड की छत की ओर उसकी यों ही निगाह चली गई। शैड के नीचे की दीवार में एक आला था। आले में कपोत-कपोती का जोडा। कपोत कपोती के सामने

दोनों ने हमसफर बनने के कैसे रंगीन झिलमिल करते सपने बुने थे। पर बापू जो बन गए थे जन्म-जन्म के बैरी। उन्होंने ही राखकर दिए उनके रेशमी कोमल सपने। उनकी निगाह उस नीच कैलाशी के बाप के धन-वैभव पर जा अटकी थी। वह कुकर्मी अपने बाप की इकलौती औलाद था। बापू ने सोचा था कि उनकी सोन-चिरैया वहाँ पहुँच आनन्द ही आनन्द करेगी। उन्होंने मोहन को ठुकरा दिया था।

फिरकैया ले-लेकर नाच रहा था। 'गुटर गू गुटर गू' का उसे गीत सुना रहा था। कपोती उसके प्रेम मे डूबी, उस पर निछावर हुई जा रही थी। यह देख उसे याद आया—वह भी कभी उसे इसी तरह उसके ठेठ अतस के प्रेमरस से सरावोर किया करता था। वह भी इसी कपोती की तरह उसके प्रेमरस मे आकठ डूबी उस पर निछावर होने को आतुर रहती थी। अब कहाँ वे दूध-बतासे से मीठे कोमल-सुहाने दिन। वे तो कभी के ही उड गए उनकी जिन्दगी से, फिर कभी पिजरे मे न आने वाले पखेरू की तरह। सद आह भरी उसने। वेंच से थैला काख मे दवा मुख्य सडक पर आ गई। सडक के उस तरफ कुछ फासले पर सिनेमा हाल था। उसमे कोई अच्छी सामाजिक फिल्म चल रही थी। टिकटो के लिए लोग टिकट खिडकी पर धक्कमपेल कर रहे थे।

सडक पर एक तरफ खडे रिक्शा वाले को उसने टेरा 'सदर अस्पताल चलेगा भैया ?'

'चलूगा ' वह रिक्शा मे वैठ गई। विचारो के पखरु एक बार पख फडफडाकर उड तो निकले। फिर वे यो ही थोडे शात होकर वठते हैं। वह फिर विचारा मे बहने लगी—वह वचपन मे उसके गाँव अपने नाना के यहाँ पढने आया था। शायद उसके गाँव मे स्कूल नही रहा होगा। वह उसी के स्कूल म भर्ती हुआ था। उसके नाना उसके पडौसी भी थे। सो स्कूल म तो दोनो साथ-साथ रहते ही थे। लेकिन घर पर भी दोनो साथ-साथ उठते वठते, खेलते-कूदते थे। बचपन के दिन भी वे कैसे सुहाने थे ? अब भी उसके दिमाग मे जिल्द बद किताब की तरह सुरक्षित है—वह हसते-खिलखिलाते ताली पीट पीट लगडी-लगडी खेलना। वरसात की झडी मे खूब नाच-नाच नहाना छुट्टी के बाद उसकी पढाई तो वद हो गई थी। पर वह कस्बे के स्कूल की पढाई पूरी करने म सलग्न रहा था। अब भी स्कूल के समय को छोड दोनो को सग सग रहना-सहना जारी था। अब कभी वे खेतो म चारा काटने जाते। कभी खेतो म ढोर-डगरा का साथ-साथ चराते। बचपन किशोरपन की वह मित्रता यौवन की दहलीज पर आ इस रूप मे हो आई थी।

सहसा उसकी निगाह सामने से आते आदमी पर पडी। उसने तुरत रिक्शा रुकवाया। जब तक आदमी सडक के दूसरी तरफ से अपनी रो

मे सर्र से आगे निकल गया था। वह रिक्शा वाले को किराया दे उस आदमी के पीछे हो ली। उसको आवाज देने लगी 'रुकज्यो मोहन ऽऽऽऽ मोहन रुकज्यो ऽऽऽऽ' आदमी आवाज पर रुका, अपने पास उसके आने का इतजार करने लगा। वह ऐन उसके पास आ गई तो आदमी आश्चर्य मे फूट पडा 'अरे सरवती तू यहा !   कसे   ?'

'था ई अठी आसको ..म्हा नही....?' भिडतें ही सरवती ने उससे परिहास किया। दोनो के मध्य डोलती समय की दूरी, हिचकिचाहट कपूर की तरह उड गई थी। प्रत्युतर मे मोहन भी हँसा, 'क्यो नही आ सकती जरूर जरूर.... पर मेरा पूछने का मतलब गांव से इसे काले कोस दूर यहाँ कोटा कैसे ? मैं तो यहा आज-कल कृषि-विभाग मे नौकरी करता हूँ।'

'तुम्हारी सरकारी नौकरी लग गई'

'हाँ ऽऽऽऽ'

'या बढिया बात री। नही तो आजकल सरकारी नौकरी,

मैं भीमसिंह अस्पताल मे दिखाने आई ऊँ

'क्या तकलीफ है ?'

'कभी-कभी पेट मे ऐसा तेज दद होवे कि प्राण ही नही निकलें वाकी तो सारी गति....' सीने से सरक आए आचल को सरवती ने ठीक किया।

'सग मे कौन है ?' मोहन जेब से रुमाल निकाल मुह पोछने लगा।

'सग मे कौन आएगा....? ल-देकर बूढे बापू। उनको भी रात मे रतौंध आती है। उन्हे साथ लाती तो उल्टे मुझे ही उनकी सार-सभाल करनी पडती।'

'कलाणी क्या नही आया ?' मोहन के इस प्रश्न पर सरवती गुम पड गई। गर्दन नीचे कर पैर के अगूठे से सडक कुरेदने लगी।

'बताया नही तूने ?' पुन मोहन ने उसे कुरेदा। सरवती रोनी सी हो आई 'जले पर नमक कांई नी छिडक रिया औ मोहन जी ?'

'जले पर नमक ?'

'नही तोऽ ऽ ऽ ऽ'

पास से गुजरते राहगीर उन दोनो को घूर-घूर निकल रहे थे। मोहन को सरे राह इस तरह बात करना उचित नही लगा 'चल वहा पाक मे बैठते है।' विवेकानद पाक में आ गए दोनो। पाक में करीने से कटी हरी कच्च मेहदी बहुत अच्छी लगी सरवती को। दोना नीचे ही कोमल हरी घास पर बैठ गए। मोहन ने फिर वार्ता का तारतम्य बैठाया, 'तू गलत समझ रही सरवती। मैं तो उसके लिए इसलिए पूछ रहा कि इत्ते बड शहर मे तू अकेली। वह भी बीमारी की हालत में। औरत जात अलग। बडे शहर मे साले बीस बवाल।'

'तुम उस नीच का मुझसे जिक्र ही मत करो। सरवती के चेहरे पर घृणा की मोटी मोटी परतें थी। दृष्टि पाक में खडे शीशम के पेड पर। कुछ देर बाद आखें पनियायी सी हो आई उसकी। फिर मोहन ने इस सबध मे कुछ और पूछना मुनासिब नही समझा, 'अच्छा मत बता मत बता पर रो मत कोई नही तो मै चलता हूँ तेरे साथ अस्पताल।'

'रहने दो तुम कांई करोगा म्हाने कोई नही खाय ?'

'नही भई। मरीज के साथ अस्पताल मे किसी का होना बहुत जरूरी है।'

वार्ड मे अव्यवस्था का राज था। सरवती परेशान रहती थी। सुबह-शाम तो मोहन उसके पास रहता, सो इस समय का उसे पता तक नही चलता। बीच के समय को पास की बडवाली के सहारे काट लिया करती थी। पर उस दिन पास की बडवाली को अस्पताल से छुट्टी मिलने की खबर उसने सुनी तो वह अधिक परेशान हो आई। अब वह अकेली यहाँ कसे रहेगी ? अब तो बातचीत के लिए भी वह तरस जाएगी। यहाँ सब अजनबी, अचीन्हे बेडवाली तथा वह एक ही दिन वाड में भर्ती हुई थी। पास-पास पलग मिला था, दोनो को। एक ही तरफ की दोनो निवासिनो थी। सप्ताह भर के ही साथ में दोनो में बडा बहनापा जुड आया

था। एक-दूसरे की दु ख-तकलीफ मे एक दूसरी को तसल्ली धीरज बधाती थी। अस्पताल से वाखैरियत छुट्टी मिलने पर बैंड वाली बडी खुश थी। अपने मद के साथ वापस अपने बाल वच्चो मे जाने की खुशी उसके चेहर पर दमक रही थी। चालू जी ? बैंड वाली ने उसकी इजाजत चाही।

'हाँ जाओ- राजी-खुशी जाज्यो—' सरवती वाड के मेन गेट तक तक उसे छोडने गई। विदा करते समय उसका गला भारी हो आया था। 'हाऽऽऽऽ पर था घवडाज्यो मत अब दो चार राज मे थाकी भी छुट्टी ? "हा अब म्हा भी दो-चार रोज मे घरा " कहने को तो सरवती कह गई, पर घर के नाम उसके रोम रोम मे तीक्ष्ण पीडा फल आई।

वापस अपने पलग पर आ बैठी थी वह। उसके मन मे बेचैनी थी। उदासी थी। पलग के पास वाली वाड की खिडकी से सामने बाजार का दृश्य साफ दिखाई देता था। लोग सुबह-सुवह सज धजकर चवल गाडन की तरफ घूमने जा रहे थे। उनके साथ बाल-बच्चे थे गोरे भूर-गुदकारे। उसके मन म भी एक हूक उठी। पर हूक यो ही कुछ देर रेत के बगूले की तरह मडरा मडरा शात हो गई। दो बूद पानी भी टपक पडा उसकी आखो से। दिन के दस बज रहे थे। मोहन को उसने आता देखा तो उसे बडी तसल्ली हुई। एक क्षण को सारी उदासी, वेचैनी छूमतर हो गई। मोहन ताजे ताज फल लाया था। उसके लिए। छील-छीलकर उसे खाने को दे रहा था। मोहन अब भी उसस कितनी मोह-माया रखता है। अगर यह नही होता तो उसके पेट की पथरी का यह आपरेशन यो आसानी से थोड ही हो पाता। उसके अहसान से वह दवी-दबी जा रही थी।

"तो था के ताइ साच-माच पूरो किस्सा मालुम नइ ?" अजीब कृतज्ञतामिश्रित अनुरक्त भाव से सरवती ने मोहन से पूछा।

'इसलिए तो मैंने तुझसे पूछा था।' सरवती ने सिर से खिसक आए साडी के पल्लू को ठीक किया 'काई बताऊँ मोहन याने उस कलमुहे के बारे मे उसका नाम लेते ही रग रग मे आग सुलग पडती ह ?'

'ऐसा क्या हुआ ?'

'ब्याह के दो महिने बाद ही परदेस कमाने के नाम पर अहमदाबाद चला गया था। गया तो फिर मुंह पीछे कर देखा ही नहीं। कोई चिट्ठी-पत्री तक न थी, उसकी ओर से इतने अरसे तक। मैं रोजाना दिन गिन-गिनकर उसकी बाट जोहती थी।...'

'अच्छा !?'

'हां ऽऽऽऽ जब बात काबू के बाहर हो गई। बापू को मैंने अहमदाबाद भेजा। तब पता चला उसकी काली करतूतों के बारे में...'

"क्या किया उसने...?"

"वहां कुकर्म करता था एक दूसरी औरत से सुना तो यह भी कि उसको भी छोड़ दूसरी से ? बड़ा बदमाश निकला।"

"नहीं तो अब तुम बताओ मैं यहां उस कुकर्मी को दिन-रात रोती रहूँ। और वह वहां रंगरेलियां मनाए। सहन हो सकता है ? मैंने भी ईंट का जवाब पत्थर से दिया। तड़ाक से रिश्ता तोड़ पीहर आ गई।"

'फिर ?'

'बस तब से मां बापू के पास हूँ। सिलाई कढ़ाई करती हूँ। छोटे बच्चों को पढ़ा देती हूँ। उससे अपनी गुजर बसर औरत में कोई खोट नहीं हो तो क्या मजाल कोई उसकी तरफ ढूक भी जाए ?'

'वह तुम्हारे पास सुलह सफाई के लिए नहीं आया ?' साड़ी का पल्लू सीने से खिसक आया था। सरवती ने ठीक किया। 'आया एक बार नहीं दस बार घिघियाया रिरियाया समाज को दिखाने के लिए उसे कवच की जो जरूरत थी पर तुम जानो मैं किस माटी की बणी हूँ भूखी रह लूं प्यासी रह लूं पर आदमी की चरित्रहीनता लम्पटपन सहन करना न न न। यह सहन करना मेरे बस की बात नहीं। मुझे तो ऐसे की तो छाया से भी घृणा। मेरा बस चले तो ऐसे हर कुत्ते का मुंह झुलस दूं मैं तो सही चालचलन, सामाजिक

तौर तरीको से सम्मानजनक जीवन जीने की आदी ' वह तैश मे कहे जा रही थी "वाह रे आदमी ! पाप पक मे गडा होने पर भी गगा नहाया होने का ढोंग पाक-साफ होने का पाखड गया वह समय जब औरत पैर की जूती थी । आदमी के हर जुल्म, शोषण, अत्याचार सहन करती थी । अब तो वह उसके हर कुकर्म का जवाब देना जानती है " क्रोध से उसका मुह लाल हो आया था । पलग के पास स्टड पर रखी सुराही से उसने पानी का गिलास भरा । मोहन की ओर किया । मोहन के मना करने पर वह दो गिलास पानी स्वय ही गटाक गटाक पी गई । क्रोध का ठडाने लगी । उसके शात होने पर मोहन फिर उसकी तरफ मुखातिब हुआ "तो फिर नाते का विचार भी ?" वह फीकी सी हँसी हँसी "देखा जाएगा - हा, अब तुम अपनी बताओ माफ करज्यो अपनी राड-निपूती मे थाकी कथा ही पूछवा भूल गी अब तो तुम्हारे एकाध छोरा छोरी होगे ?'

'न छोरा न छोरी जो कुछ हूँ खुद ही हूँ एकदम फक्कड ?"

'ए ए-ए ऽऽऽऽ' सरवती के चेहरे पर आश्चर्य था ।

'हा बिलकुल सच '

'क्यो ? ब्याह क्यो नही किया तुमने ? रोटी हजक से भी लस '

'ऐसे ही मन की मर्जी ' यकायक मोहन उदास हो आया था । वाड की खिडकी से अस्पताल के परिसर मे खडे झालरदार पीपल की ओर देखने लगा था सरवती ताड गई—क्या फायदा खुरटो को उपाडने से ? प्रणय विच्छेद का घाव अब भी मोहन के मन मे है । खुद ने भी तो अब तक कहा निजात पाई है उस मर्मभेदी पीडा से । जब भी स्मृतिया विगत जीवन के एलबम खोलकर बैठ जाती है। वे क्षण साकार होकर उसके मन-जहन मे लहराने लगते ह । वह सिहर-सिहर पडती है उस दद से ।

दोनो ने हमसफर बनने के कैसे रगीन झिलमिल करते सपने बुने थे । पर बापू जो बन गए जनम-जनम के वैरी । उन्होने जो राखकर दिए

उनके रेशमी कोमल सपने। उनकी निगाह उस नीच कैलाशी के बाप के धन वैभव पर जा अटकी थी। वह कुकर्मी अपने बाप की इकलौती औलाद था। बापू ने सोचा था कि उनकी सोन चिरैया वहा पहुँच आनन्द ही आनन्द करेगी। उन्होने मोहन को ठुकरा दिया था। उसने लाख चीख-पुकार की विरोध मे पर वे टस से मस नही हुए। माई थी नही, जो उसकी ओर से अड जाती और बापू को बाध्य करती मोहन के साथ ही उसे बाधने को। उन्होने उसे कलाशी के ही गाठ बाध दिया था। वह कलेजे पर पत्थर रख कलाशी के साथ बध गई थी। अपने तथा परिवार के मान-सम्मान की सोच। नही तो लोग क्या-क्या बेपर की उडाते। छत्तीस तरह की बदनामी करते। मोहन ने भांवर वाली रात से ही गाव छोड दिया था। उस सदमे को सहन नही कर सका था। फिर उसने पीछे मुड गाव की ओर नही देखा। वह तडफती बिलखती रह गई थी।

आधी रात हो आई थी, पर उसकी आंखो मे नीद नही थी। पलग पर करवट बदल बदलकर सोचे जा रही थी—जो सपने तब पूरे नही हो पाए उन्हे अब क्यो न पूरा कर लिया जाए? दोनो ही ओर से तो मिलने की आग अब भी बरकरार। अब उसके रास्ते म कोई रोडा बाध नही। उसके समाज मे नाता भी जायज। पर उसका मन एक ही बिंदु पर आ अटक जाता है। उस कलकी की तरह मोहन भी फिर कही भटक गया हो तो? उसकी उमर? एकाकीपन है। उसको अटी म पसा भी। फिर तो वह मोहन को भी साथी के रूप म स्वीकार नही कर पाएगी। इस बिंदु पर तो उसका मन प्रिय से प्रिय के खिलाफ भी विद्रोह कर बैठता है। मन दुराचरण, कलक, बुराई के विरुद्ध एकदम भडक उठता है। सदाचरण मूल्य मानवीयता की ओर दौड-दौड पडता है। ख्याल भरे रहते है इनमे—गदा, धब्बेदार, लाछना, कालिमायुक्त, बुराई भरा जीवन भी कोई जीवन जीवन वह है जो उजास लिए हो। प्ररक हो। जिसकी कुछ साथकता हो। उजास का बडा महत्व। उजास की एक हल्की-सी किरण भी घटाटोप, अधकार को थरथरा देती है।

ठीक है पहले वह मोहन को जाचेगी-परखेगी। तब ही उसके साथ बधने का निणय लेगी। नही तो फिर वह ऐसे ही ठीक।



11

हवा के खिलाफ

मौसम ने पूरी घाटी मे घुध कोहरे की चादरे तान रखी है। काफी दिन चढ आने के बावजूद घाटी सोई-सोई सी लग रही है। दात किट-किटा देने वाली ठण्ड लोगो को कटखने कुत्ते की तरह बुरी तरह काटे

तिवारीजी नाहर द्वारा दबाई गई गाय की तरह थर-थर कांप रहे थे। बडी मुश्किल से उनके गले से आवाज फूटी "बेटा मेरे घर मे वह कालू गुण्डा कूद गया है। तेरी बहन की इज्जत खतरे मे है उसे कही कुछ हो गया तो मैं कही का नही रहूँगा " आगे के बोल उनके मुहँ मे ही रह गये, फूट नही सके। अन्तर की पीडा बस आंसुओ के द्वारा ही आंखो से चेहरे पर पडी झुरियो की खड्ड-खाइयो से अलग-अलग बहने लगी।

जा रही है। लोग ठण्ड से बचने के लिए अपने-अपने घरो मे रजाई, कम्बलो का रक्षा कवच ओढे दबे-ढके पडे है, सिगडी, चल्हा जला कर भी ठण्ड से अपनी रक्षा कर रहे है।

कई घण्टो बाद मौसम का मन पिघला। आकाश म तानी गई चादरे समेट ली। चादरो का व्यवधान हटते ही आसमान मे सूरज आ बैठा। सब जगह खूबसूरत बालक सी प्यारी-प्यारी धूप फल गई। लाग धूप सेकने के लिए अपने घरो से निकल पडे। उसने भी घर से खटिया निकाली। चौंतरी पर डाल धूप सेकने लगा। धूप के गरमा गरम सक ने उसे गजब की ही राहत पहुँचाई। कुछ समय के लिए वह अजीब बेफिक्री मे ओर-पोर डूब गया, जैसे उसे किसी बात की चिंता फिक्र ही नही हो। लेकिन कुछ समय बाद जैसे ही उसका ध्यान नौकरी न मिलने की बात पर गया। उसे लगा इस राहत से क्या बनना-बिगडना? असली राहत तो तब मिले जब कही नौकरी का जुगाड लगे। यह राहत तो सूखे क दौरा न उठने वाले उन खाली-खाली बादलो की तरह है, जिनका वर्षा जैसी वास्तविक प्राप्ति से कोसो का भी सम्बन्ध नही। वह फिर चिन्ता मे, आग पर उबल रहे दलिया की तरह, खदर-बदर उबलने लगता है।

सैकण्ड डिविजन मे एम ए करने के बाद भी वह वर्षो से नौकरी क लिए दर-दर की खाक छानता आ रहा है, वह दुलभ आकाश कुसुम, जिस तक कितने ही बडे से बडे प्रयासो की नसनी लगाने के बाद भी उसका हाथ नही पहुँच पाया है। कहा-कहा वह नही भटका है नौकरी के लिए। कितने-कितन युद्धस्तर तक के तो प्रयास किए है उसने नौकरी के लिए। लेकिन बदले मे मिले है, वही ढाक के तीन पात।

उसके बाबूजी कमेटी के स्कूल से कब के रिटायर हो चुके ह। उनके फण्ड ग्रेच्यूटी के पसो स कब तक घर की गाडी चलेगी—वह दिन-रात नौकरी के लिए भगने के उपरान्त, शाम को बिला नागा रिक्शा चला लेता है। इससे दिन पर दिन रीतते बाबूजी के फण्ड ग्रेच्यूटी के पैसा म मरीज को आक्सीजन चढाने से दम आन की तरह कुछ ठहराव आ जाता है। नही तो वे पैसे कभी का दम तोड गए होते। हालाकि

दिन भर नौकरी के लिए भगने के उपरान्त रिक्शा चलाने से उसका शरीर बुरी तरह टूटने लगता है, जोड-जाड पिराने लगता है, लेकिन रोजाना रिक्शा चलाना उसकी मजबूरी है। जिस दिन भी वह रिक्शा नही चलाता, घर का चूल्हा ठीक तरह से नहीं जल पाता है।

रोऊँ रोऊँ करने लगता। कभी कभी तो उसने आग टीप बुखार मे भी रिक्शा चलाया है।

उसे तो नौकरी मिलती नही। लेकिन उसके जैसे अन्य को, जिनके पास चक-जक हैं—वह नौकरी मिलते देखता है तो पता नही क्यो उसके मन मे व्यवस्था, आसपास सिरताने खडी हवेलिया-बगलो के प्रति एक अजीब कडवाहट घुल जाती है। तभी एकाएक माहल्ले के बूढे तिवारीजी ने भकराते हुए उसके पैरो मे गिर खटिया पर आखे मीचे विचार निमग्नता से उसे हडबडा दिया। वह लेटे हुए से उठ बठा, अपने पैरो मे गिरे तिवारीजी को उसने तुरत फुरत उठाया "आप यह क्या अनथ कर रहे हैं ताऊ जी? मेरे पैरो पड रहे ह गजब कर दिया आपने मैंने वसे कौन सा आपका हुकम टाला है जो आपको इस तरह मेरे पैरो मे पडने की नौबत आ गई— बताइए बताइए क्या मदद करूँ आपकी— ?

तिवारीजी नाहर द्वारा दबाई गई गाय की तरह थर-थर काँप रहे थे। बडी मुश्किल से उनके गले से आवाज फूटी," बटा मेरे घर मे वह कालू गुण्डा कूद गया है। तेरी बहन की इज्जत खतरे में है— उसे कही कुछ हो गया ता मैं कही का नही रहूँगा " आगे के बोल उनके मुख मे ही रह गए, फूट नही सके। अन्तर की पीडा बस आंसुओ के द्वारा ही आखा स चेहरे पर पडी झुर्रियो की खड्ड-खाइयो से अलग-अलग बहने लगी।

महेश ठेठ भीतर तक हिल गया। तो वह गुण्डा इधर भी— इस मोहल्ले की भी बहिन बेटियो की इज्जत खतरे मे इस माहल्ल की भी स्त्रिया की इज्जत पर डाका डलन की नौबत आ गई। क्रोध मे उसकी मुठ्ठिया भिच आती है। आंखो मे लाल-डोरे उभर आते है। चीते की सी स्फूर्ति से वह घर के अन्दर दौडता है "आप झटपट घर पहुँचो ताऊजा! मैं आया ऽऽऽ"

तिवारीजी अपने बूढे अशक्त पैरो को भरसक जल्दी मे वापस अपने घर की ओर उठा रहे थे। लेकिन उनके खुद के पैर ही जल्दी जल्दी नही उठ कर उल्ट उनकी ही मखाल उडा रहे थे। जब तक महेश वहाँ नही पहुँचे तुम घर जल्दी पहुँच कर कौन सा तीर मार लोगे तुम्हारा वहाँ पहुँचना न पहुँचना न के बराबर। घर पहुँच गुन्डे से कुछ प्रतिरोध किया तो वह तुम पर छुरा, चाकू, कट्टा कुछ भी दागे तो भी उसके एक ही धक्के मे दस कलामुण्डी खाओगे। हाड-गोड तुडा बठोगे। चलने फिरने से भी मुहताज। एक अजीब विवश-पीडा उनकी आखो म धिर आती है। आखो के सामने अँधेरा छा जाता है। उन्हे लगता है कि वे चक्कर खाकर यही गल मे ही गिर पडेग। अपने आप बुरी तरह गरियाने लगते है—"स्साला कैसा हरामजादा टैम आया है मेरे घर सरे आम डाका पड रहा है और लोगबाग अडोसी पडोसी आख मूद बैठ है सब कुछ जानते हुए भी अनजान बने हुए है। यह नही कि सब-मिलकर इस राक्षस से निबटे इस अन्याय अनीति के खिलाफ मेरी मदद करे स्साले डरपोक कायर अब्बल दर्जे के मतलबी — मेरी जवानी वाला टैम रहा होता। क्या मजाल यह भेडिया मेरे घर कूदने की जुरत करता पाड-मुहल्ले वाले सब मिलकर इसका कुचला कर देते सबक सिखा देते कि किसो जालिम न किसी निबल को सताया। उसको एवज मे सबने मिल उसे जमीदोज कर दिया। उस समय के लोग आपस मे कैसा गजब का भाईचारा, एकता, सगठन, प्रेम रखते थे। एक दूसरे की खातिर कैसी मर मिटने की भावना से ओत प्रोत रहते थे.... अब पता नही। कहा गई वह सोच-विचार-भावना लोगो से। अब तो हजार बूढो तब कही ऐसे मिजाज-विचार वाला आदमी मिलता है। इस हजार की तादाद वाले मोहल्ले मे ऐसा केवल यही लडका ही दिखाता है। यही लोगो के दु ख तकलीफ-पीडा मे निस्वाथ काम आता है। जुल्म-अनीति अन्याय शोषण के खिलाफ लोगो की मदद करता है।"

महेश की आंखो मे कालू गुण्डे की शक्ल सिनेमा के दृश्य की तरह साफ साफ घूम रही है—काला भुशुण्ड, भीमकाय - भयावह आकृति वाला चौबीसा घन्टे दारू के नशे म धुत्त कट्टा-पिस्तोल-तलवार-चाकू मे हमेशा लस कई हत्याओ, डकतियो, अपहरण, बलात्कार, तस्करियो के लिए जिम्मेदार जिले का नामी-गिरामी गुण्डा दिन

मे भी लोग उसके ठीये से होकर आने-जाने वाले रास्ते से निकलने की हिम्मत नही जुटा पाते— स्त्री नाम की चिडिया तो उधर से कभी भी अकेली दुकेली पाख नही फडका सकती —"

वह गुण्डे से जूझने के लिए अपने बचाव हेतु घर के अन्दरुनी अँधेरे घुप्प कमरे मे गुप्ती ढूढने मे लगा है। कमरा तो उसका नाम है। नही तो वह असल मे सीलन भरी बदबूदार कोठरी है। जगह जगह से उसकी दीवारो का प्लास्टर झड रहा है। तार-तार होते वस्त्रो मे भिखारी के दिख रहे अ ग अ ग की तरह दीवाल की हर ईट दिखाई पड रही है। बदबू के मारे महेश का सिर भन्ना रहा है। लेकिन गुप्ती का उसके पास होना जरूरी है। वह ढूढने मे रत है। अ धेरे मे गुप्ती के लिए वह जगह जगह हाथ मारा-मारी कर रहा है। अ धेरे मे टाड से एकाकए उसका सिर टकरा जाता है। एकबारगी उसके सिर मे झन्नाहट होती है। लेकिन वह उसकी परवाह नही कर गुप्ती ढूढने मे लगा ही रहता है। अ ततः गुप्ती उसे मिल ही जाती है। वह गुप्ती ले बाहर को बडी तेजी से दौडता है। लेकिन तभी उसके बाबूजी दरवाजे के बीच आकर खडे हो जाते है। उसे राक सीधे कहने लगते हैं "हमे मारकर ही दम लेगा कुलकलगी ! तू इस तरह गुप्ती ले कहा भागकर जा रहा है ? तिवारीजी के यहाँ न ? मैंने तेरी उनकी सारी बाते अन्दर के कमरे मे बठे-बठे सुनली है अभी अभी एक रार से तो जैसे-तसे पिंड छुडाया ह। फिर चल दिया दूसरी रार खडी करने— बार-बार तुझे थाने-कचहरी से छुडने के लिए कहाँ से मोटी-मोटी रकम लाऊँगा ? खुरापात किए बिना तुझे चन नही अरे तुझे हम दोनो पर रहम नही तो कम कम अपने मासूम भाइयो पर तो रहम कर। पैसो की तगी के कारण घर बैठे बठे बुढा आई अपनी अनब्याही बहिन पर तो रहम कर। लाया था रकम जैसे तैसे कर्ज काढ लडकी के लिए लडका रोकने के लिए। लग गई रकम तेरी छुडाई मे। इतने पर भी तुझे ।" उनकी आँखो मे अजीब आत्म पीडा, क्रोध, निरीहता के बगूले फूट रह है। बीस दफा समझा दिया अपने काम से काम रखो चक्करो से दूर रहो। कही गलत सलत हो रहा है तो होने दो अपनी आँखे मीच लो— गरीब के बोलने का आज जमाना नही। उसे साची खरी कहने का हक नहीं। उसने अगर कही ची-चपड की तो उल्टे बला उसके मत्थे उसकी मुडी

उमेठ दी जाती है— पर तेरी बद आदत जो बन गई है। कही भी उल्टा सुल्टा होते देखेगा भिड जाएगा—आ बैल मुझे मार। सकटो को न्योता दे डालता है दो आक क्या पढ गया अपने आप को लोकनायक समझने लगा है दीन-दुखियो-दलितो-शोषितो का मसीहा बन रहा है अरे मूख ! गरीबो पर अनीति, अत्याचार, जुल्म उनका सताया जाना कभी रुका है जो तू ही रोकेगा।"

"तू यहाँ से घूस रिश्वतखोरी-बेईमानी-भ्रष्टाचार-व्यभिचार-चोर-बाजारी खत्म करना चाहता है ? —तुझे क्या जरूरत थी उस से अडने की ओवरसीयर सरकारी सीमेन्ट को कालाबाजारी मे बेच रहा था तो बेचने देता। तेरे बाप का क्या बेच रहे थे ? पर नही उसके खिलाफ कार्रवाई करने की हिमाकत करने चला। तू तो उनका कुछ नही बिगाड पाया। उसने तुझे सबक जरूर सिखा दिया। पुलिस तुझे पकड कर ले गई थी। पूरे पाच सौ सफा हो गये तुझे थान से छुडाने मे।"

बोलते बालते बाबूजी को हाँफनी चढ आई थी। महश उनके सामने गदन झुका जमीन पर पैर के अँगूठे स बिलकौआ काढ रहा था। बाबूजी महेश को गरिया-डाट फटकार तो रहे थे। लेकिन अन्दर से अपने इस योग्य-ईमानदार-जुझारू लडके से इस तरह विपरीत व्यवहार करने के लिए उन्ह बडा दु ख भी हो रहा था। हाँफनी बद होने पर वे अब प्रेम-उमग से उसे सीधे-सीधे समझाने की मुद्रा मे उतर आये 'ऐसी बात नही बेटा ! कि मैं तेरे विचारो-कार्यों की सचमुच ही बुराई करता होऊँ—पर आज सत्य-न्याय, ईमानदारी-नतिकता, मूल्या के लिए जूझन का समय नही। कोई समय था जब इनके लिए जूझने वाले को महा-मानव समझा जाता था। उसको पूजा जाता था। अब तो ऐस व्यक्ति को निरा बुद्ध मूख, बेवकूफ समझा जाता है। आज सब जगह उल्टी गगा बह रही है। मूल्या की कही कीमत नहा। मूल्या के लिए आज सघप करना निरी बेमानी बात, निरा थाथापन भरा काय ।"

बाबूजी द्वार स हट घर के अन्दर चले गए। वह बाबूजी की कही बाता म निमग्न चौतरी पर बठा रहा। टांड से सिर टकरान स बाला म बहता खून उसके माथे पर आ गया था। उस गीला गीला लगा ता

हाथ लगा देखा—खून ! हल्की हल्की हो रही चोट की चुनमुनाहट की ओर भी उसका ध्यान अभी तक नही गया था। खून देख उसे लगा कि गुण्डो से जूझते हुए बूढे तिवारीजो भी खूनमखून हो रहे है। कुछ भी हो उनकी मदद करना जरूरी है। उससे नही रहा गया—वह अचानक घर के अन्दर की ओर देख गुप्ती ले तिवारीजी के घर की ओर दौड ही तो लिया।

तिवारीजी के घर की ओर दौडते उसे पूरा मोहल्ला देख रहा था। पर उसके साथ हो लेने के लिए कोई आगे नही आ रहा था। सब तमाशबीन बने हुए थे। इस पर मोहल्ले के ही एक रिटायर्ड पत्रकार हसराजजी बीच मोहल्ले मे खडे हो चीखने लगे, 'लगता है यहा सब नामर्द ही नामर्द है। सब के सब कायर ही कायर मोहल्ले मे सरे आम डकैत लडकी की इज्जत पर डाका डाल रहा है। और सब लोग चुप है। केवल यह लडका ही लडकी के शील की रक्षा के लिए दौडा है। बाकी सब मुरदे की तरह शात लडके के साथ कोई नही हो रहा है लानत है ऐसे डरपोकपन, कायरता, स्वार्थी पन पर, ऐसा भी मौत से क्या डरना। वह तो एक दिन आनी ही आनी है। अरे किसी सद् उद्देश्य के लिए मरा—सब मिलकर उस डकत की चटनी क्यो नही कर देते ?"

हसराजजी का इतना कहना था कि दो तीन घरो से चार-पाच युवक बड जोश मे निकल आए, "बस बस दादाजी ! अब आगे हम से नही सुना जाता है—महेश के साथ जा रहे है। देखते है उस दत्य को " महेश के साथ उन युवको के लगने पर तो पूरा मोहल्ला ही उसके साथ हो लिया। लोगो को सम्बोधित करते हसराजजी कह रहे थे, "भाइयो ! इस डकत ने पूरे कस्बे के अमन-चैन, इज्जत-आबरू, धन दौलत पर डाका डाल रखा है। आए दिन भीषण उत्पात मचाता रहता है। किसी को भो शाति से नही रहने देता। इससे डरकर कब तक भागे-भागे फिरोगे अब अपनी रक्षा के लिए किसी पर निभर रहने की बीमार मानसिकता को छोडो, अपनी रक्षा स्वय करो। जडता-भीरुता को त्यागो सद-उद्देश्य के लिए सब मिलकर सघर्ष करो। बुराइयो का समूल नाश करो नही तो ये बुराइया बढते-बढते एक दिन हम निगल जाएगी हमे बेआवाज कर देगी। पहले पुरखे बुराइयो से सब मिलकर ही तो जूझा करते थे।"

लगता है आज बुराइयो से निवटने के लिए पूरा का पूरा मोहल्ला खडा हो चुका है। महेश के साथ चलती भीड पर अजीब प्रकार की दृढता, कुछ कर गुजरने का सकल्प, जुनून सवार है। भीड मे तरह-तरह की आवजे उठ रही है, "दौडो— पकडो भाग न जाए मारो स्साले को जमीन मे गाड दो टुकडे-टुकडे कर दो ।"

□



जन्म 2 फरवरी 940 ग्राम सिवरौज धौलपुर (राज.)

शिक्षा स्नातक

सातवें दशक के प्रारम्भ से नियमित लेखन। नवगीत रिपोर्ताज निबंध लेखन बाल साहित्य का भी सृजन। देश की सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। रेडियो से भी प्रसारण। कई राष्ट्रस्तरीय कहानी एवं काव्य संकलनों में संकलित।

"टीले" प्रथम कहानी संकलन।

साहित्यिक संस्थाओं का अवैतनिक संचालन तथा पत्रिकाओं का सम्पादन।

सम्प्रति उपन्यास लेखन में रत—

सम्पर्क

नेह कुटीर, कृष्णा मायल
मिल परिसर,
रामगंज मंडी–326519
कोटा (राजस्थान)



जन्म 2 फरवरी 1940, ग्राम पिपरौमा धौलपुर (राज)

शिक्षा स्नातक

सातवें दशक के प्रारम्भ से नियमित लेखन। नवगीत, रिपोर्ताज, निबंध लेखन। बाल साहित्य का भी सृजन। देश की सभी शीर्ष पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन। रेडियो से भी प्रसारण। कई राष्ट्रस्तरीय कहानी एवं काव्य संकलनों में संकलित।

"टीले" प्रथम कहानी संकलन।

साहित्यिक संस्थाओं का प्रबन्धनिक संचालन तथा पत्रिकाओं का सम्पादन।

सम्प्रति उपन्यास लेखन में रत—

सम्पर्क

नेह कुटीर, कृष्णा ऑयल मिल परिसर,
रामगंज मंडी–326519
कोटा (राजस्थान)